किताबुस्सलात

नमाज़ के मसाइल

मुहम्मद इक़बाल कीलानी

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़ के मसाइल

लेखक
मुहम्मद इक़बाल कीलानी

अल किताब इंटरनेशनल
मुरादी रोड, बटला हाउस, जामिया नगर,
नई दिल्ली-110025

Www.IslamicBooks.Website

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

पुस्तक का नाम : नमाज़ के मसाइल

लेखक : मुहम्म्द इक़बाल कीलानी

प्रकाशन वर्ष : 2009

मूल्य : CURRENT PRICE Rs. 150/- S.N. PUBLISHERS

प्रकाशक : अल-किताब इन्टर नेशनल
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025

कम्पोज़िंग : NANO COMPUTECH, Delhi-110032

मिलने का पता : **S. N. PUBLISHERS**
P. O. BOX NO. 9728
JAMIA NAGAR, NEW DELHI-110025
Phone: 9312508762, 9310008762,
9310108762, 26986973

E-mail: al-kitabint@yahoo.com

Www.IslamicBooks.Website

विषय-सूची

- प्रकाशक की ओर से 5
- भूमिका 7
- नीयत के मसाइल 15
- नमाज़ का फ़र्ज़ होना 17
- नमाज़ की श्रेष्ठता 18
- नमाज़ की अहमियत 21
- पाकी के मसाइल 25
- वुज़ू और तयम्मुम के मसाइल 30
- सतर के मसाइल 41
- मस्जिदें और नमाज़ पढ़ने की जगह के मसाइल 43
- नमाज़ के समयों के मसाइल 50
- अज़ान और इक़ामत के मसाइल 55
- सुतरा के मसाइल 64
- सफ़ (पंक्ति) के मसाइल 67
- जमाअत के मसाइल 71
- इमामत के मसाइल 74
- मुक़तदी के मसाइल 81
- बाद में शामिल होने वाले नमाज़ी के मसाइल 83
- नमाज़ का तरीक़ा 85
- औरतों की नमाज़ 108
- नमाज़ के बाद अज़कारे मसनूना 114
- नमाज़ में जाइज़ मामलों के मसाइल 109
- नमाज़ में वर्जित मामलों के मसाइल 124
- सुन्नतों और नवाफ़िल की श्रेष्ठता 127

Www.IslamicBooks.Website

- सुन्नतों और नवाफ़िल के मसाइल 130
- सज्दा सहू (भूल के सज्दे) के मसाइल 138
- क़ज़ा नमाज़ के मसाइल 140
- नमाज़े जुमा के मसाइल 143
- नमाज़े वित्र के मसाइल 151
- नमाज़े तहज्जुद के मसाइल 159
- नमाज़े तरावीह के मसाइल 162
- नमाज़े क़स्र के मसाइल 166
- नमाज़ें जमा करने के मसाइल 173
- नमाज़े जनाज़ा के मसाइल 174
- नमाज़े ईदैन के मसाइल 183
- नमाज़े इस्तिसक़ा के मसाइल 189
- नमाज़े ख़ौफ़ के मसाइल 192
- नमाज़े कसूफ़ या ख़सूफ़ के मसाइल 195
- नमाज़े इस्तिख़ारा के मसाइल 197
- नमाज़े चाश्त के मसाइल 199
- तौबा की नमाज़ 201
- तहीय्यतुल वुज़ू और तहीय्यतुल मस्जिद के मसाइल 203
- सज्दा शुक्र 205
- विभिन्न मसाइल 207

Www.IslamicBooks.Website

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

प्रकाशक की ओर से

तौहीद व रिसालत के इक़रार के बाद नमाज़ इस्लाम का बुनियादी रुक्न है, हर मुसलमान मर्द व औरत पर रोज़ाना पांच समय नमाज़ फ़र्ज़ है। नमाज़ की अदाएगी में ग़फ़लत, काहिली और सुस्ती से काम लेने वाले को अल्लाह तआला ने कपटियों में शामिल किया और और जान बूझकर नमाज़ तर्क करने को नबी करीम सल्ल० ने शिर्क और कुफ़्र क़रार दिया है। नमाज़ की अदाएगी उसी तरह की जानी चाहिए जिस तरह रसूले अकरम सल्ल० की सहीह अहदीस में नमाज़ का तरीक़ा मंक़ूल है। "नमाज़ के मसाइल" में क़ुरआन व हदीस के अनुसार नमाज़ के तमाम छोटे बड़े मसाइल बहुत सलीक़े के साथ तर्तीब दिए गए हैं।

किताब के लेखक जमाअत के मशहूर विद्वान आदर्णीय मौलाना मुहम्मद इक़बाल कीलानी साहब हैं। शैख़ कीलानी सालों से सऊदी अरब रियाज़ के जामिअतुल मुल्क सऊद बिन अब्दुल अज़ीज़ में उस्ताद हैं। लेखक इल्मी घराने के चश्म व चिराग़ हैं। आपने "तफ़्हीमुस्सुन्नह" के नाम से दीन के बुनियादी अरकाने ख़म्सा और अन्य अहकाम व मसाइल पर बड़ी मुफ़ीद और आम फ़हम किताबें लिखीं हैं। तफ़्हीमुस्सुन्नह का यह सिलसिला अवाम व ख़्वास में लोकप्रियता हासिल कर चुका है। मौलाना मुहम्मद कीलानी साहब की किताबों में बहुत सी विशेषताएं हैं, जिनमें उल्लेखनीय और अहम यह हैं कि हर किताब किताब व सुन्नत से सजी, साफ़ सुथरी सरल भाषा और मुस्बत अंदाज़ में लिखी गयी है।

तफ़्हीमुस्सुन्नह के सिलसिले की यह चौथी किताब "नमाज़ के मसाइल" आपके हाथों में है। हमें पूरा यक़ीन है कि इसके अध्ययन से आपको नमाज़ के मसाइल की जानकारी हासिल होगी। इंशाअल्लाह

Www.IslamicBooks.Website

"अल किताब इन्टरनेशनल, नई दिल्ली" ने इस अहम इल्मी व दीनी सिलसिले के प्रकाशन का बड़े अच्छे अंदाज़ में आयोजन किया है। हम आदरणीय मौलाना मुहम्मद इक़बाल कीलानी साहब के आभारी हैं कि उन्होंने अपनी किताबों को प्रकाशित करने की इजाज़त। अल्लाह रब्बुल आलमीन उन्हें बड़े अज्र से नवाज़े और मुसलमानों को इन किताबों से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा हासिल करने का सौभाग्य प्रदान फ़रमाए।

-प्रकाशक

Www.IslamicBooks.Website

भूमिका

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नमाज़ इस्लाम का बहुत अहम रुकन और अल्लाह तआला से सम्बंध क़ायम करने का सबसे बड़ा साधन है। रसूले अकरम सल्ल० ने नमाज़ को अपनी आंखों की ठंडक क़रार दिया। नमाज़ का समय होता तो आप सल्ल० हज़रत बिलाल रज़ि० को इन शब्दों के साथ अज़ान देने का हुक्म फ़रमाते "ऐ बिलाल! हमें नमाज़ से राहत पहुंचाओ।" (अबू दाऊद) नमाज़ को रसूले अकरम सल्ल० ने जन्नत में जाने की ज़मानत क़रार दिया। हज़रत रबीआ बिन काअब असलमी रज़ि० रसूलुल्लाह सल्ल० की सेवा में हाज़िर रहते और नबी अकरम सल्ल० के लिए वुज़ू का पानी और दूसरी चीज़ें लाया करते। एक बार आपने (ख़ुश होकर) फ़रमाया "रबीआ! मांगो" (क्या मांगते हो) हज़रत रबीआ रज़ि० ने अर्ज़ किया "या रसूलुल्लाह सल्ल०! जन्नत में आपकी रिफ़ाक़त चाहता हूं।" आप सल्ल० ने फ़रमाया "तो फिर सज्दों की अधिकता से मेरी मदद करो।" (सहीह मुस्लिम) अर्थात तुम्हारे कर्म पत्र में नमाज़, मेरे लिए सिफ़ारिश करना आसान बना देगी। अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में कामयाब लोगों की निशानी यह बताई है कि "वे लोग नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं।" (अल-मोमिनून, आयत 9) और यह कि उन्हें तिजारत और ख़रीद व फ़रोख़्त अल्लाह तआला की याद, नमाज कायम करने और ज़कात अदा करने से ग़ाफ़िल नहीं करती।" (सूरह नूर, आयत 37) अल्लाह तआला ने नमाज़ को इक़ामते दीन की सारी जद्दोजहद का हासिल क़रार दिया है। अल्लाह का इर्शाद है "अगर हम उन्हें ज़मीन में शासन

Www.IslamicBooks.Website

प्रदान करे तो वे नमाज़ क़ायम करेंगे, ज़कात अदा करेंगे, भलाई का हुक्म देंगे और बुराई से मना करेंगे।" (सूरह मोमिनून, आयत 41) तकलीफ़, दुख और रंज के समय मोमिन का यही सबसे बड़ा सहारा है। अल्लाह का इरशाद है "ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! अल्लाह से सब्र और नमाज़ के साथ मदद मांगो।" (सूरह बक़रा, आयत 53) हज़रत इबराहीम अलैहि० अल्लाह तआला के हुक्म पर अपने घरवालों को बैतुल हराम के पास वीरान जगह पर ले आए, तो बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में यह दुआ की कि "मेरे पालनहार मुझे और मेरी औलाद को नमाज़ क़ायम करने वाला बना।" (सूरह इबराहीम, आयत 40) हज़रत इसमाईल अलैहि० के जिन गुणों का ज़िक्र क़ुरआन मजीद ने फ़रमाया है उनमें से एक यह भी है कि "वे अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देते थे।" (सूरह मरयम, आयत 55) रसूले अकरम सल्ल० को भी इस बात का हुक्म दिया गया कि ऐ मुहम्मद सल्ल०! अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो और स्वयं भी इसके पाबन्द रहो।" (सूरह ताहा, आयत 133) क़ुरआन करीम से हिदायत हासिल करने वाले भाग्यशाली लोगों की अल्लाह करीम ने जो निशानियां बताई हैं उनमें से एक निशानी यह भी है कि "वे नमाज़ क़ायम करने वाले लोग हैं।" (सूरह बक़रा, आयत 3) नमाज़ में ग़फ़लत काहिली और सुस्ती से काम लेने को अल्लाह तआला ने कपटियों की निशानी बताया है। अल्लाह का इरशाद है "जब कपटी नमाज़ के लिए उठते हैं, तो काहिली से मात्र लोगों को दिखाने के लिए उठते हैं।" (सूरह निसा, आयत 142) सूरह माऊन में अल्लाह तआला ने उन नमाज़ियों के लिए हलाकत और तबाही बताई है, जो नमाज़ के मामले में ग़फ़लत और बेपरवाही से काम लेते हैं। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने क़ौमों की तबाही और हलाकत का असल सबब तर्क नमाज़ ही बताया है। अल्लाह का इर्शाद है "अल्लाह के आज्ञापालक बन्दों के बाद ऐसे नालायक़ लोग उनके उत्तराधिकारी हुए जिन्होनें नमाज़ को बर्बाद किया और (दुनिया के)

Www.IslamicBooks.Website

मज़ा उड़ाने में लग गए ऐसे लोग अंक़रीब गुमराही के अंजाम से दो चार होंगे।'' (सूरह मरयम, आयत 59) क़यामत के दिन जहन्नमियों का एक गिरोह जहन्नम में जाने का एक कारण यह बयान करेगा :

''अर्थात हम नमाज़ नहीं पढ़ते थे।'' (सूरह मुद्दस्सिर, आयत 43)

शान्ति की हालत हो या जंग की हालत, गर्मी हो या सर्दी, स्वस्थ हो या बीमार यहां तक कि जिहाद के मौक़े पर ठीक मैदाने जंग में भी यह फ़र्ज़ साक़ित नहीं होता। रसूले अकरम सल्ल० पांच फ़र्ज़ नमाज़ों के अलावा नमाज़े तहज्जुद, नमाज़े इशराक़, नमाज़े चाश्त, तहीयत्तुल वुज़ू और तहीय्यतुल मस्जिद का भी आयोजन फ़रमाते और फिर ख़ास ख़ास मौक़ों पर अपने पालनहार के समक्ष तौबा व इस्तिग़फ़ार के लिए नमाज़ ही को ज़रिया बनाते। ख़ुसूफ़ या कसूफ़ होता, तो मस्जिद तशरीफ़ ले जाते। भूकम्प या आंधी आती तो मस्जिद तशरीफ़ ले जाते। तूफ़ान आंधी, बारिश होती, तो मस्जिद तशरीफ़ ले जाते। फ़ाक़े की नौबत आती तो मस्जिद तशरीफ़ ले जाते, कोई परेशानी और तकलीफ़ होती, तो मस्जिद तशरीफ़ ले जाते। सफ़र से वापसी होती तो पहले मस्जिद तशरीफ़ ले जाते, फिर घर पलटते।

पाक जीवन के आख़िरी दिनों में बीमारी की हालत में भी रसूले अकरम सल्ल० को जिस चीज़ की सबसे ज़्यादा फ़िक्र थी, वह नमाज़ थी। वफ़ात मुबारक से कुछ दिन पहले तेज़ बुख़ार की वजह से आप पर नींद की सी हालत थी। इशा के समय आंख खुली तो सबसे पहले यह सवाल किया ''क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली है?'' अर्ज़ किया गया ''नहीं! आप ही का इंतिज़ार है।'' सरवरे आलम सल्ल0 ने फिर उठना चाहा तो बेहोश हो गए। जब आंख खुली तो ज़बान से फिर वही शब्द निकले ''क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली है?'' अर्ज़ किया गया ''नहीं! आप ही का इंतिज़ार है।'' तीसरी बार उठने की कोशिश में फिर ग़शी तारी हो गई। इफ़ाक़ा होने पर इरशाद फ़रमाया ''अबूबक्र रज़ि० नमाज़ पढ़ाएं।''

Www.IslamicBooks.Website

वफ़ात मुबारक से कुछ क्षण पहले आपने उम्मत को जो आख़िरी वसीयत फ़रमाई, वह यह थी :

"अर्थात मुसलमानों नमाज़ और अपने ग़ुलामों का हमेशा ध्यान रखना।"

नबी अकरम सल्ल० के पाक अमल से नमाज़ की अहमियत स्पष्ट हो जाती है।

नमाज़ स्वयं जितनी अहम है तरीक़ा नमाज़ भी उसी क़दर अहम है। नमाज़ के बारे में हुक्म सिर्फ़ यही नहीं कि "इसे अदा करो" बल्कि हुक्म यह भी है कि "इस तरह अदा करो जिस तरह मुझे अदा करते देखते हो।" (सहीह बुख़ारी) एक हदीस में इरशाद मुबारक है कि क़यामत के दिन (अल्लाह के हक़ों में से) सबसे पहले नमाज़ का हिसाब लिया जाएगा जिसकी नमाज़ सही तरीक़े से पढ़ी गई होगी वह कामयाब व कामरान होगा और जिसकी नमाज़ बिगाड़ी गई होगी वह नाकाम व नामुराद होगा। (तिर्मिज़ी) सोच विचार कीजिए! क़यामत के दिन नमाज़ के बारे में जिस चीज़ का हिसाब होगा वह यह नहीं कि नमाज़ पढ़ी या नहीं पढ़ी बल्कि हिसाब इस बात का होगा कि नमाज़ सुन्नत के अनुसार पढ़ी गई या नहीं? इस हदीस से यह अंदाज़ा लगाना मुश्किल नहीं कि नमाज़ की अदायगी के साथ नमाज़ अदा करने का तरीक़ा कितना अहम और ज़रूरी है। इसकी अहमियत को देखते हुए तरीक़ा नमाज़ से संबधित अहादीस सहीहा से जो अहम मसाइल साबित होते हैं वे हमने इस किताब में जमा कर दिए हैं। मसाइल जमा करते और तर्तीब देते समय हमने किसी ख़ास फ़िक़्ही मसलक को सामने नहीं रखा, न ही किसी फ़िक़्ही मसलक को सही या ग़लत साबित करने के लिए यह किताब तैयार की है। हमारे सामने सहाबा किराम रज़ि० का वह मसलक है जिसमें एक सहाबी हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने एक आदमी को नमाज़ पढ़ते देखा, जो रुकूअ और सजदा पूरा नहीं कर रहा था। जब वह आदमी नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ, तो हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि०

Www.IslamicBooks.Website

ने उसे बुलाकर कहा "तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी और अगर इसी तरह की नमाज़ पढ़ते पढ़ते मर गए, तो इस्लाम के तरीक़े के ख़िलाफ़ मरोगे।" एक दूसरे सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने एक व्यक्ति को नामज़े ईद से पहले नफिल पढ़ते देखा तो उसे मना किया। वह व्यक्ति कहने लगा "अल्लाह तआला मुझे नमाज़ पढ़ने पर अज़ाब नहीं करेगा।" हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया "अल्लाह तआला तुझे सुन्नते रसूल का विरोध करने पर ज़रूर अज़ाब देगा।" एक और सहाबी हज़रत अम्मारा बिन रवैबा रज़ि० ने ख़ुत्बा जुमा के दौरान समय के शासक को मिंबर पर हाथ बुलन्द करते देखा तो कहा "अल्लाह ख़राब करे इन हाथों को, मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को देखा कि इससे ज़्यादा न करते थे।" और अपनी शहादत की उंगली से इशारा किया। (सहीह मुस्लिम) सुन्नत के अनुसरण के मामले में सहाबा किराम रज़ि० की यही सोच और फ़िक्र हमारा मसलक है। सुन्नते रसूल सल्ल० से मुहब्बत की यही भावना हमारा मज़हब है और इसी भावना के अन्तर्गत हमने यह हदीसें जमा की हैं।

सहाबा किराम रज़ि० के उपरोक्त व्यवहार और अमल से यह भी मालूम होता है कि जिन मसाइल को हम फ़रोअी या विवादित और ग़ैर अहम समझते हुए नज़र अंदाज़ कर देते हैं। सहाबा किराम रज़ि० के नज़दीक उनकी कितनी अहमियत थी। हक़ीक़त यह है कि जो व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्ल० के इस फ़रमान मुबारक से अवगत है "अर्थात जिस व्यक्ति ने मेरी सुन्नत इख़्तियार करने से पहलू बचाया वह मुझसे नहीं।" वह किसी भी सुन्नत को मामूली और ग़ैर अहम समझकर नज़र अंदाज़ करने का साहस नहीं कर सकता।

हदीसों के सही होने के बारे में यह स्पष्टीकरण बेजा नहीं होगा कि "किताबुस्सलात" का शुरू में जो मसविदा तैयार किया गया था उसका कम से कम एक चौथाई हिस्सा मानो इसलिए अलग करना पड़ा कि वह

Www.IslamicBooks.Website

वे हदीसे सहीह और हसन दर्जे की न थीं। रसूले अकरम सल्ल० का इरशाद मुबारक है कि "जिसने (जान बूझकर) मेरी तरफ़ ऐसी बात मंसूब की, जो मैंने नहीं कही वह अपनी जगह जहन्नम में बना ले।" (जामेअ तिर्मिज़ी) हम अपने अंदर यह हिम्मत और हौसला नहीं पाते कि वे हादीस, जो किसी पहलू से ज़ईफ़ साबित हो जाएं उन्हें हम किसी मसलक की हिमायत या विरोध की ख़ातिर लिखने का बोझ अपने सर उठाएं। सारी काविश और मेहनत के बावजूद हम अपने पाठकों से दिल की गहराइयों से विनती करते हैं कि अगर कोई हदीस सहीह या हसन दर्जे की न हो तो कृपया ज़रूर सूचित फ़रमाएं। हम इंशाअल्लाह शुक्रिया के साथ अगले एडीशन में उसका सुधार कर देंगे।

मुझे अपने अल्प ज्ञान होने का एहसास और ऐतेराफ़ है मुझ जैसा गुनाहगार और सियाहकार इस योग्य कहां कि हदीसे रसूल सल्ल० की कोई सेवा कर सके। हक़ीक़त यह है कि मैं हदीस के एक तुच्छ छात्र ज्ञान की पंक्ति में भी शामिल होने के योग्य नहीं। यह भारी बोझ उठाने की हिम्मत और साहस पाने का प्रेरक केवल एक ही भावना है सुन्नते रसूल सल्ल० से मुहब्बत की भावना, सुन्नत के अनुसरण की फ़िक्र।

किताब में हुस्न व ख़ूबी के तमाम पहलू महज़ अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से हैं। ग़लतियां और ख़ामियां मेरी कोताही और ख़ता का नतीजा। अल्लाह करीम इसके बेहतरीन पहलुओं को अपने फ़ज़्ल व करम से शर्फ़े क़ुबूलियत अता फ़रमाए। आमीन

मुझे यह ऐतेराफ़ करने में कोई संकोच नहीं कि यह किताब किसी भी ज़ख़ीरे में वृद्धि का कारण नहीं बनेगी अलबत्ता हमारे यहां भारी संख्या में पढ़े लिखे लोग जो सुन्नते रसूल सल्ल० से गहरी मुहब्बत और आस्था रखते हैं आपके जीवन चरित्र से लाभान्वित होना चाहते हैं। लेकिन न तो वे मोटी-मोटी अरबी किताबों को प्राप्त कर सकते हैं, न ही कठिन व उलझी हुई उर्दू अनुवाद की किताबों से लाभ उठाने का समय पाते हैं।

Www.IslamicBooks.Website

उनके लिए यह किताब इंशाअल्लाह ज़रूर लाभकारी साबित होगी।

आख़िर में आदरणीय उलमा किराम का शुक्रिया अदा करना ज़रूरी समझता हूं जिन्होंने अपनी अपार व्यस्तता के बावजूद ख़ुशी-ख़ुशी इस किताब को एक नज़र देखा। उलमा किराम के अलावा कुछ दूसरे दोस्तों ने भी किताब की तैयारी में मेरी मदद और मार्ग दर्शन किया। अल्लाह तआला इन तमाम लोगों को दुनिया व आख़िरत में अपने इनामात से नवाज़े। (आमीन)

ऐ हमारे पालनहार! हमारी मेहनत स्वीकार कर निःसन्देह तू भली प्रकार सुनने और जानने वाला है।

-मुहम्मद इक़बाल कीलानी

Www.IslamicBooks.Website

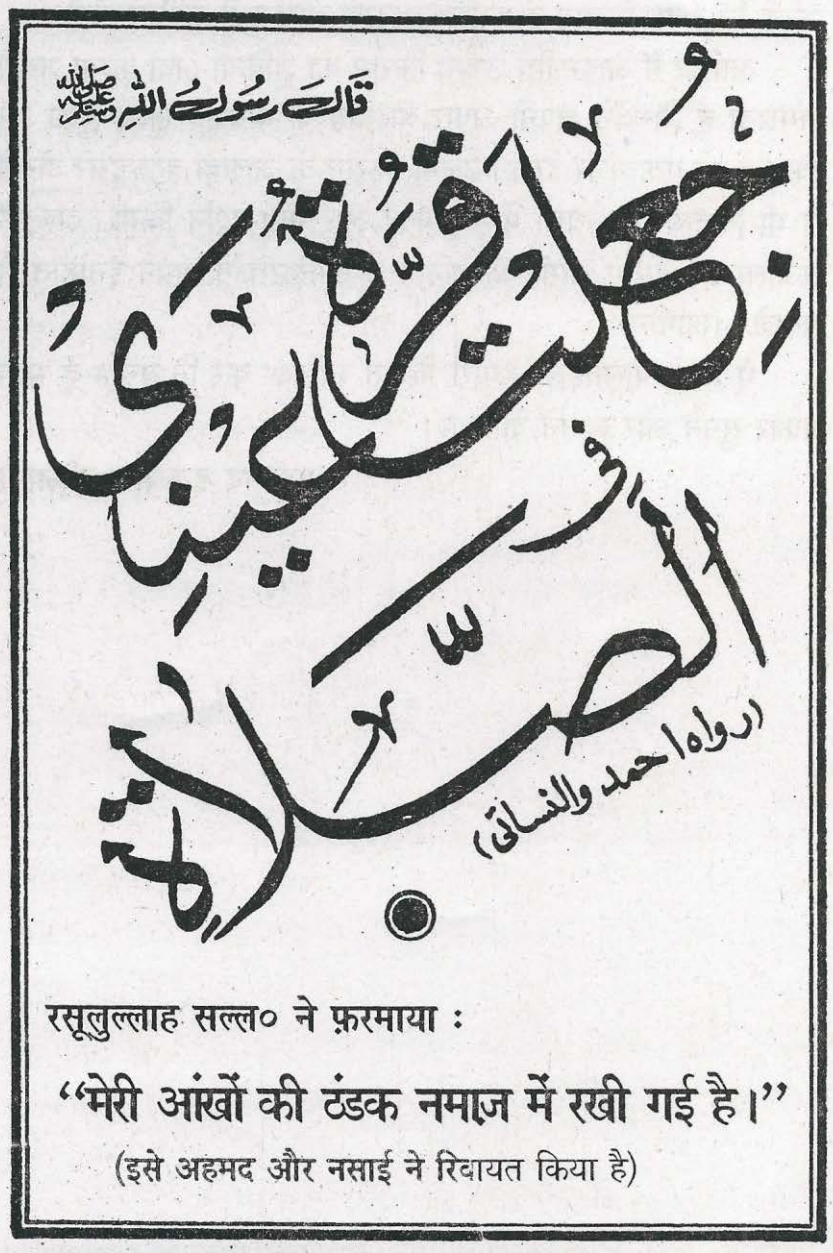

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया :

"मेरी आंखों की ठंडक नमाज़ में रखी गई है।"

(इसे अहमद और नसाई ने रिवायत किया है)

Www.IslamicBooks.Website

नीयत के मसाइल

मसला 1. कर्मों के अज्र व सवाब का आधार नीयत पर है।

عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ وَإِنَّمَا لِكُلِّ امْرِيءٍ مَّا نَوَى فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى دُنْيَا يُصِيْبُهَا أَوْ إِلَى امْرَأَةٍ يَنْكِحُهَا فَهِجْرَتُهُ إِلَى مَا هَاجَرَ إِلَيْهِ رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० कहते हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है कि "कर्मों का आधार नीयत पर है। हर व्यक्ति को वही मिलेगा, जिसकी उसने नीयत की, अतः जिसने दुनिया हासिल करने की नीयत से हिजरत की उसे दुनिया ही मिलेगी या जिसने किसी औरत से निकाह करने की मन्शा से हिजरत की उसे औरत ही मिलेगी तो मुहाजिर की हिजरत का बदला वही है जिसके लिए उसने हिजरत की।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 2. फ़ितना दज्जाल से भी बड़ा फ़ितना दिखावे की नमाज़ है।

عَنْ أَبِيْ سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَنَحْنُ نَتَذَاكَرُ الْمَسِيْحَ الدَّجَّالَ فَقَالَ : أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِمَا هُوَ أَخْوَفُ عَلَيْكُمْ عِنْدِيْ مِنَ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ؟ فَقُلْنَا بَلَى يَا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ : الشِّرْكُ الْخَفِيُّ أَنْ يَّقُوْمَ الرَّجُلُ فَيُصَلِّي فَيُزَيِّنُ صَلَاتَهُ لِمَا يَرَى مِنْ نَظَرِ رَجُلٍ رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ (٢) (حسن)

हज़रत अबू सईद रज़ि० कहते हैं हम मसीह दज्जाल का ज़िक्र कर रहे थे इतने में रसूलुल्लाह सल्ल० तशरीफ़ लाए और फ़रमाया "क्या मैं तुम्हें दज्जाल के फ़ितने से ज़्यादा ख़तरनाक बात से अवगत न करूं?" हमने अर्ज़ किया "ज़रूर या रसूलुल्लाह सल्ल०!" आप सल्ल० ने फ़रमाया "शिर्क ख़फ़ी दज्जाल से भी ज़्यादा ख़तरनाक है। और वह यह

1. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिज़्ज़ुबैदी, हदीस 1

Www.IslamicBooks.Website

है कि एक आदमी नमाज़ के लिए खड़ा हो और नमाज़ को इसलिए लम्बा करे कि कोई आदमी उसे देख रहा है।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

मसला 3. दिखावे की नमाज़ शिर्क है।

عَنْ شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ : مَنْ صَلَّى يُرَائِيْ فَقَدْ أَشْرَكَ وَمَنْ صَامَ يُرَائِيْ فَقَدْ أَشْرَكَ وَمَنْ تَصَدَّقَ يُرَائِيْ فَقَدْ أَشْرَكَ رَوَاهُ أَحْمَدُ (حسن)

हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ि० कहते हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है जिसने दिखावे की नमाज़ पढ़ी उसने शिर्क किया, जिसने दिखावे का रोज़ा रखा उसने शिर्क किया, जिसने दिखावे का सदक़ा किया उसने शिर्क किया। इसे अहमद ने रिवायत किया है।[2]

1. सहीह सुनन इब्ने माजा, दूसरा भाग, हदीस 3389
2. अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब, शैख़ मुहीउद्दीन, पहला भाग 1, हदीस 43

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़ का फ़र्ज़ होना

मसला 4. नमाज़ इस्लाम का दूसरा अहम स्तंभ है।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بُنِيَ الْإِسْلَامُ عَلَى خَمْسٍ شَهَادَةِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ ، وَ إِقَامِ الصَّلَاةِ ، وَ إِيْتَاءِ الزَّكَاةِ ، وَالْحَجِّ ، وَ صَوْمِ رَمَضَانَ رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (۱)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर रखी गई है। 1. इस बात की गवाही कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं और मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं, 2. नमाज़ क़ायम करना, 3. ज़कात अदा करना, 4. हज करना, 5. रमज़ान के रोज़े रखना।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 5. हिजरत से पहले दो-दो रकअत और हिजरत के बाद चार-चार रकअत नमाज़ फ़र्ज़ हुई।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : فَرَضَ اللهُ الصَّلَاةَ حِيْنَ فَرَضَهَا رَكْعَتَيْنِ رَكْعَتَيْنِ فِي الْحَضَرِ وَالسَّفَرِ فَأُقِرَّتْ صَلَاةُ السَّفَرِ وَ زِيْدَ فِيْ صَلَاةِ الْحَضَرِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (۲)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं जब (मेराज की रात) अल्लाह तआला ने नमाज़ फ़र्ज़ की तो क़याम व सफ़र दोनों के लिए दो-दो रकअत नमाज़ फ़र्ज़ की (बाद में) सफ़र की नमाज़ (दो रकअत) बरक़रार रखी गई और क़याम की नमाज़ में वृद्धि कर दी गयी।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

---

1. किताबुल ईमान, बाब क़ौलुन्नबी बुनियल इस्लामु अला ख़म्सिन।
2. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग 1, हदीस 398

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़ की श्रेष्ठता

मसला 6. रोज़ाना पाबन्दी से पांच नमाज़ें अदा करने से तमाम सग़ीरा (छोटे) माफ़ हो जाते हैं।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَرَأَيْتُمْ لَوْ أَنَّ نَهْرًا بِبَابِ أَحَدِكُمْ يَغْتَسِلُ فِيْهِ كُلَّ يَوْمٍ خَمْسًا مَا تَقُوْلُ ذَلِكَ يُبْقِيْ مِنْ دَرَنِهِ ؟ قَالُوْا لَا يُبْقِيْ مِنْ دَرَنِهِ شَيْئًا قَالَ : فَذَالِكَ مَثَلُ الصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ يَمْحُوا اللهُ بِهَا الْخَطَايَا مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "तुम्हारा क्या विचार है कि अगर तुममें से किसी के दरवाज़े पर नहर बहती हो और वह उस नहर में हर दिन पांच बार नहाए, तो क्या उसके बदन पर कोई मैल कुचैल बाक़ी रह जाएगा?" सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया "नहीं! किसी प्रकार का मैल कुचैल बाक़ी नहीं रहेगा।" आप सल्ल० ने फ़रमाया "यही पांच नमाज़ों की मिसाल है। अल्लाह तआला उन नमाज़ों के द्वारा गुनाह मिटा देता है।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 7. नमाज़ गुनाहों की आग को ठंडा करती है।

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِنَّ لِلّٰهِ مَلَكًا يُنَادِيْ عِنْدَ كُلِّ صَلَاةٍ يَابَنِيْ آدَمَ ! قُوْمُوْا إِلَى نِيْرَانِكُمُ الَّتِيْ أَوْقَدْتُمُوْهَا فَاطْفُئُوْهَا رَوَاهُ الطَّبْرَانِيُّ فِي الْأَوْسَطِ (٢) (حسن)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "हर नमाज़ के समय अल्लाह तआला का (निर्धारित किया) फ़रिश्ता पुकारता है "लोगो! उठो, उस आग को बुझाओ जिसे तुमने (अपने गुनाहों से) जलाया है।" इसे तबरानी ने रिवायत किया है।[2]

---

1. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलज़ुबैदी, हदीस 330
2. सहीह अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब, लिलअलबानी, भाग 1, हदीस 355

Www.IslamicBooks.Website

मसला 8. पांचों नमाज़ें पाबन्दी से अदा करने वाला क़यामत के दिन सिद्दीक़ीन और शहीदों के साथ होगा।

عَنْ عُمَرَ بْنِ مَرَّةَ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ : يَارَسُوْلَ اللهِ ! أَرَأَيْتَ إِنْ شَهِدْتُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّكَ رَسُوْلُ اللهِ وَصَلَّيْتُ الصَّلَوَاتِ الْخَمْسَ وَ أَدَّيْتُ الزَّكَاةَ وَ صُمْتُ رَمَضَانَ وَ قُمْتُهُ فَمِمَّنْ أَنَا ؟ قَالَ : مِنَ الصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ رَوَاهُ ابْنُ حِبَّانَ (١) (صحيح)

हज़रत उमर बिन मर्रा जुहनी रज़ि० कहते हैं कि एक आदमी नबी अकरम सल्ल० की सेवा में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया "या रसूलुल्लाह सल्ल०! बताइए अगर मैं गवाही दूं कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं आप अल्लाह के रसूल हैं और पांचों नमाज़ें अदा करूं, ज़कात दूं, रमज़ान के रोज़े रखूं और रमज़ान में क़याम भी करूं तो मेरी गणना किन लोगों में होगी?" आपने इरशाद फ़रमाया "सिद्दीक़ीन और शहीदों में।" इसे इब्ने हिबान ने रिवायत किया है।[1]

मसला 9. रात के अंधेरे में मस्जिद में आने वाले नमाज़ियों के लिए क़यामत के दिन संपूर्ण नूर की ख़ुशख़बरी है।

عَنْ بُرَيْدَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : بَشِّرُوا الْمَشَّائِيْنَ فِي الظُّلَمِ إِلَى الْمَسَاجِدِ بِالنُّوْرِ التَّامِّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ (٢) (صحيح)

हज़रत बुरैदा रज़ि० रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "अंधेरे में मस्जिदों की तरफ़ चलकर जाने वालों को क़यामत के दिन सम्पूर्ण रौशनी की ख़ुशख़बरी दे दो।" इसे अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[2]

मसला 10. मस्जिद में आने वाले नमाज़ी अल्लाह के मुलाक़ाती हैं जिनकी अल्लाह तआला इज़्ज़त फ़रमाता है।

---

1. सहीह अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 358
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 525

Www.IslamicBooks.Website

وَعَنْ سَلْمَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ : مَنْ تَوَضَّأَ فِي بَيْتِهِ فَأَحْسَنَ الْوُضُوْءَ ثُمَّ أَتَى الْمَسْجِدَ فَهُوَ زَائِرُ اللهِ وَ حَقٌّ عَلَى الْمَزُوْرِ أَنْ يُكْرِمَ الزَّائِرَ

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ (١) (حسن)

हज़रत सलमान रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "जिसने अपने घर में अच्छी तरह वुज़ू किया और फिर मस्जिद में आया वह अल्लाह का मुलाक़ाती है और मेज़बान के लिए ज़रूरी है कि वह अपने मुलाक़ाती की इज़्ज़त करे।" इसे तबरानी ने रिवायत किया है।[1]

1. सहीह अत्तर्गीब वत्तर्हीब, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 320

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़ की अहमियत

मसला 11. बेनमाज़ी का अंजाम क़ारून, फ़िरऔन, हामान और उबई बिन ख़ल्फ़ के साथ होगा।

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ ذَكَرَ الصَّلَاةَ يَوْمًا فَقَالَ : مَنْ حَافَظَ عَلَيْهَا كَانَتْ لَهُ نُوْرًا وَّبُرْهَانًا وَّنَجَاةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمَنْ لَّمْ يُحَافِظْ عَلَيْهَا لَمْ يَكُنْ لَهُ نُوْرًا وَّ لَا بُرْهَانًا وَّ لَا نَجَاةً وَكَانَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَعَ قَارُوْنَ وَ هَامَانَ وَ فِرْعَوْنَ وَ أُبَيِّ ابْنِ خَلَفٍ رَوَاهُ ابْنُ حِبَّانَ (١) (حسن)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अलआस रज़ि० कहते हैं कि नबी अकरम सल्ल० ने एक दिन नमाज़ का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया : "जिस व्यक्ति ने नमाज़ की हिफ़ाज़त की उसके लिए नमाज़ क़यामत के दिन नूर, बुरहान और निजात का कारण होगी जिसने नमाज़ की हिफ़ाज़त न की उसके लिए न नूर होगा न बुरहान और न निजात। और क़यामत के दिन उसका अंजाम क़ारून, फ़िरऔन, हामान और उबई बिन ख़ल्फ़ के साथ होगा।" इसे इब्ने हिबान ने रिवायत किया है।[1]

मसला 12. इस्लाम और कुफ्र के बीच अवरोध नमाज़ है।

عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بَيْنَ الرَّجُلِ وَ بَيْنَ الشِّرْكِ وَ الْكُفْرِ تَرْكُ الصَّلَاةِ رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "(मुसलमान) आदमी और शिर्क या कुफ़्र के बीच (अवरोध) तर्के नमाज़ है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 13. दस साल की उम्र में अगर बच्चा नमाज़ का आदी न बने तो उसे मारकर नमाज़ पढ़वानी चाहिए।

1. सहीह इब्ने हिबान, लिल अरनाऊत, चौथा भाग, हदीस 1467
2. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 204

Www.IslamicBooks.Website

عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مُرُوْا أَوْلَادَكُمْ بِالصَّلَاةِ وَهُمْ أَبْنَاءُ سَبْعِ سِنِيْنَ وَاضْرِبُوْهُمْ عَلَيْهَا وَهُمْ أَبْنَاءُ عَشْرِ سِنِيْنَ وَفَرِّقُوْا بَيْنَهُمْ فِي الْمَضَاجِعِ رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (١) (صحيح)

हज़रत अम्र अपने बाप शुऐब से और शुऐब अपने दादा (अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि०) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जब तुम्हारे बच्चे सात साल के हो जाएं तो उन्हें नमाज़ पढ़ने का हुक्म दो, जब दस साल के हो जाएं और नमाज़ पाबन्दी से न पढ़ें तो नमाज़ पढ़ाने के लिए उन्हें मारो, और दस साल की उम्र के बच्चों को अलग-अलग सुलाओ।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[1]

मसला 14. केवल नमाज़ अस्र का छूट जाना ऐसा है जैसे किसी का माल और घर बार लुट जाए।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اَلَّذِيْ تَفُوْتُهُ صَلَاةُ الْعَصْرِ فَكَأَنَّمَا وُتِرَ أَهْلُهُ وَمَالُهُ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٢)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जिस व्यक्ति की नमाज़े अस्र छूट जाए उसकी हालत उस व्यक्ति की तरह है जिसके घर वाले और माल व दौलत विनष्ट हो गया हो।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 15. नमाज़ से ग़फ़लत की सज़ा।

عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الرُّؤْيَا قَالَ : أَمَّا الَّذِيْ يُثْلَغُ رَأْسُهُ بِالْحَجَرِ فَإِنَّهُ يَأْخُذُ الْقُرْآنَ فَيَرْفُضُهُ وَيَنَامُ عَنِ الصَّلَاةِ الْمَكْتُوْبَةِ رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٣)

हज़रत समुरा बिन जुंदुब रज़ि० सपने की हदीस में रसूलुल्लाह सल्ल० से रिवायत करते हैं आप सल्ल० ने फ़रमाया "जो व्यक्ति

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 465
2. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिज़्ज़ुबैदी, हदीस 340

Www.IslamicBooks.Website

क़ुरआन याद करके भुला देता है और फ़र्ज़ नमाज़ पढ़े बिना सो जाता है उसका सर पत्थर से कुचला जा रहा था।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 16. नमाज़े फ़ज्र और इशा के लिए मस्जिद में न आना ऊपर की निशानी है।

मसला 17. जमाअत से नमाज़ न पढ़ने वाले लोगों के घरों को रसूले अकरम सल्ल० ने जलाने का इरादा फ़रमाया।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لَيْسَ صَلاَةٌ أَثْقَلَ عَلَى الْمُنَافِقِيْنَ مِنَ الْفَجْرِ وَالْعِشَاءِ ، وَلَوْ يَعْلَمُوْنَ مَا فِيْهِمَا لَأَتَوْهُمَا وَ لَوْ حَبْوًا ، لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ آمُرَ الْمُؤَذِّنَ فَيُقِيْمَ ثُمَّ آمُرَ رَجُلاً يَؤُمُّ النَّاسَ ، ثُمَّ أَخُذَ شُعَلاً مِنْ نَارٍ فَأُحَرِّقَ عَلَى مَنْ لاَ يَخْرُجُ إِلَى الصَّلاَةِ بَعْدُ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "कपटियों पर फ़ज्र और इशा की नमाज़ से ज़्यादा भारी कोई नमाज़ नहीं होती अगर उन्हें पता चल जाए कि दोनों नमाज़ों का सवाब कितना ज़्यादा है तो उन दोनों नमाज़ में ज़रूर आते चाहे घुटनों के बल ही आना पड़ता। मैंने इरादा किया कि मुअज़्ज़िन को हुक्म दूं कि वह इक़ामत कहे फिर एक आदमी को हुक्म दूं कि वह लोगों की इमामत कराए और स्वयं आग का एक शौला लेकर उन लोगों (के घरों) को जला दूं जो उस (अज़ान और इक़ामत के) बाद नमाज़ के लिए नहीं निकलते।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 18. ख़िलाफ़े सुन्नत अदा की गई नमाज़ क़यामत के दिन नाकामी व नामुरादी का कारण बनेगी।

मसला 18-1. क़यामत के दिन अल्लाह के हक़ों में से सबसे पहले नमाज़ का हिसाब होगा।

---

1. किताबुत्ताबीर, बाब ताबीर।
2. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 383

Www.IslamicBooks.Website

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِنَّ أَوَّلَ مَا يُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ مِنْ عَمَلِهِ صَلَاتُهُ فَإِنْ صَلُحَتْ فَقَدْ أَفْلَحَ وَ أَنْجَحَ وَإِنْ فَسَدَتْ فَقَدْ خَابَ وَ خَسِرَ فَإِن انْتَقَصَ مِنْ فَرِيْضَتِهِ شَيْئٌ قَالَ الرَّبُّ تَبَارَكَ وَتَعَالَى : أُنْظُرُوْا هَلْ لِعَبْدِيْ مِنْ تَطَوُّعٍ فَيُكْمِلُ بِهَا مَا انْتَقَصَ مِنَ الْفَرِيْضَةِ ثُمَّ يَكُوْنُ سَائِرُ عَمَلِهِ عَلَى ذَالِكَ

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (٢) (صحيح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया "क़यामत के दिन बन्दे से सबसे पहले जिस चीज़ का हिसाब लिया जाएगा वह उसकी नमाज़ है अगर नमाज़ (सुन्नत के अनुसार) सही हुई तो बन्दा कामयाब व कामरान होगा और अगर नमाज़ ख़राब हुई (अर्थात सुन्नत के मुताबिक़ न पाई गई) तो नाकाम व नामुराद होगा। अगर बन्दे के फ़र्ज़ों में कुछ कमी हुई तो पालनहार फ़रमाएंगे मेरे बन्दे के कर्म-पत्र में देखो कोई नफ़िल इबादत है? (अगर हुई) तो नफ़लों के साथ फ़र्ज़ों की कमी पूरी की जाएगी फिर उसके तमाम कर्मों का हिसाब इसी तरह होगा।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[1]

1. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 337

Www.IslamicBooks.Website

पाकी के मसाइल

मसला 19. संभोग के बाद ग़ुस्ल करना फ़र्ज़ है।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا جَلَسَ بَيْنَ شُعَبِهَا الْأَرْبَعِ ثُمَّ جَهَدَهَا فَقَدْ وَجَبَ الْغُسْلُ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (۱)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जब कोई आदमी अपनी औरत से संभोग करे, तो उस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो जाता है।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 20. एहतिलाम के बाद ग़ुस्ल करना फ़र्ज़ है।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं0 50 के अन्तर्गत देखें।

मसला 21. ग़ुस्ल जनाबत का मसनून तरीक़ा यह है।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا اغْتَسَلَ مِنَ الْجَنَابَةِ يَبْدَأُ وَيَغْسِلُ يَدَيْهِ ثُمَّ يُفْرِغُ بِيَمِيْنِهِ عَلَى شِمَالِهِ فَيَغْسِلُ فَرْجَهُ ثُمَّ يَتَوَضَّأُ وُضُوْءَهُ لِلصَّلَاةِ ثُمَّ يَأْخُذُ الْمَاءَ فَيُدْخِلُ أَصَابِعَهُ فِيْ أُصُوْلِ الشَّعْرِ حَتّٰى إِذَا رَأَى أَنْ قَدِ اسْتَبْرَأَ ثُمَّ حَفَنَ عَلَى رَأْسِهِ ثَلَاثَ حَفَنَاتٍ ثُمَّ أَفَاضَ عَلَى سَائِرِ جَسَدِهِ ثُمَّ غَسَلَ رِجْلَيْهِ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्ल० ग़ुस्ल जनाबत फ़रमाते, तो पहले अपने दोनों हाथों को धोते फिर दाएं हाथ से बाएं हाथ पर पानी डाल कर शर्मगाह धोते, फिर नमाज़ की तरह का वुज़ू करते और उसके बाद हाथों की उंगलियों से सर के बालों की जड़ों को पानी से तर करते। तीन लप पानी सर में डालते और फिर सारे बदन पर पानी बहाते (आख़िर में एक बार) फिर दोनों पांव धोते।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 22. मज़ी निकलने से ग़ुस्ल फ़र्ज़ नहीं होता।

---

1. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 199
2. सहीह मुस्लिम, किताबुल हैज़, बाब सिफ़त ग़ुस्ल जनाबत।

Www.IslamicBooks.Website

عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ كُنْتُ رَجُلاً مَذَّاءً فَكُنْتُ اَسْتَحْيِ اَنْ اَسْأَلَ النَّبِيَّ ﷺ لِمَكَانِ ابْنَتِهِ فَأَمَرْتُ الْمِقْدَادَ فَسَأَلَهُ فَقَالَ : يَغْسِلُ ذَكَرَهُ وَيَتَوَضَّأُ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं मैं मज़ी का रोगी था और नबी अकरम सल्ल० से मसला मालूम करने से शर्माता था क्योंकि आप सल्ल० की बेटी मेरे निकाह में थी, अतएंव मैंने हज़रत मिक़दाद रज़ि० से कहा कि वह हुज़ूर सल्ल० से मसला मालूम करें। हुज़ूर अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "अपनी शर्मगाह धोए और वुज़ू कर ले।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 23. बीमारी की वजह से पूरी पवित्रता संभव न हो, तो इसी हालत में नमाज़ अदा करनी चाहिए, अलबत्ता हर नमाज़ के लिए नया वुज़ू करना ज़रूरी है।

عَنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ حُبَيْشٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا كَانَتْ تُسْتَحَاضُ ، فَقَالَ لَهَا النَّبِيُّ ﷺ : إِذَا كَانَ دَمُ الْحَيْضِ فَإِنَّهُ دَمٌ أَسْوَدُ يُعْرَفُ ، فَإِذَا كَانَ ذَالِكِ فَأَمْسِكِيْ عَنِ الصَّلاَةِ ، فَإِذَا كَانَ الْآخَرُ فَتَوَضَّئِيْ وَ صَلِّيْ ، فَإِنَّمَا هُوَ عِرْقٌ رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ(٢) (حسن)

हज़रत फ़ातिमा बिन्ते अबी हुबैश रज़ि० से रिवायत है कि वह रोगी थीं। नबी अकरम सल्ल० ने उन्हें फ़रमाया "जब हैज़ का ख़ून हो तो यह सियाह रंग का होता है जो पहचाना जाता है अतः जब यह हो तो नमाज़ न पढ़ो लेकिन अगर उसके अलावा कोई दूसरा ख़ून हो तो वुज़ू करके नमाज़ पढ़ लो, क्योंकि यह (इस्तिहाज़ा का ख़ून) एक रग से निकलता है।" इसे अबू दाऊद और नसाई ने रिवायत किया है।[2]

स्पष्टीकरण : स्थाई बीमारी जैसे पेशाब या मज़ी की बूंदें टपकते रहना या औरतों को इस्तिहाज़ा आना.....की सूरत में पायजामा या शलवार

---

1. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 144
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 264

Www.IslamicBooks.Website

आदि के नीचे अंडरवीयर या लंगोट आदि इस्तेमाल करना चाहिए। अंडरवीयर या लंगोट तो नापाक होगा लेकिन पायजामा या शलवार आदि पूरी तरह पाक होना चाहिए।

मसला 24. मासिक धर्म वाली और जुन्बी मस्जिद से गुज़र सकती हैं ठहर नहीं सकती।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ نَاوِلِيْنِي الْخُمْرَةَ مِنَ الْمَسْجِدِ ، قَالَتْ : فَقُلْتُ إِنِّيْ حَائِضٌ فَقَالَ : إِنَّ حَيْضَتَكِ لَيْسَتْ فِيْ يَدِكِ رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने मुझे मस्जिद से जाए नमाज़ लाने का हुक्म दिया। मैंने अर्ज़ किया "मैं तो हालते हैज़ में हूं।" आप सल्ल० ने फ़रमाया "हैज़ तेरे हाथ में तो नहीं है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम जनाबत की हालत में मस्जिद से गुज़र जाया करते थे। इसे सईद बिन मंसूर ने रिवायत किया है।[2]

मसला 25. पेशाब पाख़ाना के लिए पर्दे का आयोजन करना ज़रूरी है।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَرَادَ الْحَاجَةَ لَمْ يَرْفَعْ ثَوْبَهُ حَتَّى يَدْنُوَا مِنَ الْأَرْضِ . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَ أَبُوْدَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ (٣) (صحيح)

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी अकरम सल्ल० पेशाब पाख़ाना के लिए बैठने लगते, तो ज़मीन के क़रीब पहुंचकर कपड़ा उठाते (ताकि बेपर्दगी न हो) इसे तिर्मिज़ी, अबू दाऊद और दारमी ने रिवायत

1. किताबुल हैज़, बाब जवाज़ ग़ुस्ल हाइज़।
2. मंतक़ी अख़बार, पहला भाग, हदीस 391

Www.IslamicBooks.Website

किया है।[1]

عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَرَادَ الْبَرَازَ انْطَلَقَ حَتَّى لاَ يَرَاهُ أَحَدٌ رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (٤) (صحيح)

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी अकरम सल्ल० जब पेशाब पाख़ाना का इरादा फ़रमाते (तो बस्ती से) इतनी दूर निकल जाते कि कोई भी आप सल्ल० को देख न पाता। इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

मसला 26. पेशाब से सावधानी न बरतना अज़ाबे क़ब्र का सबब है।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَامَّةُ عَذَابِ الْقَبْرِ فِي الْبَوْلِ فَاسْتَنْزِهُوْا مِنَ الْبَوْلِ رَوَاهُ الْبَزَّارُ وَالطَّبْرَانِيُّ وَالْحَاكِمُ وَالدَّارَقُطْنِي (صحيح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "क़ब्र में ज़्यादातर अज़ाब पेशाब की वजह से होता है अतः इससे बचो।" इसे बज़्ज़ार, तबरानी, हाकिम और दारे क़ुतनी ने रिवायत किया है।[3]

मसला 27. दाएं हाथ से इस्तिंजा करना मना है।

عَنْ أَبِيْ قَتَادَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لاَ يَمَسَّنَّ أَحَدُكُمْ ذَكَرَهُ بِيَمِيْنِهِ وَهُوَ يَبُوْلُ وَلاَ يَتَمَسَّحْ مِنَ الْخَلاَءِ بِيَمِيْنِهِ وَلاَ يَتَنَفَّسْ فِي الْإِنَاءِ رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अबू क़तादा रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "कोई आदमी पेशाब करते हुए अपनी शर्मगाह को दायां हाथ न लगाए न ही दाएं हाथ से इस्तिंजा करे और न ही (कोई चीज़ पीते समय) बर्तन में सांस ले।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[4]

---

1. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 13
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 2
3. सहीह अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 152
4. किताबुत्तहारत, बाब नह्य अनिल इस्तिंजा बिल यमीन।

Www.IslamicBooks.Website

मसला 28. बैतुल ख़ला में दाख़िल होने से पहले यह दुआ पढ़नी मसनून है।

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا دَخَلَ الْخَلَاءَ قَالَ : اللَّهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٢)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब बैतुल ख़ला में दाख़िल होने का इरादा फ़रमाते तो यह दुआ पढ़ते "इलाही! मैं ख़बीस जिन्नों और ख़बीस जिन्नियों से तेरी पनाह मांगता हूं।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 29. बैतुल ख़ला से बाहर आने के बाद ग़ुफ़रा-न-क कहना मसनून है।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا خَرَجَ مِنَ الْغَائِطِ قَالَ غُفْرَانَكَ رَوَاهُ أَحْمَدُ وَ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ (٣) (صحيح)

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० जब बैतुल ख़ला से बाहर तशरीफ़ लाते, तो फ़रमाते "ऐ अल्लाह! मैं तेरी बख़्शिश का इच्छुक हूं।" इसे अहमद, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[2]

1. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 211
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 23

Www.IslamicBooks.Website

वुज़ू और तयम्मुम के मसाइल

मसला 30. वुज़ू से पहले "बिस्मिल्लाहि" पढ़ना ज़रूरी है।

عَنْ أَبِيْ سَعِيْدِ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لَا وُضُوْءَ لِمَنْ لَمْ يَذْكُرِ اسْمَ اللهِ عَلَيْهِ رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (١) (حسن)

हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जिसने वुज़ू से पहले "बिस्मिल्लाहि" न पढ़ी उसका वुज़ू पूरा नहीं हुआ।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 31. वुज़ू से पहले नीयत के प्रचलित शब्द "नवैतु अन अ-त-वज़्ज़ा" सुन्नत से साबित नहीं।

मसला 32. वुज़ू का मसनून तरीक़ा यह है।

عَنْ حُمْرَانَ أَنَّ عُثْمَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ دَعَا بِوَضُوْءٍ فَتَوَضَّأَ فَغَسَلَ كَفَّيْهِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ مَضْمَضَ وَاسْتَنْثَرَ ثُمَّ غَسَلَ وَجْهَهُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ، ثُمَّ غَسَلَ يَدَهُ الْيُمْنَى إِلَى الْمِرْفَقِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ، ثُمَّ غَسَلَ يَدَهُ الْيُسْرَى مِثْلَ ذَلِكَ ، ثُمَّ مَسَحَ رَأْسَهُ ثُمَّ غَسَلَ رِجْلَهُ الْيُمْنَى إِلَى الْكَعْبَيْنِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ، ثُمَّ غَسَلَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى مِثْلَ ذَلِكَ.ثُمَّ قَالَ : رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ تَوَضَّأَ نَحْوَ وُضُوْئِيْ هٰذَا رَوَاهُ مُسْلِمٌ

हज़रत हुमरान रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत उसमान रज़ि० ने वुज़ू के लिए पानी मंगाया। पहले अपनी हथेलियां तीन बार धोईं, फिर कुल्ली की और नाक में पानी डाला। फिर अपना मुंह तीन बार धोया। उसके बाद अपना दायां हाथ कोहनी तक तीन बार धोया। इसी तरह बायां हाथ कोहनी तक तीन बार धोया। फिर सर का मसह किया। मसह के बाद अपना दायां पांव टख़ने तक तीन बार धोया और इसी तरह बायां पांव टख़ने तक तीन बार धोया। फिर फ़रमाया "मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को इसी तरह वुज़ू करते देखा है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

1. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 24
2. किताबुत्तहारत, बाब सिफ़तुल वुज़ू।

Www.IslamicBooks.Website

मसला 33. वुज़ू के अंग एक बार या दो बार या तीन बार धोने जाइज़ हैं। इससे अधिक धोना मना है।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : تَوَضَّأَ النَّبِيُّ ﷺ مَرَّةً مَرَّةً رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ (١)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने वुज़ू करते हुए एक एक बार अंग धोए। इसे अहमद, बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, नसाई, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ تَوَضَّأَ مَرَّتَيْنِ مَرَّتَيْنِ رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبُخَارِيُّ (٢)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने वुज़ू किया और दो-दो बार अंग धोए। इसे अहमद और बुख़ारी ने रिवायत किया है।[2]

عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ قَالَ : جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ يَسْأَلُهُ عَنِ الْوُضُوْءِ فَأَرَاهُ ثَلَاثًا وَ قَالَ : هٰذَا الْوُضُوْءُ ، فَمَنْ زَادَ عَلٰى هٰذَا فَقَدْ أَسَاءَ وَتَعَدّٰى وَظَلَمَ رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ (٣) (حسن)

हज़रत अम्र अपने बाप शुऐब से और शुऐब अपने दादा (अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस) रज़ि० से मालूम करते हैं कि एक देहाती ने रसूलुल्लाह सल्ल० से वुज़ू का तरीक़ा मालूम किया तो नबी अकरम सल्ल० ने उसे तीन तीन बार वुज़ू के अंग धोकर दिखाए और फ़रमाया "वुज़ू का तरीक़ा यह है। जिसने इससे ज़्यादा बार धोए उसने बुरा किया, ज़्यादती की और ज़ुल्म किया।" इसे अहमद, नसाई और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[3]

मसला 34. रोज़ा न हो, तो वुज़ू करते समय नाक में पानी अच्छी

1. सहीह बुख़ारी, किताबुल वुज़ू, बाब वुज़ू।
2. सहीह बुख़ारी, किताबुल वुज़ू, बाब वुज़ू।
3. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 339

Www.IslamicBooks.Website

तरह चढ़ाना चाहिए।

मसला 35. हाथ पांव की उंगलियों और दाढ़ी का ख़िलाल करना मसनून है।

عَنْ لَقِيطِ بْنِ صَبِرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَسْبِغِ الْوُضُوْءَ وَخَلِّلْ بَيْنَ الْأَصَابِعِ وَبَالِغْ فِي الْإِسْتِنْشَاقِ إِلاَّ أَنْ تَكُوْنَ صَائِمًا رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ (١) (صحيح)

हज़रत लक़ीत बिन सबरा रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "वुज़ू अच्छी तरह कर, हाथ पांव की उंगलियों में ख़िलाल कर और अगर रोज़ा न हो तो नाक में पानी अच्छी तरह चढ़ा।" इसे अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

عَنْ عُثْمَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يُخَلِّلُ لِحْيَتَهُ فِي الْوُضُوْءِ . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (٢) (صحيح)

हज़रत उसमान रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० वुज़ू करते हुए दाढ़ी का ख़िलाल करते थे। इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[2]

मसला 36. केवल चौथाई सर का मसह करना सुन्नत से साबित नहीं।

मसला 37. गर्दन का मसह करना सुन्नत से साबित नहीं।

मसला 38. सर का मसह सिर्फ़ एक बार है जिसका मसनून तरीक़ा यह है।

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ زَيْدِ بْنِ عَاصِمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فِيْ صِفَةِ الْوُضُوْءِ قَالَ : مَسَحَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ رَأْسَهُ بِيَدَيْهِ فَأَقْبَلَ بِهِمَا وَ أَدْبَرَ بَدَأَ بِمُقَدَّمِ رَأْسِهِ حَتَّى ذَهَبَ بِهِمَا إِلَى قَفَاهُ ثُمَّ رَدَّهُمَا إِلَى الْمَكَانِ الَّذِيْ بَدَأَ مِنْهُ رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٣)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन आसिम रज़ि० वुज़ू का तरीक़ा

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 129
2. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 28

Www.IslamicBooks.Website

बयान करते हुए कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने अपने सर का मसह इस तरह किया कि अपने दोनों हाथ आगे से पीछे ले गए और पीछे से आगे लाए। अर्थात् पहले सर के अगले हिस्से से शुरू किया और दोनों हाथों को गुद्दी तक ले गए फिर जहां से शुरू किया था वहीं तक वापस ले आए। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 39. सर के मसह के साथ कानों का मसह भी ज़रूरी है।

मसला 40. कानों के मसह का मसनून तरीक़ा यह है।

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فِيْ صِفَةِ الْوُضُوْءِ قَالَ : ثُمَّ مَسَحَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِرَأْسِهِ وَ أُذُنَيْهِ بَاطِنِهِمَا بِالسَّبَّاحَتَيْنِ وَ ظَاهِرِهِمَا بِإِبْهَامَيْهِ رواهُ النَّسَائِيُّ (١) (حسن)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० वुज़ू का तरीक़ा बताते हुए फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने अपने सर का मसह किया और अपनी शहादत की दोनों उंगलियों से कानों के अंदर और अपने दोनों अंगूठों से दोनों कानों के बाहर के हिस्से का मसह किया। इसे नसाई ने रिवायत किया है।[1]

मसला 41. वुज़ू के अंग में से कोई जगह सूखी नहीं रहनी चाहिए।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : رَأَى النَّبِيُّ ﷺ رَجُلاً وَفِيْ قَدَمِهِ مِثْلُ الظُّفُرِ لَمْ يُصِبْهُ الْمَاءُ فَقَالَ : اِرْجِعْ فَأَحْسِنْ وُضُوْءَكَ رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ (٢) (صحيح)

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं नबी अकरम सल्ल० ने एक आदमी को देखा जिसके पांव में (वुज़ू करने के बाद) नाख़ुन जितनी जगह सूखी थी। रसूलुल्लाह सल्ल० ने उसे हुक्म दिया कि "वापस जाकर अच्छी तरह वुज़ू कर।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

मसला 42. रसूलुल्लाह सल्ल० ने हर वुज़ू के साथ मिस्वाक का

---

1. किताबुल वुज़ू, बाब मसह।
2. सहीह सुनन नसाई, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 99
3. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 158

Www.IslamicBooks.Website

प्रलोभन दिलाया है।

मसला 43. मिस्वाक की लम्बाई निर्धारित करना सुन्नत से साबित नहीं।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ : لَوْلاَ أَنْ أَشُقَّ عَلَى أُمَّتِيْ لَأَمَرْتُهُمْ بِالسِّوَاكِ مَعَ كُلِّ وُضُوْءٍ أَخْرَجَهُ مَالِكٌ وَأَحْمَدُ وَالنَّسَائِيُّ. (٣) (صحيح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "अगर मुझे उम्मत की तकलीफ़ का एहसास न होता, तो मैं हर नमाज़ के साथ मिस्वाक करने का हुक्म देता।" इसे मालिक, अहमद और नसाई ने रिवायत किया है।[1]

मसला 44. वुज़ू करके पहने हुए जूतों, मौज़ों और जुराबों पर मसह किया जा सकता है।

मसला 45. मुद्दते मसह की ठहरने वाले के लिए एक दिन रात और मुसाफ़िर के लिए तीन दिन रात है।

मसला 46. जुन्बी होना मसह की मुद्दत को ख़त्म कर देता है।

عَنِ الْمُغِيْرَةِ بْنِ شُعْبَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : تَوَضَّأَ النَّبِيُّ ﷺ وَمَسَحَ عَلَى الْجَوْرَبَيْنِ وَالنَّعْلَيْنِ رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ مَاجَةَ (١) (صحيح)

हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने वुज़ू करते समय जुराबों और जूतों पर मसह किया। इसे अहमद, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

عَنْ صَفْوَانَ بْنِ عَسَّالٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَأْمُرُنَا إِذَا كُنَّا سَفْرًا أَنْ لاَ نَنْزِعَ خِفَافَنَا ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ وَلَيَالِيَهُنَّ إِلاَّ مِنْ جَنَابَةٍ وَلَكِنْ مِّنْ غَائِطٍ وَبَوْلٍ وَنَوْمٍ رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ (٢) (حسن)

हज़रत सफ़वान बिन अस्साल रज़ि० से रिवायत है कि जब हम सफ़र में होते तो रसूलुल्लाह सल्ल० तीन दिन रात मौज़े पहने रखने का

1. सहीह सुनन नसाई, लिलअलबानी, पहला भाग हदीस 7
2. सहीह सुनन नसाई, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 121

Www.IslamicBooks.Website

हुक्म देते चाहे पेशाब पाख़ाना की हाजत हो या नींद आए अलबत्ता जनाबत की वजह से मौज़े उतारने का हुक्म देते थे। इसे तिर्मिज़ी और नसाई ने रिवायत किया है।[1]

عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِيْ طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ وَّلَيَالِيَهُنَّ لِلْمُسَافِرِ وَيَوْمًا وَلَيْلَةً لِلْمُقِيْمِ يَعْنِيْ فِي الْمَسْحِ عَلَى الْخُفَّيْنِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٣)

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने तीन दिन रात मुसाफ़िर के लिए और एक दिन रात ठहरने वाले के लिए मौज़ों के मसह की मुद्दत मुक़र्रर फ़रमाई। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 47. एक वुज़ू से कई नमाज़ें पढ़ी जा सकती हैं।

عَنْ بُرَيْدَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى الصَّلَوَاتِ يَوْمَ الْفَتْحِ بِوُضُوْءٍ وَّاحِدٍ رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٤)

हज़रत बुरैदा रज़ि० से रिवायत है कि फ़तह मक्का के दिन रसूलुल्लाह सल्ल० ने कई नमाज़ें एक वुज़ू से पढ़ीं। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[3]

मसला 48. पानी न मिलने की सूरत में वुज़ू की बजाए पाक मिट्टी से तयम्मुम करना जाइज़ है।

मसला 49. वुज़ू या ग़ुस्ल या वुज़ू और ग़ुस्ल दोनों के लिए एक ही तयम्मुम काफ़ी है।

मसला 50. एहतिलाम (स्वप्न दोष) के बाद ग़ुस्ल करना फ़र्ज़ है।

मसला 51. दोनों हाथ एक बार मिट्टी वाली जगह पर मारकर पहले मुंह और फिर दोनों हाथ एक दूसरे पर फेर लेने से तयम्मुम पूरा हो जाता है।

---

1. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 83
2. किताबुत्तहारत, बाब तौक़ीत फ़िल मसह अलल ख़फ़ीन।
3. किताबुत्तहारत, बाब जवाज़ सलात कुल्लहा वुज़ू।

Www.IslamicBooks.Website

عَنْ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ بَعَثَنِي النَّبِيُّ ﷺ فِي حَاجَةٍ فَأَجْنَبْتُ فَلَمْ أَجِدِ الْمَاءَ فَتَمَرَّغْتُ فِي الصَّعِيْدِ كَمَا تَتَمَرَّغُ الدَّابَّةُ ، ثُمَّ أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَذَكَرْتُ لَهُ ذَلِكَ فَقَالَ : **إِنَّمَا كَانَ يَكْفِيْكَ أَنْ تَقُوْلَ بِيَدِكَ هَكَذَا** ثُمَّ ضَرَبَ بِيَدِهِ الْأَرْضَ ضَرْبَةً وَاحِدَةً ثُمَّ مَسَحَ الشِّمَالَ عَلَى الْيَمِيْنِ وَظَاهِرَ كَفَّيْهِ وَ وَجْهَهُ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَاللَّفْظُ لِمُسْلِمٍ (١)

हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० से रिवायत है कि मुझे नबी अकरम सल्ल० ने एक काम से भेजा। मुझे स्वप्न दोष हो गया और पानी न मिला। मैं (तयम्मुम करने के लिए) ज़मीन पर जानवरों की तरह लोटा जब नबी अकरम सल्ल० के पास वापस आया और इस घटना का ज़िक्र किया तो नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "तुझे अपने हाथ से इस तरह कर लेना काफ़ी था।" फिर आप सल्ल० ने अपने दोनों हाथ एक बार ज़मीन पर मारे और बाएं हाथ को दाएं पर मारा। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने हथेलियों की पुश्त और मुंह पर मसह कर लिया। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है। यह शब्द मुस्लिम के हैं।[1]

मसला 52. वुज़ू के बाद निम्न दुआ पढ़नी मसनून है।

عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ **مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ يَتَوَضَّأُ فَيُسْبِغُ الْوُضُوْءَ ثُمَّ يَقُوْلُ : أَشْهَدُ أَنْ لاَّ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ إِلاَّ فُتِحَتْ لَهُ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ الثَّمَانِيَةُ يَدْخُلُ مِنْ أَيِّهَا شَاءَ....** رَوَاهُ أَحْمَدُ وَمُسْلِمٌ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ (٢) وَ زَادَ **أَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِى مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِى مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ** (صحيح)

हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "अगर कोई व्यक्ति पूरा वुज़ू करके यह दुआ पढ़ ले कि मैं गवाही देता हूं अल्लाह तआला के सिवा कोई उपास्य नहीं, उसका कोई शरीक नहीं, मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं, तो उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाते हैं कि जिससे

1. किताबुल हैज़, बाब तयम्मुम।

Www.IslamicBooks.Website

चाहे दाख़िल हो। इसे अहमद, मुस्लिम, अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है[1] और तिर्मिज़ी ने निम्न कलिमात की वृद्धि की है "ऐ अल्लाह! मुझे तौबा क़ुबूल करने वालों और पाक रहने वालों में से बना।[2]

मसला 53. वुज़ू के दौरान विभिन्न अंग धोते हुए विभिन्न दुआएं या कलिमा शहादत पढ़ना सुन्नत से साबित नहीं।

मसला 54. वुज़ू करने के बाद बेकार बातें या व्यर्थ काम नहीं करने चाहिएं।

عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا تَوَضَّأَ أَحَدُكُمْ فَأَحْسَنَ وُضُوْءَهُ ثُمَّ خَرَجَ عَامِدًا إِلَى الْمَسْجِدِ فَلاَ يُشَبِّكَنَّ بَيْنَ أَصَابِعِهِ فَإِنَّهُ فِي الصَّلاَةِ رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत काअब बिन उजरा रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जब तुममें से कोई वुज़ू करके मस्जिद की तरफ़ जाए, तो (रास्ते में) उंगलियों में उंगलियां न डाले क्योंकि (वुज़ू करने के बाद) वह हालते नमाज़ में होता है।" इसे अहमद, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसाई और दारमी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 55. टेक लगाए बिना नींद या ऊंघ आ जाए तो वुज़ू (या तयम्मुम) नहीं टूटता।

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كَانَ أَصْحَابُ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ يَنْتَظِرُوْنَ الْعِشَاءَ الْآخِرَةَ حَتَّى تَخْفِقَ رُؤُوْسُهُمْ ثُمَّ يُصَلُّوْنَ وَلاَ يَتَوَضَّؤُوْنَ رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (٢) (صحيح)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० के ज़माने में सहाबा किराम रज़ि० नमाज़ इशा का इंतिज़ार करते यहां तक कि उनके सर (नींद की वजह से) झुक जाते फिर वह (दोबारा)

---

1. सहीह मुस्लिम, किताबुत्तहारत, बाब ज़िक्र।
2. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 48
3. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 526

Www.IslamicBooks.Website

वुज़ू किए बिना नमाज़ पढ़ लेते। इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[1]

मसला 56. मज़ी निकलने से वुज़ू टूट जाता है।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 22 के अन्तर्गत देखें।

मसला 57. हवा निकलने होने से वुज़ू टूट जाता है।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ : لاَ وُضُوْءَ إِلاَّ مِنْ صَوْتٍ أَوْ رِيْحٍ رواهُ التِّرْمِذِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि "जब तक आवाज़ न आए या हवा बाहर न हो उस समय तक (दोबारा) वुज़ू करना वाजिब नहीं।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[2]

मसला 58. कपड़े की आड़ के बिना शर्मगाह को हाथ लगाया जाए, तो वुज़ू टूट जाता है वरना नहीं।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ : مَنْ أَفْضَى بِيَدِهِ إِلَى ذَكَرِهِ لَيْسَ دُوْنَهُ سَتْرٌ فَقَدْ وَجَبَ عَلَيْهِ الْوُضُوْءُ رَوَاهُ أَحْمَدُ (٢) (صحيح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "जिसने अपना हाथ (कपड़े की) आड़ के बिना अपनी शर्मगाह को लगाया उस पर वुज़ू वाजिब हो गया।" इसे अहमद ने रिवायत किया है।[3]

मसला 59. मात्र सन्देह से वुज़ू नहीं टूटता।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا وَجَدَ أَحَدُكُمْ فِيْ بَطْنِهِ شَيْئًا فَأَشْكَلَ عَلَيْهِ أَخَرَجَ مِنْهُ شَيْئٌ أَمْ لاَ فَلاَ يَخْرُجَنَّ مِنَ الْمَسْجِدِ حَتَّى يَسْمَعَ صَوْتًا أَوْ يَجِدَ رِيْحًا رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٣)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 183
2. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 64
3. नैलुल अवतार, पहला भाग, हदीस 255

Www.IslamicBooks.Website

"जब तुममें से कोई आदमी अपने पेट में शिकायत महसूस करे और उसे सन्देह हो जाए कि हवा निकली हुई है या नहीं तो जब तक बदबू महसूस न करे या आवाज़ न सुने मस्जिद से वुज़ू के लिए बाहर न निकले।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 60. आग पर पकी हुई चीज़ें खाने से वुज़ू नहीं टूटता अलबत्ता ऊंट का गोश्त खाने के बाद वुज़ू करना चाहिए।

عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلاً سَأَلَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ أَنَتَوَضَّأُ مِنْ لُحُوْمِ الْغَنَمِ قَالَ : إِنْ شِئْتَ تَوَضَّأْ وَإِنْ شِئْتَ فَلاَ تَتَوَضَّأْ قَالَ : أَنَتَوَضَّأُ مِنْ لُحُوْمِ الْإِبِلِ قَالَ : نَعَمْ تَوَضَّأْ مِنْ لُحُوْمِ الْإِبِلِ رَوَاهُ أَحْمَدُ وَمُسْلِمٌ (١)

हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ि० से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने रसूले अकरम सल्ल० से पूछा "क्या हम बकरी का गोश्त खाकर वुज़ू करें?" आप सल्ल० ने फ़रमाया "चाहो तो कर लो चाहो तो न करो।" फिर उसने सवाल किया "क्या ऊंट का गोश्त खाकर वुज़ू करें?" आप सल्ल० ने फ़रमाया "हां! ऊंट का गोश्त खाकर वुज़ू करो।" इसे अहमद और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 61. इमाम के पीछे नमाज़ी का वुज़ू टूट जाए, तो उसे नाक पर हाथ रखकर पंक्ति से निकल जाना चाहिए और नया वुज़ू करके नमाज़ पढ़नी चाहिए।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَحْدَثَ أَحَدُكُمْ فِيْ صَلاَتِهِ فَلْيَأْخُذْ بِأَنْفِهِ ثُمَّ لِيَنْصَرِفْ رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (٢) (صحيح)

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जब तुममें से नमाज़ पढ़ते हुए किसी का वुज़ू टूट जाए तो वह अपनी नाक पर हाथ रखे और वुज़ू करके आए।" इसे अबू दाऊद ने

---

1. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 150
2. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 146

Www.IslamicBooks.Website

रिवायत किया है।[1]

स्पष्टीकरण : जिन चीज़ों से वुज़ू टूटता है उन्हीं चीज़ों से तयम्मुम भी टूट जाता है। और पानी मिलने या पानी इस्तेमाल करने की ताक़त हासिल होने के बाद तयम्मुम ख़त्म हो जाता है।

मसला 62. वुज़ू करने के बाद दो रकअत नमाज़ अदा करना मुस्तहब है।

मसला 63. तहीय्यतुल वुज़ू जन्नत में ले जाने वाला अमल है।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 499 के अन्तर्गत देखें.....।

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 985

Www.IslamicBooks.Website

सतर के मसाइल

मसला 64. केवल एक कपड़े में नमाज़ पढ़नी जाइज़ है बशर्ते कि कंधे ढके हुए हों।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لاَ يُصَلِّيْ أَحَدُكُمْ فِي الثَّوْبِ الْوَاحِدِ لَيْسَ عَلَى عَاتِقَيْهِ مِنْهُ شَيْءٌ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "तुममें से कोई आदमी एक कपड़े में नमाज़ न पढ़े जब तक कंधे न ढांप ले।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 65. नमाज़ में मुंह ढांपना मना है।

मसला 66. नमाज़ के दौरान इस तरह चादर कंधों से नीचे लटकाना कि उसके दोनों किनारे खुले हों, मना है, इसे "सदल" कहते हैं।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ نَهَى عَنِ السَّدْلِ فِي الصَّلاَةِ وَأَنْ يُغَطِّيَ الرَّجُلُ فَاهُ رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ (٢) (حسن)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने नमाज़ में "सदल" से और मुंह ढांपने से मना फ़रमाया है। इसे अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[2]

मसला 67. पायजामा, शलवार या तहबन्द टख़नों से नीचे रखना मना है।

عن أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : مَا أَسْفَلَ مِنَ الْكَعْبَيْنِ مِنَ الْإِزَارِ فَفِي النَّارِ رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٣)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "तहबन्द का वह हिस्सा जो टख़नों से नीचे होगा जहन्नम में

---

1. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलअलबानी, हदीस 234
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 597

Www.IslamicBooks.Website

जाएगा।'' इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 68. सर पर चादर या मोटा दुपट्टा रखे बिना औरत की नमाज़ नहीं होती।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لاَ تُقْبَلُ صَلاَةُ حَائِضٍ إِلاَّ بِخِمَارٍ رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया ''व्यस्क औरत की नमाज़ चादर (या मोटे दुपट्टे) के बिना नहीं होती।'' इसे अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[2]

1. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिज़्ज़ुबैदी, हदीस 1984
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 596

Www.IslamicBooks.Website

मस्जिदें और नमाज़ पढ़ने की जगह के मसाइल

मसला 69. मस्जिद बनाने वाले के लिए अल्लाह तआला जन्नत में घर बनाता है।

हज़रत उसमान रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जिसने अल्लाह तआला की प्रसन्नता हासिल करने के लिए मस्जिद बनाई, अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में वैसा ही घर बनाएगा।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 70. आप सल्ल० ने मस्जिदें बनाने उन्हें साफ़ और ख़ुश्बूदार रखने का हुक्म दिया है।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने मौहल्लों में मस्जिदें बनाने उन्हें पाक साफ़ और ख़ुश्बूदार रखने का हुक्म दिया है।" इसे अहमद, बुख़ारी, मुस्लिम और अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

मसला 71. मस्जिदों की तामीर में रंग व रोग़न और नक़्श व निगार ना़पसंदीदा हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "मुझे मुनक़्क़श मस्जिदें बनाने का हुक्म नहीं दिया गया।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[1]

---

1. लुअलउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 309
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 436

Www.IslamicBooks.Website

मसला 72. बेल बूटे या नक़्श व निगार वाले मुसल्ले पर नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى فِيْ خَمِيْصَةٍ لَهَا أَعْلاَمٌ فَنَظَرَ إِلَى أَعْلاَمِهَا نَظْرَةً فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ اذْهَبُوْا بِخَمِيْصَتِيْ هٰذِهِ إِلَى أَبِيْ جَهْمٍ وَأْتُوْنِيْ بِأَنْبِجَانِيَّةِ أَبِيْ جَهْمٍ فَإِنَّهَا أَلْهَتْنِيْ آنِفًا عَنْ صَلاَتِيْ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि नबी अकरम सल्ल० ने एक नक़्श व निगार वाली चादर में नमाज़ पढ़ी नमाज़ के दौरान नक़्श व निगार पर ध्यान चला गया, तो नमाज़ से फ़ारिग होने के बाद (सेवक) से फ़रमाया "यह चादर अबू जहम के पास ले जाओ और उससे सादा चादर ले आओ, क्योंकि इसने मुझे नमाज़ से ग़ाफ़िल कर दिया।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[2]

मसला 73. मस्जिद की सफ़ाई और देखभाल करना सुन्नत है।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَأَى بُصَاقًا فِيْ جِدَارِ الْقِبْلَةِ أَوْ مُخَاطًا أَوْ نُخَامَةً فَحَكَّهُ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने (मस्जिद में) क़िबला की दीवार पर थूक या रेंट देखा, तो उसे खुरच कर साफ़ कर दिया। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[3]

मसला 74. अल्लाह तआला के नज़दीक बेहतरीन जगह मस्जिद और बदतरीन जगह बाज़ार है।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَحَبُّ الْبِلاَدِ إِلَى اللهِ مَسَاجِدُهَا وَ أَبْغَضُ الْبِلاَدِ إِلَى اللهِ أَسْوَاقُهَا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٣)

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 431
2. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिज़्ज़ुबैदी, हदीस 245
3. किताबुल मस्जिद, बाब नह्य अनिल बिसाक़ फ़िल मस्जिद।

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "अल्लाह तआला के नज़दीक पसन्दीदा जगहें मस्जिदें और बदतरीन जगह बाज़ार हैं।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 75. मस्जिद में आने से पहले कच्चा लहसुन और प्याज़ नहीं खाना चाहिए।

عَنْ جَابِرٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ : مَنْ أَكَلَ ثُوْمًا اَوْ بَصَلاً فَلْيَعْتَزِلْنَا أَوْ قَالَ فَلْيَعْتَزِلْ مَسْجِدَنَا وَلْيَقْعُدْ فِيْ بَيْتِهِ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٤)

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "जो व्यक्ति लहसुन या प्याज़ खाए वह हम से अलग रहे।" या फ़रमाया "वह हमारी मस्जिद में न आए और अपने घर में ही बैठे।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 76. मस्जिद में दाख़िल होने के बाद बैठने से पहले दो रकअत तहीय्यतुल मस्जिद अदा करना मुस्तहब है।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 50 के अन्तर्गत देखें।

मसला 77. मस्जिद में कारोबारी और दूसरे दुनियावी मामलात पर गुफ़्तुगू करना नाजाइज़ है।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا رَأَيْتُمْ مَنْ يَبِيْعُ أَوْ يَبْتَاعُ فِي الْمَسْجِدِ فَقُوْلُوْا لاَأَرْبَحَ اللهُ تِجَارَتَكَ وَإِذَا رَأَيْتُمْ مَنْ يَنْشُدُ فِيْهِ ضَالَّةً فَقُوْلُوْا لاَ رَدَّ اللهُ عَلَيْكَ . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जब तुम किसी व्यक्ति को मस्जिद में ख़रीद व फ़रोख़्त करते देखो, तो कहो अल्लाह तुझे तिजारत में लाभ न दे। और जब किसी को अपनी गुमशुदा चीज़ का मस्जिद में ऐलान करते देखो, तो कहो अल्लाह तआला तुझे कभी वापस न दे।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[3]

1. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 241
2. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 333
3. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, दूसरा भाग, हदीस 1066

Www.IslamicBooks.Website

मसला 78. सारी ज़मीन रसूलुल्लाह सल्ल० की उम्मत के लिए मस्जिद बनाई गई है।

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ : جُعِلَتْ لِيَ الْأَرْضُ مَسْجِدًا وَ طَهُوْرًا وَ أَيُّمَا رَجُلٍ مِنْ أُمَّتِيْ أَدْرَكَتْهُ الصَّلَاةُ فَلْيُصَلِّ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٢)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "मेरे लिए ज़मीन को मस्जिद और मिट्टी को पाक करने वाली बनाया गया है। अतः मेरी उम्मत के लोगों को जहां कहीं भी नमाज़ का समय आए, अदा कर लें।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

स्पष्टीकरण : शरई मजबूरी जैसे (सफ़र या बीमारी आदि) की बिना पर जहां कहीं नमाज़ का समय आ जाए वहीं अदा कर लेनी चाहिए लेकिन शरई मजबूरी न हो तो मस्जिद में आकर जमाअत से नमाज़ अदा करना वाजिब है। (देखें मसला नं० 137)

मसला 79. मस्जिदे नबवी सल्ल० में नमाज़ का सवाब मस्जिदे हराम के अलावा बाक़ी तमाम मस्जिदों के मुक़ाबले में हज़ार दर्जे ज़्यादा है।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ صَلَاةٌ فِيْ مَسْجِدِيْ هَذَا خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ صَلَاةٍ فِيْمَا سِوَاهُ إِلَّا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "मेरी मस्जिद (मस्जिदे नबवी) में नमाज़ का सवाब मस्जिदे हराम के अलावा बाक़ी तमाम मस्जिदों के मुक़ाबले में हज़ार गुना ज़्यादा है।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[2]

मसला 80. मस्जिदे हराम, मस्जिदे अक़्सा, मस्जिदे नबवी सल्ल० में नमाज़ पढ़ने का सवाब बाक़ी तमाम मस्जिदों के मुक़ाबले में ज़्यादा है।

मसला 81. ज़ियारत करने या नमाज़ का सवाब हासिल करने की

1. सहीह बुख़ारी, किताबुस्सलात, बाब क़ौलुन्नबी।
2. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 881

Www.IslamicBooks.Website

नीयत से मस्जिदें हराम, मस्जिदें अक़सा, मस्जिदे नबवी सल्ल० के अलावा किसी दूसरी जगह का सफ़र करना जाइज़ नहीं।

عَنْ أَبِيْ سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لَا تَشُدُّوا الرِّحَالَ إِلَّا إِلَى ثَلَاثَةِ مَسَاجِدَ مَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَسْجِدِ الْأَقْصَى وَمَسْجِدِيْ هٰذَا مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٢)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "तीन मस्जिद, मस्जिदे हराम, मस्जिदे अक़सा और मस्जिदे नबवी के अलावा किसी दूसरी जगह के लिए (सवाब की नीयत से) सफ़र इख़्तियार न करो।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 82. मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ पढ़ने का सवाब उमरा के बराबर है।

عَنْ أُسَيْدِ بْنِ حُضَيْرٍ الْأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ : صَلَاةٌ فِيْ مَسْجِدِ قُبَاءَ كَعُمْرَةٍ . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (٣) (صحيح)

हज़रत उसैद बिन हुज़ैर अन्सारी रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ पढ़ने का सवाब उमरा के बराबर है।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[2]

मसला 83. हमाम और क़ब्रिस्तान में नमाज़ पढ़ना मना है।

عَنْ أَبِيْ سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اَلْأَرْضُ كُلُّهَا مَسْجِدٌ إِلَّا الْمَقْبَرَةَ وَالْحَمَّامَ رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत अबू सईद रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "क़ब्रिस्तान और हमाम के सिवा सारी ज़मीन मस्जिद है।" इसे अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और दारमी ने रिवायत किया है।[3]

मसला 84. ऊंटों के बाड़े में नमाज़ पढ़ना मना है।

---

1. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 882
2. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1159
3. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 463

Www.IslamicBooks.Website

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ صَلُّوْا فِيْ مَرَابِضِ الْغَنَمِ وَلاَ تُصَلُّوْا فِيْ أَعْطَانِ الْإِبِلِ رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (٢) (صحيح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "बकरियों के बाड़े में नमाज़ पढ़ लो, मगर ऊंटों के बाड़े में नमाज़ न पढ़ो।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 85. क़ब्रिस्तान में नमाज़ पढ़ना मना है।

मसला 86. क़ब्र की तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ना मना है।

मसला 87. क़ब्र पर मस्जिद निर्माण करना मना है।

मसला 88. मस्जिद में क़ब्र बनाना मना है।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ فِيْ مَرَضِهِ الَّذِيْ مَاتَ فِيْهِ لَعَنَ اللهُ الْيَهُوْدَ وَالنَّصَارَى اِتَّخَذُوْا قُبُوْرَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٣)

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने मौत की बीमारी में फ़रमाया "ईसाइयों और यहूदियों पर अल्लाह की लानत हो कि उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को सज्दागाह बना लिया।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

عَنْ أَبِيْ مَرْثَدٍ الْغَنَوِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لاَ تَجْلِسُوْا عَلَى الْقُبُوْرِ وَ لاَ تُصَلُّوْا إِلَيْهَا . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٤)

हज़रत अबू मरसद ग़नवी रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "क़ब्रों की तरफ़ (मुंह करके) नमाज़ न पढ़ो, न ही क़ब्रों पर (मुजाविर बनकर) बैठो।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[3]

मसला 89. मस्जिद में दाख़िल होने और निकलने की मसनून दुआ यह है।

---

1. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 285
2. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 306
3. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 499

Www.IslamicBooks.Website

عَنْ أَبِيْ حُمَيْدٍ أَوْ أَبِيْ أُسَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا دَخَلَ أَحَدُكُمُ الْمَسْجِدَ فَلْيَقُلْ ((اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ)) وَإِذَا خَرَجَ فَلْيَقُلْ ((اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ .)) رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अबू हुमैद या उसैद रज़ि० ने फ़रमाया "तुममें से जब कोई मस्जिद में दाख़िल हो तो यह दुआ मांगे "'इलाही मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।" और जब मस्जिद से निकले तो यह दुआ मांगे, "इलाही! मैं तुझसे तेरी कृपा का तालिब हूं।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

1. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 247

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़ के समयों के मसाइल

मसला 90. फ़र्ज़ नमाज़ें निर्धारित समयों पर पढ़नी ज़रूरी हैं।

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ مَرَّ عَلَى أَصْحَابِهِ يَوْمًا فَقَالَ لَهُمْ : هَلْ تَدْرُوْنَ مَا يَقُوْلُ رَبُّكُمْ تَبَارَكَ وَ تَعَالَى ؟ قَالَ : أَللهُ وَرَسُوْلُهُ أَعْلَمُ (قَالَهَا ثَلاثًا) قَالَ : وَ عِزَّتِيْ وَ جَلالِيْ لاَ يُصَلِّيْهَا أَحَدُكُمْ لِوَقْتِهَا إِلاَّ أَدْخَلْتُهُ الْجَنَّةَ وَ مَنْ صَلاَّهَا بِغَيْرِ وَقْتِهَا إِنْ شِئْتُ رَحِمْتُهُ وَ إِنْ شِئْتُ عَذَّبْتُهُ . رَوَاهُ الطَّبْرَانِيُّ (١) (حسن)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० एक दिन अपने सहाबा रज़ि० के पास से गुज़रे तो पूछा "क्या तुम जानते हो तुम्हारे पालनहार ने क्या कहा है?" सहाबा रज़ि० ने तीन बार अर्ज़ किया "अल्लाह और उसका रसूल बेहतर जानते हैं।" आप सल्ल० ने फ़रमाया "अल्लाह तआला कहता है मेरी इज़्ज़त और जलाल की क़सम! जो व्यक्ति समय पर नमाज़ अदा करेगा मैं उसे जन्नत में दाख़िल करूंगा और जिसने बेसमय नमाज़ अदा की (अर्थात् देरी से) नमाज़ पढ़ी उसे चाहूंगा तो अपनी रहमत से माफ़ कर दूंगा चाहूंगा तो अज़ाब दूंगा।" इसे तबरानी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 91. नमाज़े ज़ोहर का अव्वल समय जब सूरज ढल जाए और आख़िर समय जब हर चीज़ का साया उसके बराबर हो जाए।

मसला 92. नमाज़े अस्र का अव्वल समय जब हर चीज़ का साया उसके बराबर हो और आख़िर समय जब हर चीज़ का साया उससे दो गुना हो जाए।

मसला 93. नमाज़े मग़रिब का अव्वल और आख़िर समय रोज़ा इफ़्तार करने का समय है।

मसला 94. नमाज़े इशा का अव्वल समय जब आसमान से सुर्ख़ी ख़त्म हो जाए और आख़िर समय जब एक तिहाई रात गुज़र जाए।

1. सहीह अत्तर्गीब वत्तर्हीब, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 398

Www.IslamicBooks.Website

मसला 95. नमाज़े फ़ज्र का अव्वल समय सहरी ख़त्म होने तक और आख़िर समय जब (सूर्य उदय से पहले) रोशनी फैल जाए।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَمَّنِيْ جِبْرَئِيْلُ عِنْدَ الْبَيْتِ مَرَّتَيْنِ فَصَلَّى بِيَ الظُّهْرَ حِيْنَ زَالَتِ الشَّمْسُ وَكَانَ قَدْرَ الشِّرَاكِ وَصَلَّى بِيَ الْعَصْرَ حِيْنَ كَانَ ظِلُّهُ مِثْلَهُ وَصَلَّى بِيَ الْمَغْرِبَ حِيْنَ أَفْطَرَ الصَّائِمُ وَصَلَّى بِيَ الْعِشَآءَ حِيْنَ غَابَ الشَّفَقُ وَصَلَّى بِيَ الْفَجْرَ حِيْنَ حَرُمَ الطَّعَامُ وَالشَّرَابُ عَلَى الصَّائِمِ فَلَمَّا كَانَ الْغَدُ صَلَّى بِيَ الظُّهْرَ حِيْنَ كَانَ ظِلُّهُ مِثْلَهُ ، وَصَلَّى بِيَ الْعَصْرَ حِيْنَ كَانَ ظِلُّهُ مِثْلَيْهِ وَصَلَّى بِيَ الْمَغْرِبَ حِيْنَ أَفْطَرَ الصَّائِمُ وَصَلَّى بِيَ الْعِشَآءَ إِلَى ثُلُثِ اللَّيْلِ وَصَلَّى بِيَ الْفَجْرَ فَاَسْفَرَ ثُمَّ الْتَفَتَ إِلَيَّ فَقَالَ : يَا مُحَمَّدُ هٰذَا وَقْتُ الْأَنْبِيَاءِ مِنْ قَبْلِكَ وَالْوَقْتُ مَا بَيْنَ هٰذَيْنِ الْوَقْتَيْنِ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (١) (صحيح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जिबरील अलैहि० ने मुझे दो बार बैतुल्लाह शरीफ़ के पास नमाज़ पढ़ाई (पहली बार) नमाज़े ज़ोहर उस समय पढ़ाई जब सूरज ढल गया और साया जूती के तसमे (लगभग 2 इंच) के बराबर था। नमाज़े अस्र उस समय पढ़ाई जब हर चीज़ का साया उसके बराबर हो गया और नमाज़े मग़रिब रोज़ा इफ़्तार करने के समय पढ़ाई। नमाज़े इशा उस समय पढ़ाई जब आसमान से सुर्ख़ी ख़त्म हो गई। नमाज़े फ़ज्र उस समय पढ़ाई जब रोज़ेदार खाना पीना तर्क करता है। दूसरे दिन जिबरील अलैहि० ने फिर नमाज़ पढ़ाई और नमाज़े ज़ोहर उस समय पढ़ाई जब हर चीज़ का साया उसके बराबर हो गया। नमाज़े अस्र उस समय पढ़ाई जब हर चीज़ का साया उससे दो गुना हो गया। नमाज़े मग़रिब इफ़्तार के समय और नमाज़े इशा तिहाई रात गुज़रने पर पढ़ाई। नमाज़े फ़ज्र रोशनी में पढ़ाई। फिर जिबरील अलैहि० मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़रमाया "ऐ मुहम्मद सल्ल०! यह समय पहले अंबिया अलैहिमुस्सलाम का है और (आप सल्ल० की) नमाज़ इन समयों के बीच है।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[1]

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 377

Www.IslamicBooks.Website

स्पष्टीकरण : कुछ दूसरी सहीह हदीसों के अनुसार नमाज़े अस्र का आख़िरी समय सूरज अस्त होने तक, नमाज़े मग़रिब का आख़िरी समय मग़रिबी उफ़क़ की सुर्ख़ी ग़ायब होने तक (अर्थात् इफ़्तार से लगभग चालीस मिनट बाद तक) नमाज़े इशा का आख़िरी समय आधी रात तक और नमाज़े फ़ज्र का आख़िरी समय सूरज उदय होने तक है।

मसला 96. रसूले अकरम सल्ल० तमाम नमाज़ें अव्वल समय में अदा फ़रमाया करते थे।

عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ سَأَلْنَا جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ صَلَاةِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ : كَانَ يُصَلِّي الظُّهْرَ بِالْهَاجِرَةِ وَالْعَصْرَ وَالشَّمْسُ نَقِيَّةٌ وَالْمَغْرِبَ إِذَا وَجَبَتْ وَالْعِشَاءَ أَحْيَانًا وَ أَحْيَانًا إِذَا رَآهُمُ اجْتَمَعُوْا عَجَّلَ وَ إِذَا رَآهُمْ أَبْطَئُوْا أَخَّرَ ، وَالصُّبْحَ كَانَ النَّبِيُّ يُصَلِّيْهَا بِغَلَسٍ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत अली रज़ि० कहते हैं हमने जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० से रसूलुल्लाह सल्ल० की नमाज़ों के समय मालूम किए, तो उन्होंने कहा "रसूले अकरम सल्ल० ज़ोहर की नमाज़ सूरज ढलते ही पढ़ लेते। अस्र की नमाज़ जब सूरज साफ़ और रोशन होता (अर्थात् उसमें ज़रदी की मिलावट न होती) मग़रिब की नमाज़ जब सूरज डूब जाता और इशा की नमाज़ कभी जल्दी कभी देर से पढ़ते जब आप देखते कि लोग जल्दी जमा हो गए हैं, तो जल्दी पढ़ लेते। जब देखते कि अभी कम हैं, तो देर से पढ़ते और नमाज़े फ़ज्र अंधेरे में ही पढ़ लेते।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 97. तमाम नमाज़ें अव्वल समय में पढ़नी बेहतर हैं, लेकिन इशा की नमाज़ देर से पढ़ना बेहतर है।

عَنْ أُمِّ فَرْوَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَفْضَلُ الْأَعْمَالِ الصَّلَاةُ فِيْ أَوَّلِ وَقْتِهَا . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالْحَاكِمُ (٢)

हज़रत उम्मे फ़रवा रज़ि० कहती हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया

1. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 378

Www.IslamicBooks.Website

"बेहतरीन अमल नमाज़ को अव्वल समय में अदा करना है।" इसे अबू दाऊद और हाकिम ने रिवायत किया है।[1]

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : اَعْتَمَ النَّبِيُّ ﷺ ذَاتَ لَيْلَةٍ بِالْعِشَاءِ حَتَّى ذَهَبَتْ عَامَّةُ اللَّيْلِ وَ حَتَّى نَامَ أَهْلُ الْمَسْجِدِ ثُمَّ خَرَجَ فَصَلَّى وَقَالَ: إِنَّهُ لَوَقْتُهَا لَوْلَا أَنْ أَشُقَّ عَلَى أُمَّتِي رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٣)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि एक रात नबी अकरम सल्ल० ने इशा की नमाज़ में इतनी देर की कि रात का अधिकांश समय गुज़र गया और मस्जिद में मौजूद लोग सोने लगे फिर आप सल्ल० निकले नमाज़ पढ़ाई और फ़रमाया "अगर मुझे उम्मत की तकलीफ़ का एहसास न होता, तो नमाज़े इशा का यही समय मुक़र्रर करता।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 98. सूरज उदय, सूरज ढलने और सूर्य अस्त के समय कोई नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए।

عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ ثَلَاثُ سَاعَاتٍ نَهَانَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَنْ نُصَلِّيَ فِيْهِنَّ وَأَنْ نَقْبُرَ فِيْهِنَّ مَوْتَانَا حِيْنَ تَطْلُعُ الشَّمْسُ بَازِغَةً حَتَّى تَرْتَفِعَ وَحِيْنَ يَقُوْمُ قَائِمُ الظَّهِيْرَةِ حَتَّى تَمِيْلَ وَحِيْنَ تَضِيْفُ لِلْغُرُوْبِ حَتَّى تَغْرُبَ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَمُسْلِمٌ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ (١) (صحيح)

हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने हमें तीन समयों में नमाज़ पढ़ने और मय्यित दफ़न करने से मना फ़रमाया है। पहला जब सूरज उदय हो रहा हो यहां तक कि बुलन्द हो जाए, दूसरा ठीक दोपहर के समय यहां तक कि सूरज ढल जाए और तीसरा जब सूरज अस्त हो रहा हो यहां तक कि पूरी तरह डूब जाए। इसे अहमद, मुस्लिम, अबू दाऊद, नसाई, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[3]

---

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 411
2. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम लिलअलबानी, हदीस 224
3. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 822

Www.IslamicBooks.Website

मसला 99. बैतुल्लाह शरीफ़ में दिन या रात के किसी भी समय तवाफ़ करना और नमाज़ पढ़ना जाइज़ है।

عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ : يَا بَنِيْ عَبْدِ مَنَافٍ لَا تَمْنَعُوْا أَحَدًا طَافَ بِهٰذَا الْبَيْتِ وَصَلّٰى أَيَّةَ سَاعَةٍ شَاءَ مِنْ لَيْلٍ أَوْ نَهَارٍ . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ (صحيح)

हज़रत जुबैर बिन मुतअम रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने बनू अब्दे मनाफ़ को हुक्म दिया कि "किसी को बैतुल्लाह का तवाफ़ करने और नमाज़ पढ़ने से मना न करो। चाहे दिन या रात का कोई सा समय हो।" इसे अबू दाऊद, नसाई और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 100. जुमा के दिन सूरज ढलने से पहले, सूरज ढलने के समय और सूरज ढलने के बाद सभी समयों में नमाज़ पढ़नी जाइज़ है।

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سِيْدَانَ السُّلَمِيِّ قَالَ : شَهِدْتُ الْجُمُعَةَ مَعَ أَبِيْ بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَكَانَتْ خُطْبَتُهُ وَصَلَاتُهُ قَبْلَ نِصْفِ النَّهَارِ ثُمَّ شَهِدْتُهَا مَعَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَكَانَتْ صَلَاتُهُ وَخُطْبَتُهُ إِلَى أَنْ أَقُوْلَ إِنْتَصَفَ النَّهَارُ ثُمَّ شَهِدْتُهَا مَعَ عُثْمَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَكَانَتْ صَلَاتُهُ وَخُطْبَتُهُ إِلَى أَنْ أَقُوْلَ زَالَ النَّهَارُ فَمَا رَأَيْتُ أَحَدًا عَابَ ذَالِكَ وَلَا أَنْكَرَهُ رَوَاهُ الدَّارَ قُطْنِيُّ (١) (حسن)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सैदान सुलमी रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत अबूबक्र रज़ि० के ख़ुत्बे में हाज़िर हुआ, उनका ख़ुत्बा और नमाज़ निस्फ़ुन्नहार (दोपहर) से पहले होती थी फिर हज़रत उमर रज़ि० के ख़ुत्बे में हाज़िर हुआ, उनका ख़ुत्बा और नमाज़ निस्फ़ुन्नहार (दोपहर) के समय होती थी फिर हज़रत उसमान रज़ि० के ख़ुत्बे में हाज़िर हुआ, उनका ख़ुत्बा और नमाज़ सूरज ढलने के समय होती थी। मैंने किसी भी सहाबी को उन लोगों के काम पर आपत्ति या विरोध करते नहीं देखा। इसे दारे क़ुतनी ने रिवायत किया है।[2]

1. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 688
2. 2 / 17

Www.IslamicBooks.Website

عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كُنَّا نُصَلِّيْ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ الْجُمُعَةَ ثُمَّ نَرْجِعُ فَنُرِيْحُ نَوَاضِحَنَا ، قُلْتُ أَيَّةُ سَاعَةٍ ؟ قَالَ : زَوَالُ الشَّمْسِ . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ(٢)
(صحيح)

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि हम नबी अकरम सल्ल० के साथ जुमा अदा करते फिर वापस आकर कुएं से पानी निकालने वाले ऊंटों को आराम के लिए छोड़ते। रावी ने पूछा "वह कौन सा समय होता?" हज़रत जाबिर रज़ि० ने कहा "सूरज ढलने का।" इसे नसाई ने रिवायत किया है।[1]

1. सहीह सुनन नसाई, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1317

Www.IslamicBooks.Website

अज़ान और इक़ामत के मसाइल

मसला 101. अज़ान से पहले दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत से साबित नहीं।

मसला 102. तरजीअ़ी अज़ान (दोहरी अज़ान) के साथ दोहरी इक़ामत कहना मसनून है।

मसला 103. ग़ैर तरजीअ़ी (इकहरी) अज़ान के साथ इकहरी इक़ामत कहना मसनून है।

मसला 104. ग़ैर तरजीअ़ी (इकहरी) अज़ान के साथ दोहरी इक़ामत कहना ग़ैर मसनून है।

عَنْ أَبِيْ مَحْذُوْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : أَلْقَى عَلَيَّ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اَلتَّأْذِيْنَ هُوَ بِنَفْسِهِ فَقَالَ ، قُلْ : اَللهُ أَكْبَرُ ، اَللهُ أَكْبَرُ ، اَللهُ أَكْبَرُ ، اَللهُ أَكْبَرُ ، أَشْهَدُ أَنْ لاَّ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ ، أَشْهَدُ أَنْ لاَّ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ ، أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ ، أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ ، ثُمَّ تَعُوْدُ فَتَقُوْلُ أَشْهَدُ أَنْ لاَّ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ ، أَشْهَدُ أَنْ لاَّ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ ، أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ ، أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ ، حَيَّ عَلَى الصَّلاَةِ ، حَيَّ عَلَى الصَّلاَةِ ، حَيَّ عَلَى الْفَلاَحِ ، حَيَّ عَلَى الْفَلاَحِ ، اَللهُ أَكْبَرُ ، اَللهُ أَكْبَرُ ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ (صحيح) . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (١)

हज़रत अबू महज़ूरा रज़ि० कहते हैं स्वयं रसूल सल्ल० ने मुझे अज़ान सिखाई। फ़रमाया "अबू महज़ूरा! कह अल्लाहु अकबर चार बार, अशहदुअल्ला इला-ह इल्लल्लाहु दो बार अशहदु अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाहि दो बार, फिर दो बार कह अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु दो बार, अशहदु अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाहि दो बार, ह्य्य-अ-लस्सलाति दो बार, हय्य-अ-लल फ़लाहि दो बार, अल्लाहु अकबर दो बार, ला इला-ह इल्लल्लाहु एक बार।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[1]

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 475

Www.IslamicBooks.Website

स्पष्टीकरण : उपरोक्त कलिमात दोहरी अज़ान के हैं। जो 19 बनते हैं। इकहरी ज़बान में अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु और अशहदु अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाहि दोबार नहीं है अतः इकहरी अज़ान में 15 कलिमात हैं।

عَنْ أَبِي مَحْذُوْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ عَلَّمَهُ الْأَذَانَ تِسْعَ عَشْرَةَ كَلِمَةً وَالْإِقَامَةَ سَبْعَ عَشْرَةَ كَلِمَةً . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ (١) (صحيح)

हज़रत अबू महज़ूरा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने उन्हें अज़ान सिखाई जिसमें उन्नीस कलिमात थे और इक़ामत सिखाई जिसमें सतरा कलिमात थे। इसे अहमद, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसाई, दारमी और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

स्पष्टीकरण : दोहरी अज़ान के साथ रसूलुल्लाह सल्ल० ने दोहरी इक़ामत सिखाई जिसके सतरह कलिमात, जो ये हैं : अल्लाहु अकबर चार बार, अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु दो बार, अशहदु अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाहि दो बार, हय्य-अ-लस्सलाति दो बार, हय्य-अ-लल फ़लाहि दो बार, क़दक़ामतिस्सलाति दो बार, अल्लाहु अकबर दो बार, अल्लाहु अकबर एक बार।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : كَانَ الْأَذَانُ عَلَى عَهْدِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ مَرَّتَيْنِ مَرَّتَيْنِ وَالْإِقَامَةُ مَرَّةً مَرَّةً غَيْرَ أَنَّهُ كَانَ يَقُوْلُ قَدْ قَامَتِ الصَّلَاةُ ، قَدْ قَامَتِ الصَّلَاةُ رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ (٢) (حسن)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० के ज़माना मुबारक में अज़ान के कलिमे दोहरे होते थे। इक़ामत में क़दक़ामतिस्सलाति के कलिमात के अलावा बाक़ी कलिमा इकहरे होते थे। इसे अबू दाऊद, नसाई और दारमी ने रिवायत किया है।[2]

---

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 474
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 482

Www.IslamicBooks.Website

स्पष्टीकरण : इकहरी इक़ामत के कलिमात ग्यारह हैं, जो ये हैं : अल्लाहु अकबर दो बार, अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु एक बार, अशहदु अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाहि एक बार, हय्य-अ-लस्सलाति एक बार, हय्य-अ-लल फ़लाहि एक बार, क़दक़ामतिस्सलाति दो बार, अल्लाहु अकबर दो बार और ला इला-ह इल्लल्लाहु एक बार।

मसला 105. अज़ान का जवाब देना मसनून है।

मसला 106. अज़ान के जवाब का मसनून तरीक़ा यह है।

عَنْ أَبِيْ سَعِيْدِ نِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا سَمِعْتُمُ النِّدَآءَ فَقُوْلُوْا مِثْلَ مَا يَقُوْلُ الْمُؤَذِّنُ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जब तुम अज़ान सुनो, तो जो कलिमात मुअज़्ज़िन कहे वही तुम भी कहो।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فِيْ فَضْلِ الْقَوْلِ كَمَا يَقُوْلُ الْمُؤَذِّنُ كَلِمَةً سِوَى الْحَيْعَلَتَيْنِ فَيَقُوْلُ لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत उमर रज़ि० से अज़ान का जवाब देने की श्रेष्ठता के बारे में रिवायत है कि हर कलिमे का जवाब वही कलिमा है सिवाए "हय्य-अ-लस्सलाति" और "हय्य-अ-लल फ़लाहि" के, इनके जवाब में "ला हव-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि" कहना चाहिए। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 107. अज़ान का जवाब देने वाले के लिए जन्नत की ख़ुशख़बरी है।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ كُنَّا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَامَ بِلاَلٌ يُنَادِيْ فَلَمَّا سَكَتَ قَالَ : رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَنْ قَالَ مِثْلَ هَذَا يَقِيْنًا دَخَلَ الْجَنَّةَ . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ (٢) (حسن)

1. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 215
2. बुलूगुल मराम, किताबुस्सलात, बाब अज़ान।

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं हम रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर थे। हज़रत बिलाल रज़ि० ने अज़ान दी, रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जिसने पूरे यक़ीन से अज़ान का जवाब दिया, वह जन्नत में दाख़िल होगा।" इसे नसाई ने रिवायत किया है।[1]

मसला 108. फ़ज्र की अज़ान में "अस्सलातु ख़ैरुम मिनन्नौम" के शब्द कहना मसनून हैं।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : مِنَ السُّنَّةِ إِذَا قَالَ الْمُؤَذِّنُ فِي الْفَجْرِ حَيَّ عَلَى الْفَلاَحِ قَالَ الصَّلاَةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ . رَوَاهُ ابْنُ خُزَيْمَةَ (٣) (صحيح)

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि फ़ज्र की अज़ान में मुअज़्ज़िन का "हय्य-अ-लल फ़लाहि" के बाद "अस्सलातु ख़ैरुम मिनन्नौम" कहना सुन्नत है। इसे इब्ने खुज़ैमा ने रिवायत किया है।[2]

मसला 109. अज़ान के बाद निम्न दुआएं मांगना मसनून है।

(١) عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِيْ وَقَّاصٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَنْ قَالَ حِيْنَ يَسْمَعُ الْمُؤَذِّنَ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ رَضِيْتُ بِاللهِ رَبًّا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُوْلاً وَبِالْإِسْلاَمِ دِيْنًا غُفِرَلَهُ ذَنْبُهُ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत साअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जिसने अज़ान सुनकर ये कलिमात कहे "मैं गवाही देता हूं अल्लाह तआला के सिवा कोई उपास्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है। मुहम्मद सल्ल० उसके बन्दे और रसूल हैं। अल्लाह तआला के पालनहार होने पर, मुहम्मद सल्ल० के रसूल होने पर और इस्लाम के दीन होने पर मैं राज़ी हूं।" उसके गुनाह बख़्श दिए जाते हैं।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[3]

---

1. सहीह सुनन नसाई, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 650
2. सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा लिल दक्तूर मुहम्मद मुस्तफ़ा आज़मी, पहला भाग, हदीस 386
3. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 200

Www.IslamicBooks.Website

(٢) عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ مَنْ قَالَ حِيْنَ يَسْمَعُ النِّدَآءَ اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّآمَّةِ وَالصَّلَاةِ الْقَآئِمَةِ آتِ مُحَمَّدَ نِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَ نِ الَّذِيْ وَعَدْتَّهُ حَلَّتْ لَهُ شَفَاعَتِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٢)

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जिस व्यक्ति ने अज़ान सुनकर ये कलिमात कहे "या अल्लाह! उस (तौहीद की) सम्पूर्ण दावत और क़ायम होने वाली नमाज़ के पालनहार, मुहम्मद सल्ल० को वसीला बुज़ुर्गी और मक़ामे महमूद अता फ़रमा, जिसका तूने उनसे वायदा फ़रमाया है।" तो क़यामत के दिन उनकी सिफ़ारिश करना मेरा ज़िम्मा होगा।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

स्पष्टीकरण : "वसीला" जन्नत में उच्चतम दर्जे का नाम है और मक़ामे महमूद, मक़ामे शफ़ाअत है।

(٣) عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ إِذَا سَمِعْتُمُ الْمُؤَذِّنَ فَقُوْلُوْا مِثْلَ مَا يَقُوْلُ ثُمَّ صَلُّوْا عَلَيَّ فَإِنَّهُ مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ صَلَاةً صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ عَشْرًا ثُمَّ سَلُوا اللّٰهَ لِيَ الْوَسِيْلَةَ فَإِنَّهَا مَنْزِلَةٌ فِي الْجَنَّةِ لَا تَنْبَغِيْ إِلَّا لِعَبْدٍ مِّنْ عِبَادِ اللّٰهِ وَارْجُوْا أَنْ أَكُوْنَ أَنَاهُوَ فَمَنْ سَأَلَ اللّٰهَ لِيَ الْوَسِيْلَةَ حَلَّتْ عَلَيْهِ الشَّفَاعَةُ رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٣)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० कहते हैं, मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है "जब मुअज़्ज़िन की अज़ान सुनो तो कहो जो मुअज़्ज़िन कहता है फिर मुझ पर दुरूद पढ़ो क्योंकि मुझ पर दुरूद पढ़ने वाले पर अल्लाह तआला दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। उसके बाद अल्लाह तआला से मेरे लिए वसीला मांगो। वसीला जन्नत में एक मक़ाम है। जो जन्नतियों में से किसी एक को दिया जाएगा। मुझे उम्मीद है कि वह जन्नती मैं ही हूंगा। अतः जो आदमी मेरे लिए अल्लाह तआला से वसीला की दुआ करेगा उसके लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब हो जाएगी।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

1. मुख़्तसर बुख़ारी लिज़्ज़ुबैदी, हदीस 377
2. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 198

Www.IslamicBooks.Website

मसला 110. अज़ान के बाद नमाज़ अदा किए बिना बिला किसी मज़बूरी मस्जिद से बाहर निकलना मना है।

عَنْ أَبِي الشَّعْثَاءِ قَالَ خَرَجَ رَجُلٌ مِّنَ الْمَسْجِدِ بَعْدَ مَا نُوْدِيَ بِالصَّلَاةِ فَقَالَ أَبُوْهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَقَدْ عَصَى اَبَا الْقَاسِمِ ﷺ رَوَاهُ النَّسَائِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत अबू शाअसा रज़ि० कहते हैं एक आदमी अज़ान के बाद (नमाज़ पढ़े बिना) मस्जिद से बाहर निकला तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया, इस व्यक्ति ने अबुल क़ासिम सल्ल० की अवज्ञा की। इसे नसाई ने रिवायत किया है।[1]

मसला 110-1. अज़ान ठहर ठहर कर और इक़ामत जल्दी जल्दी कहना मसनून है।

मसला 111. अज़ान और इक़ामत के बीच लगभग इतना समय होना चाहिए कि खाना खाने वाला खाने से फ़ारिग़ हो जाए। (लगभग 15 मिनट)

عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ لِبِلَالٍ : إِذَا أَذَّنْتَ فَتَرَسَّلْ وَإِذَا أَقَمْتَ فَاحْدُرْ وَاجْعَلْ بَيْنَ أَذَانِكَ وَإِقَامَتِكَ قَدْرَ مَا يَفْرُغُ الْآكِلُ مِنْ أَكْلِهِ وَالشَّارِبُ مِنْ شُرْبِهِ وَالْمُعْتَصِرُ إِذَا دَخَلَ لِقَضَاءِ حَاجَتِهِ وَلَا تَقُوْمُوْا حَتَّى تَرَوْنِيْ . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (٢)

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने हज़रत बिलाल रज़ि० से फ़रमाया कि "अज़ान ठहर ठहर कर और इक़ामत जल्दी जल्दी कहा करो, अज़ान और इक़ामत के बीच इतना समय रखो कि खाने पीने वाला, खाने पीने से फ़ारिग़ हो जाए, पेशाब पाखाना वाला अपनी ज़रूरत से फ़ारिग़ हो जाए। और जब तक मुझे (हुजरे से निकल कर मस्जिद आते हुए) देख न लो उस समय तक पंक्ति में खड़े न हो।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[2]

---

1. सहीह सुनन नसाई, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 660
2. अबवाबुस्सलात, बाब माजा फ़ित्तरसिल फ़िल अज़ान।

Www.IslamicBooks.Website

मसला 112. अज़ान और इक़ामत के बीच दुआ रद्द नहीं की जाती।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لاَ يُرَدُّ الدُّعَاءُ بَيْنَ الْأَذَانِ وَالْإِقَامَةِ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ (٣) (صحيح)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "अज़ान और इक़ामत के बीच की दुआ रद्द नहीं की जाती।" इसे अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 113. इक़ामत का जवाब देते हुए "क़द क़ामतिस्सलाति" के जवाब में "अक़ामहल्लाहु व अदा-महा" कहना सहीह हदीस से साबित नहीं।

मसला 114. फ़ज्र की अज़ान में "अस्सलातु ख़ैरुम मिनन्नौमि" के जवाब में "सदक़तु व बररतु" कहना सहीह हदीस से साबित नहीं है।

मसला 115. सहरी और तहज्जुद के लिए अज़ान देना सुन्नत है।

मसला 116. नाबीना आदमी अज़ान दे सकता है।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا إِنَّ بِلاَلاً كَانَ يُؤَذِّنُ بِلَيْلٍ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتَّى يُؤَذِّنَ ابْنُ أُمِّ مَكْتُوْمٍ فَإِنَّهُ لاَ يُؤَذِّنُ حَتَّى يَطْلُعَ الْفَجْرُ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत बिलाल रज़ि० रात को (जगाने के लिए) अज़ान देते थे, अतः रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ि० की अज़ान तक खाते पीते रहा करो, क्योंकि वह फ़ज्र के उदय से पहले अज़ान नहीं देते।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 117. सफ़र में दो आदमी भी हों, तो उन्हें अज़ान कहकर जमाअत से नमाज़ अदा करनी चाहिए।

عَنْ مَالِكِ بْنِ حُوَيْرِثٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : أَتَى رَجُلاَنِ النَّبِيَّ ﷺ يُرِيْدَانِ

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 489
2. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 663

Www.IslamicBooks.Website

السَّفَرَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَنْتُمَا خَرَجْتُمَا فَأَذِّنَا ثُمَّ أَقِيمَا ثُمَّ لِيَؤُمَّكُمَا أَكْبَرُكُمَا . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٢)

हज़रत मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० कहते हैं। (दो आदमी) नबी अकरम सल्ल० की सेवा में हाज़िर हुए जो सफ़र करना चाहते थे। आप सल्ल० ने (उन्हें) नसीहत फ़रमाई कि "जब दोनों सफ़र के लिए निकलो, तो अज़ान और इक़ामत कहो, फिर तुममें से जो बड़ा हो वह इमामत कराए।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 118. अगर अज़ान की श्रेष्ठता मालूम हो जाए तो लोग आपस में क़ुरआ (पर्चियां) डालकर अज़ान कहने लगे।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 129 के अन्तर्गत देखे।

मसला 119. अज़ान के दौरान उंगलियां चूमकर आंखों को लगाना सुन्नत से साबित नहीं।

मसला 120. किसी मुसीबत या आफ़त के मौक़े पर अज़ानें देना सुन्नत से साबित नहीं।

1. मुख़्तसर बुख़ारी लिज़्ज़ुबैदी, हदीस 384

Www.IslamicBooks.Website

सुतरा के मसाइल

मसला 121. नमाज़ी को अपने आगे से गुज़रने वाले लोगों के ख़लल से बचने के लिए सामने कोई चीज़ रख लेनी चाहिए, इसे "सुतरा" कहते हैं।

عَنْ مُوسَى بْنِ طَلْحَةَ عَنْ أَبِيْهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ كُنَّا نُصَلِّيْ وَالدَّوَابُّ تَمُرُّ بَيْنَ أَيْدِيْنَا وَذُكِرَ ذَلِكَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ : مِثْلُ مُؤْخِرَةِ الرَّحْلِ تَكُوْنُ بَيْنَ يَدَيْ أَحَدِكُمْ ، فَلاَ يَضُرُّهُ مَنْ مَرَّ بَيْنَ يَدَيْهِ . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (١) (صحيح)

हज़रत मूसा बिन तलहा रज़ि० अपने बाप से रिवायत करते हैं कि हम लोग नमाज़ पढ़ते और जानवर हमारे सामने से गुज़रते रहते। रसूलुल्लाह सल्ल० से इसका ज़िक्र किया तो आप सल्ल० ने फ़रमाया "अगर तुम्हारे सामने कजावा की लकड़ी के बराबर कोई चीज़ हो तो सामने से गुज़रने वाली कोई चीज़ तुम्हें नुक़्सान नहीं पहुंचाएगी।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

स्पष्टीकरण : ऊंट पर बैठने के लिए बनाई गई लकड़ी की कुर्सी को कजावा कहते हैं।

मसला 122. नमाज़ी के आगे से गुज़रने की चेतावनी।

عَنْ أَبِيْ جُهَيْمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لَوْ يَعْلَمُ الْمَارُّ بَيْنَ يَدَيِ الْمُصَلِّيْ مَاذَا عَلَيْهِ مِنَ الْإِثْمِ لَكَانَ أَنْ يَقِفَ أَرْبَعِيْنَ خَيْرًا لَهُ مِنْ أَنْ يَمُرَّ بَيْنَ يَدَيْهِ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٢)

हज़रत अबू जुहैम रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "नमाज़ी के आगे (और सुतरा से पीछे से गुज़रने वाला अगर यह जान ले कि उस पर कितना गुनाह है, तो वह आगे से गुज़रने की बजाए चालीस (साल या महीने या दिन) इंतिज़ार करना बेहतर समझे।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

---

1. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 768
2. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 234

Www.IslamicBooks.Website

स्पष्टीकरण : रावी भूलने की वजह से स्पष्ट नहीं कर सका कि आप सल्ल० ने चालीस साल कहे या चालीस महीने या चालीस दिन।

मसला 123. सुतरा नमाज़ की जगह से लगभग ढेड़, दो फिट के फ़ासले पर रखना चाहिए।

عَنْ سَهْلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ بَيْنَ مُصَلَّى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَ بَيْنَ الْجِدارِ مَمَرُّ الشَّاةِ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत सहल रज़ि० फ़रमाते हैं नबी अकरम सल्ल० के नमाज़ पढ़ने की जगह और दीवार के बीच एक बकरी के गुज़रने के बराबर फ़ासला था। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 124. सुतरा और नमाज़ी के बीच से गुज़रने वाले को नमाज़ के दौरान ही हाथ से रोक देना चाहिए।

عَنْ أَبِيْ سَعِيْدِ ، الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ إِلَى شَيْءٍ يَسْتُرُهُ مِنَ النَّاسِ فَأَرَادَ أَحَدٌ أَنْ يَجْتَازَ بَيْنَ يَدَيْهِ فَلْيَدْفَعْهُ فَإِنْ أَبَى فَلْيُقَاتِلْهُ فَإِنَّمَا هُوَ الشَّيْطَانُ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٢)

हज़रत अबू सईद रज़ि० कहते हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है जब तुममें से कोई व्यक्ति लोगों से आड़ करके नमाज़ पढ़े फिर कोई आदमी (उस सुतरा के अंदर से) गुज़रना चाहे तो उसे रोक दो अगर न रुके तो ज़बरदस्ती रोक दो क्योंकि वह शैतान है। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[2]

मसला 125. इमाम अपने आगे सुतरा रख ले, तो मुक़तदियों को सुतरा रखने की ज़रूरत नहीं रहती।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا خَرَجَ يَوْمَ الْعِيْدِ يَأْمُرُ بِالْحَرْبَةِ فَتُوْضَعُ بَيْنَ يَدَيْهِ فَيُصَلِّيْ إِلَيْهَا وَالنَّاسُ وَرَاءَهُ وَكَانَ يَفْعَلُ ذٰلِكَ فِي السَّفَرِ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٣)

---

1. किताबुस्सलात।
2. मुख़्तसर बुख़ारी, लिलज़्ज़ुबैदी, हदीस 320

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं रसूले अकरम सल्ल० जब ईद के दिन नमाज़ के लिए घर से निकलते तो अपना नेज़ा साथ ले जाने का हुक्म फ़रमाते जिसे आप सल्ल० के सामने गाड़ दिया जाता। आप सल्ल० उसकी तरफ़ नमाज़ पढ़ते और लोग आप सल्ल० के पीछे होते। सफ़र में आप सल्ल० सुतरा इस्तेमाल फ़रमाया करते थे। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

1. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 278

Www.IslamicBooks.Website

सफ़ (पंक्ति) के मसाइल

मसला 126. तकबीरे तहरीमा कहने से पहले इमाम को पंक्ति सीधी करने और साथ साथ मिलकर खड़े होने की हिदायत करनी चाहिए।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُقْبِلُ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ قَبْلَ أَنْ يُكَبِّرَ فَيَقُوْلُ : تَرَاصُّوْا وَاعْتَدِلُوْا . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० तकबीरे तहरीमा कहने से पहले हमारी तरफ़ चेहरा मुबारक करके खड़े हो जाते और फ़रमाते "जुड़कर और सीधे खड़े हो जाओ।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 127. पंक्ति सीधी किए बिना नमाज़ अधूरी रहती है।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ سَوُّوْا صُفُوْفَكُمْ فَإِنَّ تَسْوِيَةَ الصُّفُوْفِ مِنْ إِقَامَةِ الصَّلَاةِ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ(٢)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "अपनी सफ़ों को सीधा करो, क्योंकि सफ़ों का सही होना नमाज़ की पूर्ति का हिस्सा है।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 128. दीन का ज्ञान रखने वाले और समझदार लोग इमाम के पीछे पहली पंक्ति में खड़े होने चाहिएं।

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لِيَلِيَنِيْ مِنْكُمْ أُولُوا الْأَحْلَامِ وَالنُّهَى ثُمَّ الَّذِيْنَ يَلُوْنَهُمْ ثَلَاثًا . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٣)

हज़रत अब्दुललाह बिन मसऊद रज़ि० कहते हैं रसूले अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "तुममें से समझदार और अक़्लमन्द लोग मेरे क़रीब खड़े होंगे फिर वे लोग जो उनसे ज्ञान और समझ में कम हों, फिर वे जो

1. नैलुल अवतार, किताबुस्सलात।
2. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 248

Www.IslamicBooks.Website

उनसे कम हों, फिर वे जो उनसे कम हों।'' इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 129. पहली पंक्ति की श्रेष्ठता।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ : لَوْ يَعْلَمُ النَّاسُ مَا فِي النِّدَآءِ وَالصَّفِّ الْأَوَّلِ ثُمَّ لَمْ يَجِدُوْا إِلاَّ أَنْ يَّسْتَهِمُوْا عَلَيْهِ لَاسْتَهَمُوْا وَلَوْ يَعْلَمُوْنَ مَا فِي التَّهْجِيْرِ لَاسْتَبَقُوْا إِلَيْهِ وَلَوْ يَعْلَمُوْنَ مَا فِي الْعَتَمَةِ وَالصُّبْحِ لَأَتَوْهُمَا وَلَوْ حَبْوًا . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया ''अगर लोगों को अज़ान और पहली पंक्ति का सवाब मालूम हो जाए, तो उसके लिए ज़रूर क़ुरआ (पर्चियां) डालें और अगर अव्वल समय में नमाज़ पढ़ने की श्रेष्ठता मालूम हो जाए, तो एक दूसरे पर बढ़त ले जाने की कोशिश करें और अगर इशा और फ़ज्र की श्रेष्ठता जान लें, तो उसमें ज़रूर आएं चाहे घुटनों के बल ही आना पड़े।'' इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 130. पहली पंक्ति पूरी करने के बाद दूसरी में खड़ा होना चाहिए।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَتِمُّوا الصَّفَّ الْمُقَدَّمَ ثُمَّ الَّذِيْ يَلِيْهِ فَمَا كَانَ مِنْ نَقْصٍ فَلْيَكُنْ فِي الصَّفِّ الْمُؤَخَّرِ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (٢) (صحيح)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया ''पहले अगली पंक्ति पूरी करो और फिर उसके बाद दूसरी पंक्ति अगर कोई कमी हो तो आख़िरी पंक्ति में होनी चाहिए।'' इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[3]

मसला 131. अगर पहली पंक्ति में जगह बाक़ी हो तो पिछली पंक्ति

---

1. किताबुस्सलात, तसवियतुस्सफ़ूफ़ व इक़ामहा।
2. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 268
3. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 623

Www.IslamicBooks.Website

में अकेले आदमी की नमाज़ नहीं होती।

عَنْ وَابِصَةَ بْنِ مَعْبَدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ رَجُلاً يُصَلِّيْ خَلْفَ الصَّفِّ وَحْدَهُ فَأَمَرَهُ : أَنْ يُعِيْدَ الصَّلاَةَ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُد (٣) (صحيح)

हज़रत वाबिसा बिन माअबद रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक व्यक्ति को पंक्ति के पीछे अकेले नमाज़ पढ़ते देखा, तो आप सल्ल० ने उसे हुक्म दिया कि "नमाज़ दोबारा पढ़ो।" इसे अहमद, तिर्मिज़ी और अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[1]

स्पष्टीकरण : अगर अगली पंक्ति में जगह न हो तो पिछली पंक्ति में अकेले खड़े होना सही है।

मसला 132. पिछली पंक्ति में अकेले खड़े होने की वजह से अगली पंक्ति से आदमी पीछे खींचना सहीह हदीस से साबित नहीं।

मसला 133. सुतूनों के बीच पंक्ति बनाना नापसन्दीदा है।

عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ قُرَّةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ : كُنَّا نُنْهَى أَنْ نَصُفَّ بَيْنَ السَّوَارِيْ عَلَى عَهْدِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَنُطْرَدَ عَنْهَا طَرْدًا . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (١) (حسن)

हज़रत मुआविया बिन क़ुर्रा रज़ि० अपने बाप से रिवायत करते हैं कि हमें अहदे रिसालत में सुतूनों के बीच पंक्ति बनाने से रोका जाता और वहां से हटा दिया जाता। इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[2]

मसला 134. औरत, अकेले पंक्ति में खड़ी हो सकती है।

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ صَلَّيْتُ أَنَا وَ يَتِيْمٌ فِيْ بَيْتِنَا خَلْفَ النَّبِيِّ ﷺ وَأُمِّيْ أُمُّ سُلَيْمٍ خَلْفَنَا . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٢)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि मैं और एक यतीम (बच्चे) ने नबी अकरम सल्ल० के पीछे अपने घर में नमाज़ पढ़ी। मेरी

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 633
2. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 821

Www.IslamicBooks.Website

माँ उम्मे सुलैम रज़ि० हम सबके पीछे थीं। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 135. हुज़ूर अकरम सल्ल० ने पंक्तियां सीधी करने की ताकीद फ़रमाई है।

मसला 136. पंक्ति में कंधे के साथ कंधा और क़दम के साथ क़दम मिलाने चाहिएं।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : أَقِيْمُوْا صُفُوْفَكُمْ فَإِنِّيْ أَرَاكُمْ مِنْ وَّرَآءِ ظَهْرِيْ وَكَانَ أَحَدُنَا يَلْزِقُ مَنْكِبَهُ بِمَنْكِبِ صَاحِبِهِ وَقَدَمَهُ بِقَدَمِهِ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ(٣)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "अपनी पंक्तियां सीधी रखा करो। मैं तुम्हें अपनी पुश्त से देखता हूं।" अतएवं हममें से हर आदमी अपना कंधा साथ वाले नमाज़ी के कंधे से और क़दम उसके क़दम से मिलाकर खड़ा होता। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[2]

1. किताबुल अज़ान।
2. किताबुल अज़ान।

Www.IslamicBooks.Website

जमाअत के मसाइल

मसला 137. नमाज़ जमाअत से अदा करना वाजिब है।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ أَتَى النَّبِيَّ رَجُلٌ أَعْمَى فَقَالَ يَا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ إِنَّهُ لَيْسَ لِيْ قَائِدٌ يَقُوْدُنِيْ إِلَى الْمَسْجِدِ فَسَأَلَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ أَنْ يُرَخِّصَ لَهُ فَيُصَلِّيَ فِيْ بَيْتِهِ فَرَخَّصَ لَهُ فَلَمَّا وَلَّى دَعَاهُ فَقَالَ : هَلْ تَسْمَعُ النِّدَآءَ بِالصَّلَاةِ ؟ قَالَ نَعَمْ ! قَالَ : فَأَجِبْ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं एक नाबीना आदमी नबी अकरम सल्ल० की सेवा में हाज़िर हुआ, कहने लगा "ऐ रसूलुल्लाह सल्ल० मेरे पास कोई आदमी नहीं जो मुझे मस्जिद में लाए।" यह कहकर उसने नमाज़ घर पर पढ़ने की इजाज़त चाही। रसूलुल्लाह सल्ल० ने उसे इजाज़त दे दी, लेकिन जब वह वापस हुआ, तो उसे फिर बुलाया और पूछा "क्या तू अज़ान सुनता है?" उसने अर्ज़ किया "हां या रसूलुल्लाह सल्ल०!" आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया "फिर मस्जिद में आकर नमाज़ पढ़ा कर।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 138. नमाज़े फ़ज्र और नमाज़े इशा की जमाअत में शामिल न होना कपट की अलामत है।

मसला 139. जमाअत से नमाज़ अदा न करने वाले लोगों के घरों को रसूलुल्लाह सल्ल० ने जलाने का इरादा फ़रमाया।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 16-17 के अन्तर्गत देखें...।

मसला 140. जमाअत से नमाज़ अदा करने का सवाब अकेले नमाज़ अदा करने के मुक़ाबले में सत्ताइस (27) दर्जे ज़्यादा है।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ : صَلَاةُ الْجَمَاعَةِ أَفْضَلُ مِنْ صَلَاةِ الْفَذِّ بِسَبْعٍ وَّعِشْرِيْنَ دَرَجَةً . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

1. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 321

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "अकेली नमाज़ के मुक़ाबले में जमाअत से नमाज़ सत्ताइस दर्जे श्रेष्ठ है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 141. औरतें मस्जिद में नमाज़ पढ़ना चाहें, तो उन्हें रोकना नहीं चाहिए, अलबत्ता घर में नमाज़ पढ़ना उनके लिए श्रेष्ठ है।

عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لاَ تَمْنَعُوْا نِسَاءَكُمُ الْمَسَاجِدَ وَبُيُوْتُهُنَّ خَيْرٌ لَّهُنَّ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (صحيح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "औरतों को मस्जिद में जाने से न रोको, अलबत्ता उनके लिए घर में नमाज़ पढ़ना बेहतर है।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

मसला 142. जिस घर में जमाअत कराने वाली महिला मौजूद हो उस घर की औरतों को जमाअत से नमाज़ अदा करने का आयोजन करना चाहिए।

عَنْ أُمِّ وَرَقَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَمَرَهَا اَنْ تَؤُمَّ أَهْلَ دَارِهَا . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (حسن)

हज़रत उम्मे वरक़ा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने उन्हें अपने घर वालों की इमामत का हुक्म दिया था। इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[3]

स्पष्टीकरण : घर वालों से तात्पर्य घर की ख़्वातीन हैं। मर्दों पर मस्जिद में नमाज़ जमाअत से अदा करना वाजिब है।

मसला 143. पहली जमाअत के बाद उसी समय की दूसरी जमाअत उसी मस्जिद में कराना जाइज़ है।

मसला 144. दो आदमियों को भी नमाज़ जमाअत से अदा करनी चाहिए।

---

1. किताबुल मस्जिद, बाब फ़ज़्लुस्सलात इज्माअ।
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 530
3. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 553

Www.IslamicBooks.Website

اللهِ ﷺ بِأَصْحَابِهِ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَنْ يَتَصَدَّقُ عَلَى ذَا فَيُصَلِّيَ مَعَهُ ؟ فَقَامَ رَجُلٌ مِّنَ الْقَوْمِ فَصَلَّى مَعَهُ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ (صحيح)

हज़रत अबू सईद रज़ि० रिवायत करते हैं कि एक आदमी मस्जिद में दाख़िल हुआ उस समय रसूलुल्लाह सल्ल० सहाबा किराम रज़ि० को नमाज़ पढ़ा चुके थे। आपने सहाबा किराम रज़ि० से मालूम फ़रमाया "कौन इस व्यक्ति पर सदक़ा करेगा, और इसके साथ नमाज़ पढ़ेगा?" एक व्यक्ति खड़ा हुआ और उसने आने वाले के साथ मिलकर नमाज़ पढ़ी। इसे अहमद, अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 145. ग़ैर मामूली सर्दी और बारिश जमाअत के वाजिब होने को निरस्त कर देते हैं।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : إِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَأْمُرُ الْمُؤَذِّنَ إِذَا كَانَتْ لَيْلَةٌ ذَاتِ بَرْدٍ وَمَطَرٍ يَقُوْلُ أَلاَ صَلُّوْا فِي الرِّحَالِ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० सर्दी और बारिश की रात मुअज़्ज़िन को हुक्म देते, और मुअज़्ज़िन (रसूलुल्लाह सल्ल० के हुक्म के अनुसार) अज़ान में वृद्धि करता "लोगो! अपने घरों में नमाज़ पढ़ लो।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[2]

मसला 146. भूख और पेशाब पाख़ाना जमाअत के वाजिब होने को निरस्त कर देते हैं।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ : سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ : لاَ صَلاَةَ بِحَضْرَةِ الطَّعَامِ وَلاَ هُوَ يُدَافِعُهُ الْأَخْبَثَانِ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना कि खाने की मौजूदगी और पेशाब पाख़ाना के समय नमाज़ जमाअत से वाजिब नहीं। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[3]

---

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 537
2. सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान।
3. किताबुल मस्जिद, बाब कराहियतुस्सलात बिहज़रतित्तआम।

Www.IslamicBooks.Website

इमामत के मसाइल

मसला 147. सबसे ज़्यादा क़ुरआन जानने वाला, फिर सबसे ज़्यादा सुन्नत का ज्ञान रखने वाला, फिर हिजरत में पहल करने वाला, फिर सबसे ज़्यादा उमर वाला, इमामत का ज़्यादा हक़दार है।

मसला 148. नियुक्त इमाम की इजाज़त के बिना किसी मेहमान को इमामत नहीं करानी चाहिए।

عَنْ أَبِيْ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَؤُمُّ الْقَوْمَ أَقْرَؤُهُمْ لِكِتَابِ اللهِ فَإِنْ كَانُوْا فِي الْقِرَاءَةِ سَوَآءً فَأَعْلَمُهُمْ بِالسُّنَّةِ فَإِنْ كَانُوْا فِي السُّنَّةِ سَوَآءً فَأَقْدَمُهُمْ هِجْرَةً فَإِنْ كَانُوْا فِي الْهِجْرَةِ سَوَآءً فَأَقْدَمُهُمْ سِناً وَلاَ يُؤَمَّنَّ الرَّجُلُ الرَّجُلَ فِي سُلْطَانِهِ وَلاَ يَقْعُدُ فِيْ بَيْتِهِ عَلَى تَكْرِمَتِهِ إِلاَّ بِإِذْنِهِ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَمُسْلِمٌ (١)

हज़रत अबू मसऊद रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "लोगों की इमामत वह व्यक्ति कराए, जो किताबुल्लाह का सबसे बेहतर पढ़ने वाला हो, अगर क़िरअत में लोग बराबर हों, तो सुन्नत का ज़्यादा जानने वाला इमामत कराए। अगर उसमें भी बराबर हों, तो फिर जिसने पहले हिजरत की हो, अगर लोग उसमें भी बराबर हों, तो फिर उम्र में सबसे बड़ा इमामत कराए। इमामत के लिए नियुक्त आदमी की जगह कोई दूसरा आदमी बिना इजाज़त इमामत न कराए। न ही कोई आदमी किसी के घर में बिना इजाज़त उसकी मसनद पर बैठे।" इसे अहमद और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 149. नाबीना आदमी बिना कराहत इमामत कर सकता है।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ اسْتَخْلَفَ ابْنَ أُمِّ مَكْتُوْمٍ يَؤُمُّ النَّاسَ وَهُوَ أَعْمَى . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُوْدَاوُدَ (١) (صحيح)

1. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 316

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने हज़रत इम्मे मक्तूम रज़ि० को (मदीना में) अपना नाइब नियुक्त किया, वे लोगों को नमाज़ पढ़ाया करते थे यद्यपि वे नाबीना थे। इसे अहमद और अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[1]

मसला 150. इमाम का पूरा-पूरा अनुसरण करना वाजिब है।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ : إِنَّمَا جُعِلَ الْإِمَامُ لِيُؤْتَمَّ بِهِ فَلَا يَرْكَعُوْا حَتَّى يَرْكَعَ وَلَا تَرْفَعُوْا حَتَّى يَرْفَعَ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٢)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया " इमाम इसी लिए नियुक्त किया गया है कि उसका पूरा-पूरा अनुसरण किया जाए, अतः जब तक वह रुकूअ में न जाए तुम भी रुकूअ में न जाओ और जब तक वह न उठे तुम भी न उठो।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[2]

मसला 151. मुसाफ़िर मुक़ीम की इमामत करा सकता है।

عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ مَا سَافَرَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِلَّا صَلَّى رَكْعَتَيْنِ حَتَّى يَرْجِعَ وَإِنَّهُ أَقَامَ بِمَكَّةَ زَمَنَ الْفَتْحِ ثَمَانَ عَشْرَةَ لَيْلَةً يُصَلِّيْ بِالنَّاسِ رَكْعَتَيْنِ رَكْعَتَيْنِ إِلَّا الْمَغْرِبَ : ثُمَّ يَقُوْلُ : يَا أَهْلَ مَكَّةَ قُوْمُوْا فَصَلُّوْا رَكْعَتَيْنِ آخِرَتَيْنِ فَإِنَّا قَوْمٌ سَفْرٌ . رَوَاهُ أَحْمَدُ (٣)

हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने सफ़र में, घर वापस आने तक हमेशा नमाज़े क़स्र अदा फ़रमाई। फ़तह मक्का के मौक़े पर हुज़ूर सल्ल० अठारह दिन मक्का में ठहरे रहे और मग़रिब के सिवा लोगों को दो दो रकअतें पढ़ाते रहे (स्वयं सलाम फेरने के बाद) लोगों से फ़रमा देते "ऐ मक्का वालो! उठकर बाक़ी नमाज़ पूरी कर लो हम मुसाफ़िर हैं।" इसे अहमद ने रिवायत किया है।[3]

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 555
2. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलज़ुबैदी, हदीस 412
3. मुसनद अहमद, 4/420

Www.IslamicBooks.Website

मसला 152. अगर सात या आठ साल का बच्चा बाक़ी लोगों की तुलना में ज़्यादा क़ुरआन जानता हो तो इमामत का ज़्यादा हक़दार है।

عَنْ عَمْرِو بْنِ سَلَمَةَ الْجَرْمِيِّ قَالَ : كَانَ يَمُرُّ عَلَيْنَا الرُّكْبَانُ فَنَتَعَلَّمُ مِنْهُمُ الْقُرْآنَ فَأَتَى أَبِي النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ : لِيَؤُمُّكُمْ أَكْثَرُكُمْ قُرْآنًا فَجَاءَ أَبِي فَقَالَ إِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ : لِيَؤُمُّكُمْ أَكْثَرُكُمْ قُرْآنًا فَنَظَرُوْا ، فَكُنْتُ أَكْثَرَهُمْ قُرْآنًا ، فَكُنْتُ أَؤُمُّهُمْ وَ أَنَا ابْنُ ثَمَانَ سِنِيْنَ . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ (١)

हज़रत अम्र बिन सलमा जरमी रज़ि० कहते हैं कि (हमारी बस्ती से) सवार गुज़रा करते और हम उनसे क़ुरआन सीखा करते थे (एक बार) मेरा बाप नबी अकरम सल्ल० की सेवा में हाज़िर हुआ तो आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया "तुममें से जिसे क़ुरआन ज़्यादा आता हो उसे इमामत करवानी चाहिए।" अतएवं मेरा बाप (वापस) आया तो कहने लगा रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया है "इमामत वह कराए जिसे क़ुरआन ज़्यादा याद हो।" अतएवं सब लोगों ने देखा मुझे सबसे ज़्यादा क़ुरआन याद था इसलिए मैं उनकी इमामत करवाता था। उस समय मैं आठ साल का था। इसे नसाई ने रिवायत किया है।[1]

मसला 153. औरत, औरतों की इमामत करा सकती है।

मसला 154. औरत को इमामत कराते समय पहली पंक्ति के अंदर बीच में खड़ा होना चाहिए।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا أَمَّتْهُنَّ فَكَانَتْ بَيْنَهُنَّ فِيْ صَلَاةٍ مَكْتُوْبَةٍ . رَوَاهُ الدَّارَ قُطْنِيُّ (٢) (حسن)

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि वह फ़र्ज़ नमाज़ में औरतों को इमामत कराती थीं और पंक्ति के अंदर ही खड़ी होती थीं। इसे दारे क़ुतनी ने रिवायत किया है।[2]

---

1. सहीह सुनन नसाई, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 761
2. अत्तलख़ीसुल ख़ैर, दूसरा भाग, हदीस 597

Www.IslamicBooks.Website

मसला 155. इमाम को हल्की नमाज़ पढ़ानी चाहिए।

فَأَتَى أَبِي النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ : لِيَؤُمَّكُمْ أَكْثَرُكُمْ قُرْآنًا فَجَاءَ أَبِيْ فَقَالَ إِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ : لِيَؤُمَّكُمْ أَكْثَرُكُمْ قُرْآنًا فَنَظَرُوْا ، فَكُنْتُ أَكْثَرَهُمْ قُرْآنًا ، فَكُنْتُ أَؤُمُّهُمْ وَ أَنَا ابْنُ ثَمَانَ سِنِيْنَ . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "जब कोई इमाम लोगों को नमाज़ पढ़ाए, तो हल्की नमाज़ पढ़ाए क्योंकि नमाज़ियों में कमज़ोर, बीमार और बूढ़े सभी होते हैं, अलबत्ता जब तुममें से कोई अकेला पढ़े तो जितनी चाहे लम्बी पढ़े।" इसे अहमद, बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, नसाई, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

मसला 156. इमाम और मुक़तदियों के बीच अगर दीवार या कोई ऐसी चीज़ मौजूद हो कि मुक़तदी इमाम की नक़ल व हरकत न देख सकें तब भी नमाज़ सही है।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ صَلَّى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فِيْ حُجْرَتِهِ وَالنَّاسُ يَأْتَمُّوْنَ بِهِ مِنْ وَرَاءِ الْحُجْرَةِ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (١) (صحيح)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने अपने (ऐतिकाफ़ वाले) हुजरे में नमाज़ पढ़ाई और लोगों ने हुजरे से बाहर आप सल्ल० के पीछे नमाज़ अदा की। इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

मसला 157. एक आदमी फ़र्ज़ नमाज़ अदा करने के बाद उसी समय की नमाज़ के लिए दूसरे लोगों की इमामत करा सकता है।

मसला 158. उपरोक्त बाला सूरत में इमाम की पहली नमाज़ फ़र्ज़ होगी दूसरी नफ़िल होगी।

मसला 159. इमाम और मुक़तदी की नीयत अलग-अलग होने से

1. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 268
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 996

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़ में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ مُعَاذًا كَانَ يُصَلِّيْ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ الْعِشَاءَ الْآخِرَةَ ثُمَّ يَرْجِعُ إِلَى قَوْمِهِ فَيُصَلِّيْ بِهِمْ تِلْكَ الصَّلَاةَ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٢)

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत मुआज़ रज़ि० इशा की नमाज़ नबी अकरम सल्ल० के साथ अदा फ़रमाते फिर अपनी क़ौम में जाकर उन्हें वही नमाज़ पढ़ाते थे। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

عَنْ مِحْجَنِ بْنِ الْأَدْرَعِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ فَحَضَرَتِ الصَّلَاةُ فَصَلَّى وَلَمْ أُصَلِّ فَقَالَ لِيْ : أَلَا صَلَّيْتَ ؟ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ إِنِّيْ قَدْ صَلَّيْتُ فِي الرَّحْلِ ثُمَّ أَتَيْتُكَ . قَالَ : فَإِذَا جِئْتَ فَصَلِّ مَعَهُمْ وَاجْعَلْهَا نَافِلَةً . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَ النَّسَائِيُّ (٣) (صحيح)

हज़रत मेहजन बिन अदरअ रज़ि० कहते हैं मैं नबी अकरम सल्ल० के पास मस्जिद में हाज़िर हुआ। नमाज़ का समय हो गया, तो आप सल्ल० ने नमाज़ पढ़ाई और मैं बैठा रहा आप सल्ल० ने मुझसे मालूम किया "क्या तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी?" मैंने अर्ज़ किया "या रसूलुल्लाह सल्ल०! आपकी सेवा में हाज़िर होने से पहले मैंने घर में नमाज़ पढ़ ली थी।" आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया "जब ऐसा मौक़ा पाओ, तो जमाअत के साथ भी नमाज़ पढ़ लो और दूसरी नमाज़ को नफ़िल बना लो।" इसे अहमद और नसाई ने रिवायत किया है।[2]

मसला 160. औरत, अकेली पंक्ति में खड़ी हो सकती है।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : صَلَّيْتُ أَنَا وَ يَتِيْمٌ خَلْفَ النَّبِيِّ ﷺ وَ أُمِّيْ أُمُّ سُلَيْمٍ خَلْفَنَا رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि मैं और एक यतीम लड़के ने

1. नैलुल अवतार, किताबुस्सलात।
2. सहीह सुनन नसाई, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 826

Www.IslamicBooks.Website

नबी अकरम सल्ल० के पीछे नमाज़ पढ़ी, मेरी माँ उम्मे सुलैम रज़ि० (अकेली) हमारे पीछे थीं। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 161. जिस व्यक्ति ने इमामत की नीयत न की हो, उसकी इक़तदा जाइज़ है।

मसला 162. दो आदमियों की जमाअत में मुक़तदी को इमाम की दायीं ओर खड़ा होना चाहिए।

मसला 163. तीसरा आदमी आए तो दोनों मुक़तदियों को इमाम के पीछे चले जाना चाहिए।

मसला 164. दौराने नमाज़ ज़रूरत से एक दो क़दम दाएं, बाएं या आगे, पीछे होना सही है।

عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَامَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ لِيُصَلِّيَ فَجِئْتُ حَتّٰى قُمْتُ عَنْ يَسَارِهِ فَاخَذَ بِيَدِيْ فَأَدَارَنِيْ حَتّٰى أَقَامَنِيْ عَنْ يَمِيْنِهِ ثُمَّ جَاءَ جَبَّارُ بْنُ صَخْرٍ فَقَامَ عَنْ يَسَارِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ فَاَخَذَ بِيَدَيْنَا جَمِيْعًا فَدَفَعَنَا حَتّٰى أَقَامَنَا خَلْفَهُ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़े हुए, मैं आया और आप सल्ल० की बायीं ओर खड़ा हो गया। आप सल्ल० ने मेरा हाथ पकड़ा और पीछे से फेरकर अपने दायीं ओर खड़ा कर लिया। फिर जाबिर बिन सख़र आया और रसूलुल्लाह सल्ल० की बायीं ओर खड़ा हो गया। रसूलुल्लाह सल्ल० ने हम दोनों को हाथ पकड़ कर पीछे हटा दिया और हम आप सल्ल० के पीछे खड़े हो गए। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 165. जिस इमाम को लोग नापसन्द करें और वह फिर भी इमामत कराए तो उसकी इमामत मक्रूह है।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ ثَلَاثَةٌ لَا تَرْتَفِعُ

---

1. किताबुल अज़ान।
2. मिश्कातुल मसाबीह, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1107

Www.IslamicBooks.Website

صَلاَتُهُمْ فَوْقَ رُؤُوْسِهِمْ شِبْرًا رَجُلٌ أَمَّ قَوْمًا وَهُمْ لَهُ كَارِهُوْنَ وَامْرَأَةٌ بَاتَتْ وَ زَوْجُهَا عَلَيْهَا سَاخِطٌ وَالْعَبْدُ الْآبِقُ . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (١) (حسن)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "तीन आदमियों की नमाज़ उनके सिरों से बालिश्त भर भी ऊंची नहीं जाती। पहला वह जो इमामत कराए जबकि लोग उसे नापसन्द करते हों, दूसरी वह औरत जिसका पति नाराज़ हो लेकिन वह रात भर सोई रहे, तीसरा वह ग़ुलाम जो (मालिक से) भागा हुआ हो।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

1. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 792

Www.IslamicBooks.Website

मुक़तदी के मसाइल

मसला 166. मुक़तदी पर इमाम की पूरी पूरी पैरवी करना वाजिब है।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ صَلَّى بِنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ فَلَمَّا قَضَى الصَّلَاةَ أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ فَقَالَ : أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّيْ إِمَامُكُمْ فَلَا تَسْبِقُوْنِيْ بِالرُّكُوْعِ وَلَا بِالسُّجُوْدِ وَلَا بِالْقِيَامِ وَلَا بِالْإِنْصِرَافِ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ(١)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं एक दिन रसूलुल्लाह सल्ल० ने हमें नमाज़ पढ़ाई जब नमाज़ पूरी हो गई तो चेहरा मुबारक हमारी तरफ़ किया और फ़रमाया "लोगो! मैं तुम्हारा इमाम हूं रुकूअ, सुजूद, क़याम और सलाम फेरने में मुझसे जल्दी न करो।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 167. इमाम सज्दा की हालत में चला जाए तब मुक़तदी को क़ौमे की हालत से सज्दे में जाना चाहिए। इसी तरह बाक़ी नमाज़ में इमाम की पैरवी करना ज़रूरी है।

عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ كُنَّا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ لَا يَحْنِيْ أَحَدٌ مِنَّا ظَهْرَهُ حَتَّى يَرَاهُ قَدْ سَجَدَ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत बराअ रज़ि० कहते हैं हम रसूलुल्लाह सल्ल० के पीछे नमाज़ पढ़ते, तो उस समय तक कोई आदमी अपनी पीठ न झुकाता जब तक रसूलुल्लाह सल्ल० को सज्दे में न देख लेता। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 168. जमाअत हो रही हो तो मुक़तदी इमाम को जिस हालत में पाए उसी हालत में शरीक हो जाए।

---

1. किताबुस्सलात, बाब तहरीम सब्क़ुल इमाम बरुकूअ व सुजूद।
2. किताबुस्सलात, बाब मताबिअतुल इमाम वल अमल बादा।

Www.IslamicBooks.Website

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 170 के अन्तर्गत देखें।

मसला 169. इमाम की पैरवी और इक़तदा न करने पर चेतावनी।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَمَا يَخْشَى أَحَدُكُمْ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ قَبْلَ الْإِمَامِ أَنْ يَجْعَلَ اللهُ رَأْسَهُ رَأْسَ حِمَارٍ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "तुममें से जो व्यक्ति इमाम से पहले अपना सिर उठाता है क्या उसे ख़ौफ़ नहीं आता कि कहीं अल्लाह तआला उसका सिर गधे का न बना दे।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

1. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, ज़िलज़ुबैदी, हदीस 412

Www.IslamicBooks.Website

बाद में शामिल होने वाले नमाज़ी के मसाइल

मसला 170. जमाअत हो रही हो तो बाद में आने वाला नमाज़ी इमाम को जिस हालत में पाए तकबीरे तहरीमा कहकर उसी हालत में शरीक हो जाए।

मसला 171. जमाअत के साथ एक रकअत पा लेने से सारी नमाज़ जमाअत से पढ़ने का सवाब मिल जाता है।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا جِئْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ وَ نَحْنُ سُجُوْدٌ فَاسْجُدُوْا وَ لَا تَعُدُّوْهُ شَيْئًا ، مَنْ أَدْرَكَ رَكْعَةً ، فَقَدْ أَدْرَكَ الصَّلَاةَ .

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (١) (حسن)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जब तुम नमाज़ के लिए आओ तो हम सज्दे में हों तो तुम भी सज्दे में शामिल हो जाओ और उसको रकअत शुमार न करो। जिसने एक रकअत जमाअत के साथ पा ली उसे पूरी जमाअत का सवाब मिल गया।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[1]

मसला 172. जमाअत खड़ी हो तो बाद में आने वाले नमाज़ी को उसमें भाग कर शामिल नहीं होना चाहिए, बल्कि पूरे इत्मीनान और वक़ार से शरीक होना चाहिए।

मसला 173. बाद में शामिल होने वाले नमाज़ी को इमाम के साथ पढ़ी जाने वाली नमाज़ को नमाज़ का पहला और सलाम के बाद अकेले पढ़ी जाने वाली नमाज़ को नमाज़ का पिछला हिस्सा समझना चाहिए।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ : إِذَا أُقِيْمَتِ الصَّلَاةُ فَلَا تَأْتُوْهَا تَسْعَوْنَ وَأْتُوْهَا تَمْشُوْنَ عَلَيْكُمُ السَّكِيْنَةَ فَمَا أَدْرَكْتُمْ فَصَلُّوْا وَمَا فَاتَكُمْ فَأَتِمُّوْا . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 792

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है जब नमाज़ खड़ी हो जाए तो भागते हुए न आओ बल्कि (आम रफ़्तार से) चलकर आओ, तुम पर इत्मीनान से आना वाजिब है, नमाज़ का जो हिस्सा (इमाम के साथ पाओ) वह अदा करो और जो रह जाए उसे (बाद में) पूरा करो।'' इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 174. फ़र्ज़ नमाज़ खड़ी हो जाए तो बाद में आने वाले नमाज़ी को अलग नफ़िल या सुन्नत या फ़र्ज़ नमाज़ शुरू नहीं करनी चाहिए, चाहे पहली रकअत मिलने का यक़ीन ही क्यों न हो।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : إِذَا أُقِيْمَتِ الصَّلَاةُ فَلَا صَلَاةَ إِلَّا الْمَكْتُوْبَةَ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया ''जब फ़र्ज़ नमाज़ की इक़ामत हो जाए, तो सिवाए फ़र्ज़ नमाज़ के कोई दूसरी नमाज़ नहीं होती।'' इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

1. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 350
2. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 263

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़ का तरीक़ा

मसला 175. नीयत दिल के इरादे का नाम है ज़बान से शब्द अदा करना हदीस से साबित नहीं।

मसला 176. पंक्तियां सही करने और इक़ामत कहने के बाद इमाम को "अल्लाहु अकबर" (तकबीरे तहरीमा) कहकर नमाज़ की शुरुआत करनी चाहिए।

मसला 177. तकबीरे तहरीमा के साथ दोनों हाथ कंधों तक उठाने मसनून हैं।

मसला 178. तकबीरे तहरीमा के समय दोनों हाथों से कान छूना या पकड़ना सुन्नत से साबित नहीं।

عَنْ نُعْمَانَ ابْنِ بَشِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُسَوِّيْ صُفُوْفَنَا إِذَا قُمْنَا إِلَى الصَّلَاةِ فَإِذَا اسْتَوَيْنَا كَبَّرَ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ(١) (صحيح)

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० कहते हैं जब हम नमाज़ के लिए खड़े होते, तो रसूलुल्लाह सल्ल० हमारी पंक्तिया सही फ़रमाते, फिर अल्लाहु अकबर कहकर नमाज़ शुरू करते। इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[1]

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ إِذَا قَامَ فِي الصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ تَكُوْنَا حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ(٢)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० को देखा जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो अपने दोनों हाथ ऊपर उठाते यहां तक कि कंधों तक पहुंच जाते। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

---

1. सहीह सुनन इब्ने दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 619
2. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 217

Www.IslamicBooks.Website

स्पष्टीकरण : हाथ उठाते समय हथेलियों का रुख़ क़िबले की तरफ़ होना चाहिए।

मसला 179. क़याम में हाथ खुले रखना सुन्नत से साबित नहीं।

मसला 180. हाथ बांधने में दायां हाथ बाएं के ऊपर आना चाहिए।

मसला 181. हाथ सीने के ऊपर बांधने मसनून हैं।

عَنْ طَاؤُسٍ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَضَعُ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى يَدِهِ الْيُسْرَى ثُمَّ يَشُدُّ بَيْنَهُمَا عَلَى صَدْرِهِ وَ هُوَ فِي الصَّلَاةِ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (١) (صحيح)

हज़रत ताऊस रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० नमाज़ में दायां हाथ बाएं के ऊपर रखकर मज़बूती से सीने पर बांधते। इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[1]

स्पष्टीकरण : तकबीरे तहरीमा के बाद रुकूअ में जाने से पहले हाथ बांधकर खड़े होने को क़याम कहते हैं।

मसला 182. तकबीरे तहरीमा के बाद सना, तअव्वुज़ और बिस्मिल्लाह पढ़नी चाहिए।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا كَبَّرَ فِي الصَّلَاةِ سَكَتَ هُنَيَّةً قَبْلَ أَنْ يَقْرَأَ فَقُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي أَرَأَيْتَ سَكُوْتَكَ بَيْنَ التَّكْبِيْرِ وَالْقِرَاءَةِ مَا تَقُوْلُ ، قَالَ : أَقُوْلُ اَللّٰهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ اَللّٰهُمَّ نَقِّنِي مِنْ خَطَايَايَ كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ اَللّٰهُمَّ اغْسِلْنِي مِنْ خَطَايَايَ بِالثَّلْجِ وَالْمَاءِ وَالْبَرَدِ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ (٢)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० तकबीरे तहरीमा के बाद क़िरअत शुरू करने से पहले थोड़ी देर ख़ामोश रहते। मैंने अर्ज़ किया "या रसूलुल्लाह सल्ल० मेरे मां बाप आप सल्ल० पर क़ुरबान, इस ख़ामोशी में आप क्या पढ़ते हैं?" आप सल्ल० ने फ़रमाया, मैं यह दुआ पढ़ता हूं "या अल्लाह! मेरे और मेरे गुनाहों के बीच पूरब व पश्चिम

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 687

Www.IslamicBooks.Website

की दूरी फ़रमा दे। ऐ अल्लाह! मुझे मेरे गुनाहों से सफ़ेद कपड़े की तरह पाक व साफ़ कर दे। ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह बर्फ़, पानी और ओलों से धो दे।" इसे अहमद, बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, नसाई और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا اسْتَفْتَحَ الصَّلاَةَ قَالَ : سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلاَ إِلَهَ غَيْرُكَ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (١) (صحيح)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं रसूलुल्लाह सल्ल० जब नमाज़ शुरू करते तो ये कलिमात पढ़ते, "ऐ अल्लाह! तू अपनी हम्द के साथ पाक है तेरा नमा बरकत वाला है, तेरी शान बुलन्द है, तेरे सिवा कोई उपास्य नहीं।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

मसला 183. बिस्मिल्लाह के बाद सूरह फ़ातिहा पढ़नी चाहिए।

मसला 184. सूरह फ़ातिहा हर नमाज़ (धीमी हो या तेज़ अवाज़, फर्ज़ हों या नवाफ़िल) की हर रकअत में पढ़नी ज़रूरी है।

मसला 185. रुकूअ में शामिल होने वाले नमाज़ी को अपनी रकअत दोबारा अदा करनी चाहिए।

मसला 186. इमाम, मुक़तदी और अकेले सबको सूरह फ़ातिहा पढ़नी चाहिए।

١- عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَنْ صَلَّى صَلاَةً لَمْ يَقْرَأْ فِيْهَا بِأُمِّ الْقُرْآنِ فَهِيَ خِدَاجٌ ثَلاَثًا غَيْرُ تَمَامٍ . فَقِيْلَ لِأَبِيْ هُرَيْرَةَ إِنَّا نَكُوْنُ وَرَاءَ الْإِمَامِ ، فَقَالَ إِقْرَأْ بِهَا فِيْ نَفْسِكَ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जिसने नमाज़ में सूरह फ़ातिहा न पढ़ी उसकी नमाज़ नाक़िस

1. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 349
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 702

Www.IslamicBooks.Website

है।'' आप सल्ल० ने यह बात तीन बार फ़रमाई (और फिर फ़रमाया) नमाज़ अधूरी रहती है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से अर्ज़ किया गया, हम इमाम के पीछे होते हैं। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया ''उस समय दिल में पढ़ लिया करो।'' इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

٢- عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ عَلَّمَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلاَةِ فَلْيَؤُمَّكُمْ أَحَدُكُمْ وَإِذَا قَرَأَ الْإِمَامُ فَأَنْصِتُوْا . رَوَاهُ أَحْمَدُ (٣)

हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने हमें यह शिक्षा दी है कि जब तुम नमाज़ के लिए खड़े हो तुममें से एक इमामत कराए और जब इमाम (सूरह फ़ातिहा के बाद) क़ुरआन पढ़े तो ख़ामोश रहो। इसे अहमद ने रिवायत किया है।[2]

٣- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ أَمَرَنِي رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَنْ أُنَادِيَ أَنَّهُ لاَ صَلاَةَ إِلاَّ بِقِرَاءَةِ فَاتِحَةِ الْكِتَابِ فَمَا زَادَ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُوْدَاوُدَ (١) (صحيح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि मुझे रसूलुल्लाह सल्ल० ने हुक्म दिया कि इस बात का ऐलान करूं कि सूरह फ़ातिहा पढ़े बिना नमाज़ नहीं होती इससे ज़्यादा जितना कोई चाहे पढ़े। इसे अहमद और अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[3]

मसला 187. इमाम सूरह फ़ातिहा पढ़ ले, तो इमाम समेत तमाम मुक़तदियों को एक साथ आमीन कहनी चाहिए।

मसला 188. बुलन्द आवाज़ से आमीन कहना पिछले गुनाहों की माफ़ी का कारण है।

मसला 189. धीमी क़िरअत में आहिस्ता और तेज आवाज़ की क़िरअत में तेज़ आवाज़ से आमीन कहना मसनून है।

---

1. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 281
2. मुसनद, 6/415
3. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 733

Www.IslamicBooks.Website

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا أَمَّنَ الْإِمَامُ فَأَمِّنُوْا فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ تَأْمِيْنُهُ تَأْمِيْنَ الْمَلَائِكَةِ غُفِرَلَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٢)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जब इमाम आमीन कहे तो तुम भी आमीन कहो, जिसकी आमीन (की आवाज़) फ़रिश्तों की आमीन से समान हो गई उसके पिछले (सग़ीरा) गुनाह बख़्श दिए जाते हैं।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

عَنْ وَائِلِ ابْنِ حُجْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا قَرَأَ وَلَا الضَّالِّيْنَ قَالَ آمِيْنَ وَرَفَعَ بِهَا صَوْتَهُ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (٣) (صحيح)

हज़रत वाइल बिन हजर रज़ि० फ़रमाते हैं नबी अकरम सल्ल० जब वलज़्ज़ॉल्लीन कहते, तो ऊंची आवाज़ से आमीन कहते। इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

मसला 190. इमाम को सूरह फ़ातिहा के बाद पहली दो रकअतों में क़ुरआन की कोई दूसरी सूरह या सूरह का कुछ हिस्सा तिलावत करना चाहिए।

मसला 191. तमाम नमाज़ों में इमाम को दूसरी रकअत की तुलना में पहली रकअत लम्बी पढ़ानी चाहिए।

عَنْ أَبِيْ قَتَادَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقْرَأُ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الْأُوْلَيَيْنِ مِنْ صَلَاةِ الظُّهْرِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ وَسُوْرَتَيْنِ يُطَوِّلُ فِي الْأُوْلَى وَ يُقَصِّرُ فِي الثَّانِيَةِ وَ يُسْمِعُ الْآيَةَ أَحْيَانًا ، وَ كَانَ يَقْرَأُ فِي الْعَصْرِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ وَ سُوْرَتَيْنِ ، وَ كَانَ يُطَوِّلُ فِي الْأُوْلَى وَ يُقَصِّرُ فِي الثَّانِيَةِ وَ كَانَ يُطَوِّلُ فِي الرَّكْعَةِ الْأُوْلَى مِنْ صَلَاةِ الصُّبْحِ وَ يُقَصِّرُ فِي الثَّانِيَةِ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत अबू क़तादा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल०

1. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 284
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 824

Www.IslamicBooks.Website

ज़ोहर की पहली दो रकअतों में सूरह फ़ातिहा के अलावा दो सूरतें और पढ़ा करते थे, पहली रकअत को लम्बी करते और दूसरी को छोटा करते और कभी कभी कोई आयत तेज़ आवाज़ से पढ़ते जो सुनाई देती और अस्र की नमाज़ (की पहली दो रकअतों) में भी (पहले) सूरह फ़ातिहा पढ़ते और उसके अलावा दो सूरतें (अर्थात् हर रकअत में एक) मिलाकर पढ़ते और पहली रकअत दूसरी की तुलना में लम्बी करते। सुबह की नमाज़ में भी पहली रकअत लम्बी करते और दूसरी छोटी। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 192. मुक़तदी को इमाम के पीछे ज़ोहर और अस्र की फ़र्ज़ नमाज़ की पहली दो रकअतों में सूरह के साथ कोई दूसरी सूरह मिलाकर पढ़नी चाहिए जबकि बाक़ी दो रकअतों में केवल सूरह फ़ातिहा पढ़नी चाहिए।

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كُنَّا نَقْرَءُ فِي الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ خَلْفَ الْإِمَامِ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الْأُوْلَيَيْنِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ وَ سُوْرَةٍ وَ فِي الْأُخْرَيَيْنِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (٢) (صحيح)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं हम ज़ोहर और अस्र की नमाज़ में इमाम के पीछे पहली दो रकअतों में सूरह फ़ातिहा और कोई दूसरी सूरह पढ़ते जबकि बाक़ी दो रकअतों में सिर्फ़ सूरह फ़ातिहा पढ़ते। इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[2]

मसला 193. अकेले को सुन्नत और नवाफ़िल की तमाम रकअतों में सूरह फ़ातिहा के बाद कोई दूसरी सूरह साथ मिलानी चाहिए।

मसला 194. तेज आवाज़ की नमाज़ की पहली और दूसरी रकअत में क़िरअत की तर्तीब वाजिब नहीं।

मसला 195. एक ही रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद दो सूरतें मिलाकर पढ़ना जाइज़ है।

---

1. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलज़ुबैदी, हदीस 437
2. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 687

Www.IslamicBooks.Website

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ كَانَ رَجُلٌ مِّنَ الْأَنْصَارِ يَؤُمُّهُمْ فِيْ مَسْجِدِ قُبَاءَ وَكَانَ كُلَّمَا افْتَتَحَ سُوْرَةً يَّقْرَءُ بِهَا لَهُمْ فِي الصَّلَاةِ مِمَّا يَقْرَأُ بِهِ اِفْتَتَحَ بِقُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ حَتّٰى يَفْرُغَ مِنْهَا ثُمَّ يَقْرَأُ بِسُوْرَةٍ أُخْرٰى مَعَهَا وَكَانَ يَصْنَعُ ذٰلِكَ فِيْ كُلِّ رَكْعَةٍ .....فَلَمَّا أَتَاهُمُ النَّبِيُّ ﷺ أَخْبَرُوْهُ الْخَبَرَ فَقَالَ : يَا فُلَانُ مَا يَمْنَعُكَ اَنْ تَفْعَلَ مَا يَأْمُرُكَ بِهِ أَصْحَابُكَ وَمَا يَحْمِلُكَ عَلٰى لُزُوْمِ هٰذِهِ السُّوْرَةِ فِيْ كُلِّ رَكْعَةٍ ؟ فَقَالَ : إِنِّيْ أُحِبُّهَا فَقَالَ حُبُّكَ إِيَّاهَا اَدْخَلَكَ الْجَنَّةَ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत अनस रज़ि० रिवायत करते हैं.कि एक अन्सारी, मस्जिदे क़ुबा में अनूसार की इमामत करता था वह तमाम तेज़ आवाज़ वाली नमाज़ों की हर रकअत में पहले सूरह इख़्लास पढ़ता फिर कोई दूसरी सूरह पढ़ता। नबी अकरम सल्ल० तशरीफ़ लाए, तो अनूसार ने आप सल्ल० को यह स्थिति बताई। हुज़ूर अकरम सल्ल० ने इमाम से मालूम किया "तुम लोगों के कहने पर अमल क्यों नहीं करते और सूरह इख़्लास को हर रकअत में क़िरअत से पहले क्यों पढ़ते हो?" अन्सारी इमाम ने जवाब दिया "मैं सूरह इख़्लास से मुहब्बत रखता हूं।" आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया "सूरह इख़्लास की मुहब्बत तुम्हें जन्नत में ले जाएगी।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

قَرَءَ الْاَحْنَفُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ بِالْكَهْفِ فِي الْأُوْلٰى وَ فِي الثَّانِيَةِ بِيُوْسُفَ اَوْ يُوْنُسَ وَ ذَكَرَ اَنَّهُ صَلّٰى مَعَ عُمَرَ الصُّبْحَ بِهِمَا . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٢)

हज़रत अहनफ़ रज़ि० ने (नमाज़े फ़ज्र की) पहली रकअत में सूरह कहफ़ (सूरह नं० 18) और दूसरी रकअत में सूरह यूसुफ़ (सूरह नं० 12) या सूरह यूनुस (सूरह नं० 10) पढ़ी और बताया कि मैंने सुबह की नमाज़ हज़रत उमर रज़ि० के साथ इन्हीं दो सूरतों के साथ पढ़ी। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[2]

---

1. किताबुल अज़ान।
2. किताबुल अज़ान।

Www.IslamicBooks.Website

मसला 196. इमाम या अकेले पहली और दूसरी दोनों रकअतों में एक ही सूरह तिलावत कर सकता है।

عَنْ مُعَاذِ بْنِ عَبْدِ اللهِ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : إِنَّ رَجُلاً مِّنَ الْجُهَيْنَةِ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَرَأَ فِي الصُّبْحِ إِذَا زُلْزِلَتْ فِي الرَّكْعَتَيْنِ كِلْتَيْهِمَا فَلاَ أَدْرِيْ أَنَسِيَ أَمْ قَرَأَ ذٰلِكَ عَمَدًا . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (١) (حسن)

हज़रत मुआज़ बिन अब्दुल्लाह जुहनी रज़ि० कहते हैं जुहैना ख़ानदान के एक आदमी ने मुझे बताया कि उसने रसूले अकरम सल्ल० को नमाज़े फ़ज्र की दोनों रकअतों में सूरह ज़िलज़ाल तिलावत फ़रमाते सुना है। (रावी कहता है) मालूम नहीं रसूलुल्लाह सल्ल० ने ऐसा भूल से किया था या जान बूझकर। इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[1]

मसला 197. अगर किसी आदमी को क़ुरआन मजीद बिल्कुल याद न हो तो उसे क़िरअत की जगह ला इला-ह इल्लल्लाहु, सुब्हानल्लाहि, अलहम्दुलिल्लाहि और अल्लाहु अकबर पढ़ना चाहिए।

عَنْ أَبِيْ أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ : إِنِّيْ لاَ أَسْتَطِيْعُ أَنْ آخُذَ شَيْئًا مِنَ الْقُرْآنِ فَعَلِّمْنِيْ شَيْئًا يُجْزِئُنِيْ مِنَ الْقُرْآنِ فَقَالَ قُلْ : سُبْحَانَ اللهِ ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ ، وَلاَ إِلٰهَ إِلاَّ اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ وَلاَحَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ (٢) (حسن)

हज़रत अबू अब रज़ि० से रिवायत है कि एक आदमी नबी अकरम सल्ल० की सेवा में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया "मैं (नमाज़ में) क़ुरआन मजीद में से कुछ भी पढ़ने की ताक़त नहीं रखता, मुझे कोई ऐसी चीज़ सिखा दीजिए, जो क़ुरआन मजीद की जगह काफ़ी हो।" आप सल्ल० ने फ़रमाया "(क़िरअत की जगह) सुब्हानल्लाहि, अलहम्दुलिल्लाहि, ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर ला हव-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि पढ़ लिया करो।" इसे नसाई ने रिवायत किया है।[2]

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 730
2. सहीह सुनन नसाई, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 885

Www.IslamicBooks.Website

मसला 198. क़िरअत करते हुए विभिन्न सूरतों में सवालिया आयात के जवाब देना मसनून है।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا قَرَأَ سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى قَالَ ((سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى)) رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (١) (صحيح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० जब (नमाज़ में) सब्बिहिस-म रब्बिकल आला (अपने पालनहार की पाकी बयान कर) पढ़ते तो, जवाब में सुब्हा-न रब्बियल आला (मेरा बुलन्द मर्तबा पालनहार पाक है) फ़रमाते। इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[1]

عَنْ مُوْسَى بْنِ أَبِيْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ رَجُلٌ يُصَلِّيْ فَوْقَ بَيْتِهِ وَ كَانَ إِذَا قَرَءَ ((أَلَيْسَ ذَلِكَ بِقَادِرٍ عَلَى أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَى)) قَالَ : سُبْحَانَكَ فَبَلَى فَسَأَلُوْهُ عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ . رواه أبوداؤد (٢) (صحيح)

हज़रत मूसा बिन अबी आइशा रज़ि० कहते हैं कि एक आदमी अपने घर में नमाज़ पढ़ रहा था जब उसने इस आयत की क़िरअत की "अलै-स ज़ालि-क बिक़ादिरिन अ़ला अयं युह्यियल मौ-ता" (अनुवाद : क्या अल्लाह इस बात पर क़ादिर नहीं कि मुर्दों को ज़िंदा करे?) तो (जवाब में स्वयं ही) कहा "सुब्हान-क बला" (अनुवाद : ऐ अल्लाह तू हर दोष से पाक है, मुर्दों को ज़िंदा क्यों नहीं कर सकता) लोगों ने उससे इस जवाब के बारे में सवाल किया तो उसने कहा मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० से ऐसे ही सुना है। इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

मसला 199. क़िरअत के दौरान सज्दा तिलावत की आयत आए, तो तिलावत करने और सुनने वालों को सज्दा करना चाहिए।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ فَيَقْرَأُ سُوْرَةً فِيْهَا سَجْدَةٌ فَيَسْجُدُ وَ نَسْجُدُ مَعَهُ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٣)

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 785
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 786

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० क़ुरआन पढ़ते हुए सज्दे की आयत पर आते, तो सज्दा करते और हम भी आप सल्ल० के साथ सज्दा करते। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 200. सज्दा तिलावत की मसनून दुआ यह है।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُوْلُ فِيْ سُجُوْدِ الْقُرْآنِ بِاللَّيْلِ ((سَجَدَ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ خَلَقَهُ وَ شَقَّ سَمْعَهُ وَ بَصَرَهُ بِحَوْلِهِ وَ قُوَّتِهِ)) رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि नबी अकरम सल्ल० क़यामुल्लैल के दौरान जब सज्दा तिलावत करते, तो फ़रमाते "मेरे चेहरे ने उस हस्ती को सज्दा किया जिसने उसे पैदा किया और अपनी ताक़त व क़ुदरत से उसमें कान और आंखें बनाईं।" इसे अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और नसाई ने रिवायत किया है।[1]

स्पष्टीकरण : तिलावत करने वाला सज्दा न करे तो सुनने वाले को भी नहीं करना चाहिए।

मसला 201. सज्दा तिलावत वाजिब नहीं।

عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَرَأْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ النَّجْمَ فَلَمْ يَسْجُدْ فِيْهَا مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० फ़रमाते हैं मैंने नबी अकरम सल्ल० के सामने सूरह नज्म तिलावत की तो आप सल्ल० ने सज्दा तिलावत नहीं किया। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[2]

मसला 202. रुकूअ में जाने से पहले और रुकूअ से उठने के बाद तकबीरे तहरीमा की तरह दोनों हाथ कंधों तक उठाना मसनून है इसे

1. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 353
2. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, तीसरा भाग, हदीस 2723
3. सहीह मुस्लिम, किताबुल मस्जिद, बाब सुजूद वत्तिलावत।

Www.IslamicBooks.Website

रफ़अ यदैन कहते हैं।

मसला 203. तीन या चार रकअतों वाली नमाज़ में दूसरी रकअत से उठने के बाद भी रफ़अ यदैन करना मसनून है।

عَنْ نَافِعٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا كَانَ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ كَبَّرَ وَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَ إِذَا رَكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَ إِذَا قَالَ : سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ وَ إِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَ رَفَعَ ذَلِكَ ابْنُ عُمَرَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٣)

हज़रत नाफ़ेअ रज़ि० रिवायत करते हैं कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० जब नमाज़ शुरू करते, तो अल्लाहु अकबर कहकर दोनों हाथ उठाते और जब रुकूअ करते, तो दोनों हाथ उठाते और जब (रुकूअ से उठने के लिए) समिअल्लाहु लिमन हमिदा कहते तो फिर दोनों हाथ उठाते और जब (तीन या चार रकअतों वाली नमाज़ में) दो रकअतों के बाद उठते तब भी दोनों हाथ उठाते और फ़रमाते कि नबी अकरम सल्ल० इस तरह किया करते थे। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 204. रुकूअ और सज्दे की अनेक मसनून तसबीहात में से दो ये हैं :

- عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ الْيَمَانِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ إِذَا رَكَعَ ((سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ)) ثَلَاثَ مَرَّاتٍ وَ إِذَا سَجَدَ قَالَ ((سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى)) ثَلَاثَ مَرَّاتٍ . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (١) (صحيح)

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि० से रिवायत है कि उन्होंने रसूले अकरम सल्ल० को रुकूअ में "सुब्हा-न रब्बियल अज़ीम" (अनुवाद : मेरा अज़ीम पालनहार पाक है) तीन बार कहते हुए सुना और सज्दे में "सुब्हा-न रब्बियल आला" (अनुवाद : मेरा बुलन्द पालनहार पाक है) तीन बार कहते हुए सुना। इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[2]

---

1. किताबुल अज़ान, बाब रफ़अ यदैन, इज़ा क़ा-म मिनर्रकअतैन।
2. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 725

Www.IslamicBooks.Website

٢– عَنْ عَائِشَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِىَّ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ فِىْ رُكُوْعِهِ وَ سُجُوْدِهِ سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَ الرُّوْحِ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० अपने रुकूअ और सज्दे में यह तस्बीह कहा करते "सुब्बूहुन क़ुद्दूसुन रब्बुल मलॉइकति वर्रूहि।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 205. रुकूअ में दोनों हाथ मज़बूती से घुटनों पर रखने चाहिएं।

मसला 206. रुकूअ में दोनों बाज़ू फैलाने चाहिएं।

قَالَ أَبُوْ حُمَيْدٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ فِىْ أَصْحَابِهِ أَمْكَنَ النَّبِىُّ ﷺ يَدَيْهِ مِنْ رُكْبَتَيْهِ . رَوَاهُ الْبُخَارِىُّ (٢).

हज़रत अबू हुमैद रज़ि० सहाबी कहते हैं जब रसूलुल्लाह सल्ल० रुकूअ करते, तो अपने हाथों से घुटने मज़बूत पकड़ लेते। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[2]

عَنْ عَائِشَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : كَانَ رَسُوْلُ اللهِ يَرْفَعُ فَيَضَعُ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ وَ يُجَافِىْ بِعُضُدَيْهِ . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (صحيح)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० रुकूअ करते तो अपने दोनों हाथ घुटनों पर रख लेते और अपने बाज़ू फैला देते। इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[3]

मसला 207. हालते रुकूअ में कमर सीधी और सिर, कमर के बराबर होना चाहिए। ऊंचा हो न नीचा।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهَا ..... وَ كَانَ إِذَا رَكَعَ لَمْ يُشْخِصْ رَأْسَهُ وَ لَمْ يُصَوِّبْهُ وَ لَكِنْ بَيْنَ ذَلِكَ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

---

1. किताबुस्सलात, बाब मा यक़ाल फ़िर्रुकूअ वस्सुजूद।
2. किताबुल अज़ान।
3. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 714

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब रुकूअ फ़रमाते, तो अपना सिर (कमर से) न ऊंचा करते न नीचा करते बल्कि सिर और कमर बराबर रखते। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 208. रुकूअ व सुजूद इत्मीनान से न करने वाला नमाज़ का चोर है।

عَنْ أَبِيْ قَتَادَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَسْوَأُ النَّاسِ سَرِقَةً ن الَّذِيْ يَسْرِقُ مِنْ صَلَاتِهِ قَالُوْا يَارَسُوْلَ اللهِ ﷺ وَ كَيْفَ يَسْرِقُ مِنْ صَلَاتِهِ ؟ قَالَ لَا يُتِمُّ رُكُوْعَهَا وَ لَا سُجُوْدَهَا . رَوَاهُ أَحْمَدُ (٢) (صحيح)

हज़रत अबू क़तादा रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "बदतरीन चोर नमाज़ का चोर है।" लोगों ने पूछा "या रसूलुल्लाह सल्ल०! नमाज़ की चोरी कैसे?" फ़रमाया "नमाज़ का चोर वह है जो रुकूअ व सुजूद पूरा नहीं करता।" इसे अहमद ने रिवायत किया है।[2]

मसला 209. रुकूअ और सज्दे में क़ुरआन की तिलावत करना मना है।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَلَا نُهِيْتُ أَنْ أَقْرَأَ الْقُرْآنَ رَاكِعًا أَوْ سَاجِدًا . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٣)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया "लोगो! याद रखो मुझे रुकूअ और सज्दे में क़ुरआन पढ़ने से मना किया गया है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[3]

मसला 210. रुकूअ के बाद इत्मीनान से सीधा खड़ा होना ज़रूरी है।

عَنْ ثَابِتٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كَانَ أَنَسٌ يَنْعَتُ لَنَا صَلَاةَ النَّبِيِّ ﷺ فَكَانَ يُصَلِّيْ فَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوْعِ قَامَ حَتَّى نَقُوْلَ قَدْ نَسِيَ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

---

1. किताबुस्सलात, बाब यजमा सिफ़तुस्सलात।
2. मिश्कातुल मसाबीह, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 885
3. किताबुस्सलात, बाब नह्य अनिल क़िरअतुल क़ुरआन फ़िर्रुकूअ वस्सुजूद।

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत साबित रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अनस रज़ि० हमारे सामने रसूलुल्लाह सल्ल० की नमाज़ बयान करते, तो पढ़कर विस्तार से फ़रमाते, रुकूअ से जब सिर उठाकर क़ौमा के लिए खड़े होते, तो इतनी देर खड़े होते कि हमें गुमान होने लगता शायद हज़रत अनस रज़ि० सज्दे में जाना भूल गए हैं। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

قَالَ أَبُوْ حُمَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ إِسْتَوَى حَتَّى يَعُوْدَ كُلُّ فَقَارٍ مَكَانَهُ رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٢)

हज़रत अबू हुमैद रज़ि० कहते हैं नबी अकरम सल्ल० रुकूअ से सिर उठाते, तो सीधे खड़े हो जाते यहां तक कि हर जोड़ अपनी जगह पर आ जाता। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[2]

स्पष्टीकरण : रुकूअ के बाद सीधा खड़ा होने को "क़ौमा" कहते हैं। हालते क़ौमा में हाथ बांधने या खुले रखने के बारे में किसी हदीस से विवरण नहीं मिलता। लिहाज़ा दोनों तरह सही है।

मसला 211. क़ौमा की मसनून दुआ यह है।

عَنْ رِفَاعَةَ بْنِ رَافِعٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كُنَّا نُصَلِّيْ وَرَاءَ النَّبِيِّ ﷺ فَلَمَّا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرَّكْعَةِ قَالَ : سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فَقَالَ رَجُلٌ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيْهِ فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ : مَنِ الْمُتَكَلِّمُ ؟ قَالَ : أَنَا قَالَ : رَأَيْتُ بِضْعَةً وَّ ثَلَاثِيْنَ مَلَكًا يَبْتَدِرُوْنَهَا أَيُّهُمْ يَكْتُبُهَا أَوَّلُ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٣)

हज़रत रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ रज़ि० फ़रमाते हैं हम नबी अकरम सल्ल० के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे। जब हुज़ूर सल्ल० ने रुकूअ से सिर उठाया तो फ़रमाया : समिअल्लाहु लिमन हमिदा (जिसने अल्लाह की प्रशंसा की अल्लाह तआला ने सुन ली) मुक़तदियों में से एक आदमी ने कहा, रब्बना व लकल हम्दु हमदन कसीरन तय्यिबन मुबारकन फ़ीहि

1. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलज़ुबैदी, हदीस 461
2. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलज़ुबैदी, हदीस 470

Www.IslamicBooks.Website

(हमारे पालनहार! प्रशंसा तेरे ही लिए है। अधिकता से ऐसी प्रशंसा, जो शिर्क से पाक और बरकत वाली है) जब हुज़ूर अकरम सल्ल० नमाज़ से फ़ारिग हुए तो पूछा "यह कलिमात कहने वाला कौन था?" उस व्यक्ति ने अर्ज़ किया "मैं था।" आप सल्ल० ने फ़रमाया "मैंने तीस से ज़्यादा फ़रिश्तों को इन कलिमात का सवाब लिखने में सब्क़त हासिल करते देखा।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 212. सज्दा सात अंगों पर करना चाहिए।

मसला 213. सज्दे में नाक ज़मीन पर लगाना ज़रूरी है।

मसला 214. नमाज़ में कपड़ों और बालों का समेटना या संवारना मना है।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ النَّبِىُّ ﷺ أُمِرْتُ أَنْ أَسْجُدَ عَلٰى سَبْعَةِ اَعْظُمٍ عَلَى الْجَبْهَةِ وَ أَشَارَ بِيَدِهِ عَلٰى أَنْفِهِ وَالْيَدَيْنِ وَالرُّكْبَتَيْنِ وَأَطْرَافِ الْقَدَمَيْنِ وَلَا نَكْفِتُ الثِّيَابَ وَالشَّعْرَ . رَوَاهُ الْبُخَارِىُّ (١)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० कहते हैं नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "मुझे सात अंगों पर सज्दा करने का हुक्म दिया गया है। पेशानी पर, (यह कहते हुए) हुज़ूर सल्ल० ने अपने हाथ से नाक की तरफ़ इशारा किया, दोनों हाथ, दोनों घुटनों और दोनों पांव की उंगलियां।" और आप सल्ल० ने फ़रमाया "मुझे हुक्म दिया गया है कि हम नमाज़ में कपड़ों और बालों को न समेटें।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[2]

मसला 215. सज्दा पूरे इत्मीनान से करना चाहिए।

मसला 216. सज्दे में बाज़ू ज़मीन पर बिछाने नहीं चाहिएं।

عَنْ أَنَسٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اِعْتَدِلُوْا فِى السُّجُوْدِ وَ لَا يَبْسُطْ أَحَدُكُمْ ذِرَاعَيْهِ اِنْبِسَاطَ الْكَلْبِ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٢)

---

1. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलज़्ज़ुबैदी, हदीस 460
2. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलज़्ज़ुबैदी, हदीस 464

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "सज्दा इत्मीनान से करो और तुममें से कोई भी सज्दे में अपने बाज़ू कुत्ते की तरह न बिछाए।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 217. सज्दे में कुहनियां पेट से अलग और खोल कर रखनी चाहिएं।

عَنْ مَيْمُوْنَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا سَجَدَ لَوْ شَاءَتْ بَهْمَةٌ أَنْ تَمُرَّ بَيْنَ يَدَيْهِ مَرَّتْ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٣)

हज़रत मैमूना रज़ि० कहती हैं नबी अकरम सल्ल० जब सज्दा करते, तो बकरी का बच्चा आप सल्ल० के हाथों के बीच से गुज़रना चाहता तो गुज़र जाता। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 218. सज्दे में दोनों हाथ कंधों के बराबर रहने चाहिएं।

मसला 219. सज्दे में दोनों हाथ पहलुओं से अलग रहने चाहिएं।

عَنْ أَبِيْ حُمَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا سَجَدَ أَمْكَنَ أَنْفَهُ وَ جَبْهَتَهُ الْأَرْضِ وَ نَحَّى يَدَيْهِ عَنْ جَنْبَيْهِ وَ وَضَعَ كَفَّيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत अबू हुमैद रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी अकरम सल्ल० सज्दे में अपनी नाक और पेशानी ज़मीन के साथ लगाते और हाथ अपने पहलुओं से अलग और कंधों के बराबर रखते। इसे अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[3]

मसला 220. सज्दे में पांव की उंगलियां क़िबला रुख़ रहनी चाहिएं।

عَنْ أَبُوْ حُمَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ يَسْتَقْبِلُ بِأَطْرَافِ رِجْلَيْهِ الْقِبْلَةَ رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٢)

---

1. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 300
2. किताबुस्सलात, बाब ऐतिदाल फ़िस्सुजूद।
3. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 221

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अबू हुमैद रज़ि० नबी अकरम सल्ल० से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्ल० सज्दे में पांव की उंगलियां क़िबला रुख़ रखते थे। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 221. जलसा की मसनून दुआ यह है।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ : كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ : اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ وَارْحَمْنِىْ وَ اجْبُرْنِىْ وَاهْدِنِىْ وَارْزُقْنِىْ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِىُّ (٢) (صحيح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं नबी अकरम सल्ल० दोनों सज्दों के बीच यह दुआ पढ़ा करते थे ''अल्लाहुम्मग़फ़िरली वरहमनी वजबुरनी वहदिनी वरज़ुक़नी'' (या अल्लाह मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम फ़रमा, मेरा नुक़सान पूरा कर, मुझे हिदायत और रिज़्क़ प्रदान कर) इसे अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[2]

स्पष्टीकरण : दोनों सज्दों के बीच बैठने को ''जलसा'' कहते हैं।

मसला 222. रुकूअ व सज्दा, क़ौमा और जलसा इत्मीनान और ऐतिदाल से लगभग एक जितने समय में अदा करना चाहिएं।

عَنِ الْبَرَآءِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ رُكُوْعُ النَّبِىِّ ﷺ وَ سُجُوْدُهُ وَ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوْعِ وَ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ قَرِيْبًا مِنَ السَّوَآءِ . رَوَاهُ الْبُخَارِىُّ (١)

हज़रत बराअ रज़ि० फ़रमाते हैं नबी अकरम सल्ल० का रुकूअ, सज्दा, क़ौमा दोनों सज्दों का दर्मियानी क़ायदा लगभग बराबर होते। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[3]

मसला 223. पहली और तीसरी रकअत में दूसरे सज्दे के बाद थोड़ी देर बैठना मसनून है, इसे ''जलसा इस्तराहत'' कहते हैं।

---

1. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलज़्ज़ुबैदी, हदीस 470
2. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 233
3. किताबुल अज़ान।

Www.IslamicBooks.Website

عَنْ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي فَإِذَا كَانَ فِي وِتْرٍ مِّنْ صَلَاتِهِ لَمْ يَنْهَضْ حَتَّى يَسْتَوِيَ قَاعِدًا . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ(۲)

हज़रत मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से रिवायत है कि उन्होंने नबी अकरम सल्ल० को नमाज़ पढ़ते देखा आप सल्ल० जब नमाज़ की ताक़ रकअतों (अर्थात् पहली और तीसरी) में होते तो (दूसरे सज्दे के बाद) थोड़ी देर सीधे बैठते फिर क़याम के लिए खड़े होते। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 224. तशह्हुद में शहादत की उंगली उठाना मसनून है।

मसला 225. तशह्हुद में दाहिना हाथ दाएं घुटने पर, बायां हाथ बाएं घुटने पर रखना चाहिए।

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ زُبَيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا قَعَدَ يَدْعُوْ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى وَ أَشَارَ بِإِصْبَعِهِ السَّبَّابَةِ وَ وَضَعَ إِبْهَامَهُ عَلَى إِصْبَعِهِ الْوُسْطَى . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (۳)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० जब तशह्हुद में बैठते तो दाहिना हाथ दाएं घुटने पर और बायां हाथ बाएं घुटने पर रखते और अपने अंगूठे को अपनी बीच की उंगली पर रखकर हल्क़ा बनाते हुए शहादत की उंगली ऊपर उठाते। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

स्पष्टीकरण : अहादीस में शहादत की उंगली कलिमा शहादत के समय उठाने की कोई आपत्ति नहीं अतः तशह्हुद से लेकर आख़िर तशह्हुद तक निरंतर उठाई जाए या कलिमा शहादत के समय उठाई जाए, सुन्नत अदा हो जाती है।

मसला 226. शहादत की उंगली उठाना शैतान को तलवार मारने से ज़्यादा सख़्त है।

1. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलज़ुबैदी, हदीस 467
2. किताबुल मस्जिद, बाब सिफ़तुल जुलूस फ़िस्सलात।

Www.IslamicBooks.Website

عَنْ نَافِعٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ لَهِيَ أَشَدُّ عَلَى الشَّيْطَانِ مِنَ الْحَدِيْدِ يَعْنِي السَّبَّابَةَ . رَوَاهُ أَحْمَدُ (١) (حسن)

हज़रत नाफ़ेअ रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "कि की उंगली शहादत उठाना शैतान को तलवार या नेज़ा मारने से ज़्यादा सख़्त है।" इसे अहमद ने रिवायत किया है।[1]

मसला 227. तशह्हुद की मसनून दुआ यह है।

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ اِلْتَفَتَ إِلَيْنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ فَقَالَ : إِذَا قَعَدَ أَحَدُكُمْ فِي الصَّلَاةِ فَلْيَقُلْ : اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهُ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَ عَلَى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ فَإِذَا قَالَهَا أَصَابَتْ كُلَّ عَبْدٍ لِلّٰهِ صَالِحٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ ثُمَّ يَتَخَيَّرُ مِنَ الْمَسْأَلَةِ مَا شَاءَ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० हमारी तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़रमाया "जब तुम नमाज़ में बैठो तो कहो "तमाम ज़बानी, शारीरिक और आर्थिक उपासना अल्लाह तआला ही के लिए है। ऐं नबी आप पर अल्लाह का सलाम और उसकी रहमतें और बरकतें हों। हम पर भी और अल्लाह तआला के नेक बन्दों पर भी सलाम। जब किसी ने यह शब्द कहे तो अल्लाह के हर नेक बन्दे को चाहे वह आसमान में हो या ज़मीन में, सलाम पहुंच जाता है और फिर कहो मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्ल० अल्लाह तआला के बन्दे और रसूल हैं।" फिर आदमी अपने लिए अल्लाह से जो सवाल करना चाहे करे। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 228. पहला तशह्हुद (या क़ायदा) वाजिब है।

---

1. मिश्कातुल मसाबीह, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 917
2. किताबुस्सलात, बाब तशह्हुद फ़िस्सलात।

Www.IslamicBooks.Website

मसला 229. नमाज़ी पहला तशह्हुद भूल जाए, तो उसे सज्दा सहू करना चाहिए।

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَالِكٍ ابْنِ بُحَيْنَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : صَلَّى بِنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ الظُّهْرَ فَقَامَ وَ عَلَيْهِ جُلُوْسٌ فَلَمَّا كَانَ فِيْ آخِرِ صَلَاتِهِ سَجَدَ سَجْدَتَيْنِ وَ هُوَ جَالِسٌ رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (۳)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मालिक बिन बुजैना रज़ि० से रिवायत है कि हमें रसूलुल्लाह सल्ल० ने ज़ोहर की नमाज़ पढ़ाई (दो रकअतों के बाद) आप सल्ल० को क़ायदा के लिए बैठना था मगर (भूलकर) खड़े हो गए। फिर जब आप सल्ल० ने नमाज़ का आख़िरी क़ायदा किया, तो दो सज्दे (सज्दा सहू) अदा किए। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 230. पहले तशह्हुद में दायां पांव खड़ा रखना और बाएं पांव पर बैठना मसनून है।

मसला 231. दूसरे या आख़िरी तशह्हुद में दायां पांव खड़ा करके बाएं पांव को दाईं पिंडली के नीचे से निकाल कर कूल्हे पर बैठने को "तवर्रुक" कहते हैं। तवर्रुक करना बेहतर है।

عَنْ أَبِيْ حُمَيْدِ نِ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ : وَ هُوَ فِيْ نَفَرٍ مِّنْ أَصْحَابِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ أَنَا كُنْتُ أَحْفَظُكُمْ لِصَلَاةِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ إِذَا جَلَسَ فِي الرَّكْعَتَيْنِ جَلَسَ عَلَى رِجْلِهِ الْيُسْرَى وَ نَصَبَ الْيُمْنَى فَإِذَا جَلَسَ فِي الرَّكْعَةِ الْآخِرَةِ قَدَّمَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَ نَصَبَ الْأُخْرَى وَ قَعَدَ عَلَى مَقْعَدَتِهِ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

हज़रत अबू हुमैद साअदी रज़ि० सहाबा किराम रज़ि० की मज्लिस में बैठे हुए थे, कहने लगे मुझे हुज़ूर अकरम सल्ल० का तरीक़ा नमाज़ तुम सबसे ज़्यादा याद है। रसूलुल्लाह सल्ल० दूसरी रकअत के बाद पहले तशह्हुद में दायां पांव खड़ा रखते और बाएं पर बैठते। आख़िरी रकअत (अर्थात् दूसरे तशह्हुद) में बायां पांव दाएं पांव की पिंडली में से निकाल लेते और दायां पांव खड़ा करके कूल्हे पर बैठते। इसे बुख़ारी ने रिवायत

1. किताबुस्सलात, बाब तशह्हुद फ़िल ऊला।

Www.IslamicBooks.Website

किया है।[1]

मसला 232. दूसरे तशह्हुद में अत्तहिय्यात के बाद दुरूद शरीफ़ और उसके बाद मसनून दुआओं में से कोई एक पढ़नी चाहिए।

عَنْ فُضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : سَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ رَجُلاً يَدْعُوْ فِيْ صَلاَتِهِ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ عَجِلَ هٰذَا ثُمَّ دَعَاهُ فَقَالَ لَهُ أَوْ لِغَيْرِهِ . إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ فَلْيَبْدَأْ بِتَحْمِيْدِ اللهِ وَ الثَّنَاءِ عَلَيْهِ ثُمَّ لِيُصَلِّ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ ثُمَّ لِيَدْعُ بَعْدُ مَا شَاءَ . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (صحيح)

हज़रत फ़ुज़ाला बिन उबैद रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक आदमी को नमाज़ में दुरूद के बिना दुआ माँगते हुए सुना आप सल्ल० ने फ़रमाया "उसने जल्दी की" फिर आप सल्ल० ने उसे अपने पास बुलाया और उससे या किसी दूसरे व्यक्ति को मुख़ातिब करके फ़रमाया "जब कोई नमाज़ पढ़े, तो अल्लाह की प्रशंसा व स्तुति से आरंभ करे, फिर अल्लाह तआला के नबी सल्ल० पर दुरूद भेजे उसके बाद जो चाहे दुआ मांगे।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[2]

मसला 233. रसूले अकरम सल्ल० ने नमाज़ में निम्न दुरूद पढ़ने की हिदायत फ़रमाई।

عَنْ عَبْدِالرَّحْمَنِ بْنِ أَبِيْ لَيْلَى قُلْنَا : يَا رَسُوْلَ اللهِ ! كَيْفَ الصَّلاَةُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ ؟ قَالَ : قُوْلُوْا : اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ عَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيْمَ وَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ . اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ عَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيْمَ وَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला रज़ि० से रिवायत है कि हमने पूछा "या रसूलुल्लाह सल्ल० हम आप सल्ल० पर और अहले बैअत पर किस तरह दुरूद भेजें?" आप सल्ल० ने फ़रमाया कहो "या अल्लाह! मुहम्मद और आले मुहम्मद पर इसी तरह रहमत भेज जिस तरह तूने

1. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिज़्ज़ुबैदी, हदीस 470
2. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, जुज़ सालिस, हदीस 2767

Www.IslamicBooks.Website

इबराहीम और आले इबराहीम पर रहमत भेजी। प्रशंसा और बुज़ुर्गी तेरे ही लिए है। या अल्लाह! मुहम्मद पर और आले मुहम्मद पर इसी तरह बरकत नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने इबराहीम और आले इबराहीम पर बरकत नाज़िल फ़रमाई। तारीफ़ और बुज़ुर्गी तेरे ही लिए है।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 234. दुरूद शरीफ के बाद मासूरा दुआओं में से कोई एक या जितनी कोई चाहे पढ़ सकता है।

मसला 235. मासूरा दुआओं में से दो दुआएं ये हैं :

١- عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَدْعُوْا فِي الصَّلَاةِ يَقُوْلُ : اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَ أَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ وَ أَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنَ الْمَأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं रसूलुल्लाह सल्ल० नमाज़ में (तशहहुद और दुरूद के बाद) यह दुआ मांगते "इलाही मैं तेरी जनाब से अज़ाबे क़ब्र, मसीह दज्जाल के फ़ितने, मौत व हयात की आज़माइश, गुनाहों और क़र्ज़ से पनाह मांगता हूं।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

٢- عَنْ أَبِيْ بَكْرِ الصِّدِّيْقِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ عَلِّمْنِيْ دُعَاءً أَدْعُوْ بِهِ فِيْ صَلَاتِيْ قَالَ : قُلْ ﴿ اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلَّا أَنْتَ فَاغْفِرْلِيْ مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِيْ إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴾ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल० से अर्ज़ किया मुझे कोई दुआ सिखलाइए जो मैं अपनी नमाज़ में पढ़ूं। आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया "कहो अल्लाहुम-म इन्नी ज़लमतु नफ़्सी....." ऐ अल्लाह! मैंने अपने आप पर बहुत ज़ुल्म किया है और

1. किताबुल अंबिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला।
2. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 345

Www.IslamicBooks.Website

तेरे सिवा गुनाह माफ़ करने वाला कोई नहीं, अपनी रहमत से मेरे सारे गुनाह माफ़ फ़रमा दे, मुझ पर रहम फ़रमा, बेशक तू बख़्शने वाला मेहरबान है।'' इसे बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 236. अत्तहिय्यात, दुरूद शरीफ़ और दुआओं से फ़ारिग़ होने के बाद अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि कहकर नमाज़ ख़त्म करना मसनून है।

عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِيْ طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : مِفْتَاحُ الصَّلَاةِ الطُّهُوْرُ وَ تَحْرِيْمُهَا التَّكْبِيْرُ وَ تَحْلِيْلُهَا التَّسْلِيْمُ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَ أَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ (٢) (صحيح)

हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ि० नबी अकरम सल्ल० से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया ''पाक़ी नमाज़ की कुंजी है। नमाज़ का आरंभ तकबीर और समापन सलाम कहना है।'' इसे अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[2]

मसला 237. सलाम फेरने के बाद इमाम को दाएं या बाएं तरफ़ से फिरकर लोगों की तरफ़ मुंह करके बैठना चाहिए।

عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا صَلَّى صَلَاةً أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٣)

हज़रत समरा बिन जुंदुब रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी अकरम सल्ल० जब नमाज़ पढ़ लेते, तो अपना चेहरा मुबारक हमारी तरफ़ फेर लेते। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[3]

मसला 238. नमाज़ से सलाम फेरने के बाद हाथ उठाकर सामूहिक दुआ मांगना सुन्नत से साबित नहीं।

मसला 239. सलाम फेरने के बाद दाएं या बाएं तरफ़ मुसाफ़हा करना सुन्नत से साबित नहीं।

---

1. लुअलुउ वल मरजान, जुज़ सानी, हदीस 1729
2. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 222
3. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलज़ुबैदी, हदीस 481

Www.IslamicBooks.Website

औरतों की नमाज़

मसला 240. औरत का मस्जिद की बजाए अपने घर की एकान्त जगह में नमाज़ अदा करना श्रेष्ठ है।

عَنْ أُمِّ حُمَيْدٍ امْرَأَةِ أَبِيْ حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهَا جَاءَتْ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ : يَارَسُوْلَ اللهِ ﷺ إِنِّيْ أُحِبُّ الصَّلَاةَ مَعَكَ ؟ قَالَ : قَدْ عَلِمْتُ أَنَّكِ تُحِبِّيْنَ الصَّلَاةَ مَعِيَ ، وَ صَلَاتُكِ فِيْ بَيْتِكِ خَيْرٌ مِّنْ صَلَاتِكِ فِيْ حُجْرَتِكِ ، وَ صَلَاتُكِ فِيْ حُجْرَتِكِ خَيْرٌ مِّنْ صَلَاتِكِ فِيْ دَارِكِ ، وَ صَلَاتُكِ فِيْ دَارِكِ خَيْرٌ مِّنْ صَلَاتِكِ فِيْ مَسْجِدِ قَوْمِكِ ، وَ صَلَاتُكِ فِيْ مَسْجِدِ قَوْمِكِ خَيْرٌ مِّنْ صَلَاتِكِ فِيْ مَسْجِدِيْ ، قَالَ : فَأَمَرَتْ فَبُنِيَ لَهَا مَسْجِدٌ فِيْ أَقْصَى شَيْءٍ مِنْ بَيْتِهَا وَ أَظْلَمِهِ ، وَ كَانَتْ تُصَلِّيْ فِيْهِ ، حَتَّى لَقِيَتِ اللهَ عَزَّوَجَلَّ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ وَابْنُ خُزَيْمَةَ (١) (حسن)

हज़रत अबू हुमैद साअदी रज़ि० की पत्नी हज़रत उम्मे हुमैद साअदी रज़ि० नबी अकरम सल्ल० की सेवा में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया "या रसूलुल्लाह सल्ल०! मेरा जी चाहता है कि आपके साथ (मस्जिदे नबवी में) नमाज़ पढ़ूं।" आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया "मुझे मालूम है कि तू मेरे साथ नमाज़ पढ़ना चाहती है लेकिन तेरा एक कोने में नमाज़ पढ़ना अपने कमरे में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है और तेरा कमरे में नमाज़ पढ़ना घर के सेहत में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है और तेरा घर के सेहन में नमाज़ पढ़ना मौहल्ले की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है और तेरा मौहल्ले की मस्जिद में नमाज़ अदा करना मेरी मस्जिद में नमाज़ अदा करने से बेहतर है।" रावी कहते हैं कि हज़रत उम्मे हुमैद रज़ि० ने (अपने घर में मस्जिद बनाने का) हुक्म दिया अतएवं उनके लिए घर के आख़िरी हिस्से में मस्जिद बनाई गई जिसे अंधेर रखा गया (अर्थात् उसमें रोशनदान आदि न बनाया गया) और वह हमेशा उसमें नमाज़ पढ़ती रहीं यहां तक कि अपने अल्लाह से जा मिलीं। इसे अहमद, इब्ने हिबान और इब्ने ख़ुज़ैमा

Www.IslamicBooks.Website

ने रिवायत किया है।[1]

मसला 241. शरअी अहकाम की पाबन्दी करते हुए औरतें नमाज़ के लिए मस्जिद में जाा चाहें तो उन्हें मना नहीं करना चाहिए।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لاَ تَمْنَعُوْا نِسَاءَكُمُ الْمَسَاجِدَ وَ بُيُوْتُهُنَّ خَيْرٌ لَّهُنَّ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (١) (صحيح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "औरतों को मस्जिदों में जाने से मना न करो लेकिन (नमाज़ पढ़ने के लिए) उनके घर मस्जिदों से बेहतर हैं।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

मसला 242. औरतों को दिन के समयों में मस्जिद में आने से बचना करना चाहिए।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِئْذَنُوا لِلنِّسَاءِ اللَّيْلِ إِلَى الْمَسَاجِدِ . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (٢) (صحيح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "औरतों को रात के समय मस्जिदों में आने की इजाज़त दो।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[3]

मसला 243. औरतों को ख़ुश्बू लगाकर मस्जिद में जाना मना है।

मसला 244. किसी औरत ने ख़ुश्बू लगाई हो तो उसे मस्जिद में जाने से पहले ख़ुश्बू धो लेनी चाहिए।

لَقِيَ أَبُوْهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ مُتَطَيِّبَةً تُرِيْدُ الْمَسْجِدَ فَقَالَ يَا أَمَةَ الْجَبَّارِ أَيْنَ تُرِيْدِيْنَ ؟ قَالَتِ الْمَسْجِدِ . قَالَ وَلَهُ تَطَيَّبْتِ ؟ قَالَتْ نَعَمْ . قَالَ : فَإِنِّيْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ : أَيُّمَا إِمْرَأَةٍ تَطَيَّبَتْ ثُمَّ خَرَجَتْ إِلَى الْمَسْجِدِ لَمْ تُقْبَلْ لَهَا صَلاَةٌ حَتَّى تَغْتَسِلَ . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (٣) (صحيح)

1. अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 338
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 530
3. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 466

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने एक औरत को ख़ुश्बू लगाकर मस्जिद में जाते देखा तो पूछा "ऐ अल्लाह की बन्दी कहां जा रही हो?" औरत ने जवाब दिया "मस्जिद में।" हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया "क्या इस उद्देश्य के लिए तूने इत्र लगाया है?" औरत ने जवाब दिया "जी हां।" हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहने लगे "मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है जो औरत ख़ुश्बू लगाए और फिर मस्जिद में जाए उसकी नमाज़ क़ुबूल नहीं की जाती या यह कि वह ख़ुश्बू को धोकर मस्जिद में जाए। इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

मसला 245. सिर पर चादर या मोटा दुपट्टा लिए बिना औरत की नमाज़ नहीं होती।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 68 के अन्तर्गत देखें।

मसला 246. औरतों को मर्दों की पंक्ति से अलग पंक्ति बनानी चाहिए।

मसला 247. औरत अकेली पंक्ति में खड़ी हो सकती है।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 134 के अन्तर्गत देखें।

मसला 248. औरतों की सबसे अच्छी पंक्ति पिछली है और सबसे बुरी पंक्ति पहली (मर्दों से मिली हुई) है।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ خَيْرُ صُفُوْفِ النِّسَاءِ آخِرُهَا وَ شَرُّهَا أَوَّلُهَا وَ خَيْرُ صُفُوْفِ الرِّجَالِ أَوَّلُهَا وَ شَرُّهَا آخِرُهَا . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ مَاجَةَ (١) (صحيح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "औरतों की बेहतरीन पंक्ति सबसे आख़िरी और बदतरीन पंक्ति पहली (अर्थात मर्दों से मिली हुई) है और मर्दों की बेहतरीन पंक्ति पहली और बदतरीन आख़िरी (अर्थात औरतों से मिली हुई) है।" इसे अबू दाऊद और

1. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, दूसरा भाग, हदीस 3233

Www.IslamicBooks.Website

इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

मसला 249. इमाम को उसकी ग़लती से अवगत करने के लिए मर्दों को सुब्हानल्लाह और औरतों को ताली बजानी चाहिए।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 269 के अन्तर्गत देखें।

मसला 250. औरत का अज़ान देना सुन्नत से साबित नहीं।

मसला 251. औरत, औरतों की इमामत करा सकती है।

मसला 252. औरत को इमामत कराते समय पहली पंक्ति के अंदर बीच में खड़ा होना चाहिए।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 154 के अन्तर्गत देखें।

मसला 253. पति-पत्नी भी एक पंक्ति में नमाज़ अदा नहीं कर सकते।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : صَلَّيْتُ إِلَى جَنْبِ النَّبِيِّ ﷺ وَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا خَلْفَنَا تُصَلِّيْ مَعَنَا ، وَأَنَا إِلَى جَنْبِ النَّبِيِّ ﷺ أُصَلِّيْ مَعَهُ . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ (صحيح) (١)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि मैंने नबी अकरम सल्ल० के साथ नमाज़ पढ़ी। हज़रत आइशा रज़ि० ने हमारे पीछे (जमाअत से नफ़िल) नमाज़ अदा की जबकि मैं नबी अकरम सल्ल० के पहलू में (खड़ा होकर) आपके साथ नमाज़ पढ़ता जाता था। इसे नसाई ने रिवायत किया है।[1]

मसला 254. उल्लिखित अहकाम के अलावा मर्द और औरत के तरीक़ा नमाज़ में कोई अन्तर नहीं।

عَنْ مَالِكِ بْنِ حُوَيْرِثٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ صَلُّوْا كَمَا رَأَيْتُمُوْنِيْ أُصَلِّيْ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٢)

---

1. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 819
2. सहीह सुनन नसाई, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 774

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत मालिक बिन हुवैरिस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "तुम सब (मर्द और औरतें) इसी तरह नमाज़ पढ़ो जिस तरह मुझे पढ़ते देखते हो।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِعْتَدِلُوْا فِي السُّجُوْدِ وَ لَا يَبْسُطُ أَحَدُكُمْ ذِرَاعَيْهِ إِنْبِسَاطَ الْكَلْبِ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٣)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "सज्दा इत्मीनान से करो और तुममें से कोई भी (मर्द हो या औरत) सज्दे में अपने बाज़ू कुत्ते की तरह न बिछाए।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

كَانَتْ أُمُّ الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا تَجْلِسُ فِيْ صَلَاتِهَا جِلْسَةَ الرَّجُلِ وَ كَانَتْ فَقِيْهَةً . ذَكَرَهُ الْبُخَارِيُّ (٤)

हज़रत उम्मे दरदा रज़ि० नमाज़ में मर्दों की तरह बैठती थीं और वह फ़क़ीह महिला थीं। बुख़ारी ने इसका ज़िक्र किया है।[3]

قَالَ إِبْرَاهِيْمُ النَّخْعِيُّ : تَفْعَلُ الْمَرْأَةُ فِي الصَّلَاةِ كَمَا يَفْعَلُ الرَّجُلُ . ذَكَرَهُ ابْنُ أَبِيْ شَيْبَةَ (١)

हज़रत इबराहीम नजअी रह० (इमाम अबू हनीफ़ा रह० के उस्ताद) फ़रमाते हैं औरत इसी तरह नमाज़ पढ़े जिस तरह मर्द पढ़ता है। इब्ने अबी शैबा ने इसका ज़िक्र किया है।[4]

मसला 255. मुस्तहाज़ा को मासिक धर्म के दिन गुज़रने पर ग़ुस्ल करके हर नमाज़ के लिए नया वुज़ू करना चाहिए।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 33 के अन्तर्गत देखें।

मसला 256. हाइज़ा (मासिक धर्म वाली) के लिए हैज़ के दिनों की

---

1. किताबुल अज़ान, बाब अज़ान लिल मुसाफ़िरीन।
2. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 300
3. किताबुल अज़ान, बाब सुन्नतुल जुलूस फ़ित्तशह्हुद।
4. लेखक इब्ने अबी शैबा, पहला भाग व दूसरा, पृष्ठ 75

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़ की क़ज़ा नहीं।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 338 के अन्तर्गत देखें।

मसला 257. औरतों पर नमाज़े जुमा वाजिब नहीं।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 343 के अन्तर्गत मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

मसला 258. शरअी अहकाम की पाबन्दी करते हुए औरतें नमाज़े ईद के लिए मस्जिद या मैदान में जाना चाहें तो जा सकती हैं।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 456 के अन्तर्गत देखें।

मसला 259. तहज्जुद पढ़नेवाली औरतें की श्रेष्ठता।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 296 के अन्तर्गत देखें।

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़ के बाद अज़कारे मसनूना

मसला 260-261. फ़र्ज़ नमाज़ से सलाम फेरने के बाद ऊंची आवाज़ में एक बार अल्लाहु अकबर और धीमी आवाज़ में तीन बार अस्तग़फ़िरुल्लाह कहना उसके बाद अल्लाहुम-म अन्तस्सलामु पढ़ना मसनून है।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : كُنْتُ أَعْرِفُ انْقِضَاءَ صَلاَةِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ بِالتَّكْبِيْرِ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं नबी अकरम सल्ल० की (फ़र्ज़) नमाज़ के समापन का अंदाज़ा आप सल्ल० के अल्लाहु अकबर कहने (की आवाज़) से लगाया करता था। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

عَنْ ثَوْبَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا انْصَرَفَ مِنْ صَلاَتِهِ إِسْتَغْفَرَ ثَلاَثًا وَ قَالَ : اَللّٰهُمَّ أَنْتَ السَّلاَمُ وَ مِنْكَ السَّلاَمُ تَبَارَكْتَ يَا ذَاالْجَلاَلِ وَالْإِكْرَامِ رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत सौबान रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब अपनी नमाज़ से फ़ारिग होते, तो तीन बार अस्तग़फ़िरुल्लाह कहते और फिर फ़रमाते "या अल्लाह तू सलामती है, सलामती तुझी से हासिल हो सकती है, ऐ बुज़ुर्गी और बख़्शिश के मालिक तेरी ज़ात बड़ी बरकत वाली है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 262-263. कूछ दूसरी मसनून दुआएं ये हैं :

١ – عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ أَخَذَ بِيَدِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فَقَالَ : إِنِّيْ لَأُحِبُّكَ يَا مُعَاذُ ! فَقُلْتُ : وَ أَنَا أُحِبُّكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ فَقَالَ : فَلاَ تَدَعْ أَنْ تَقُوْلَ فِيْ

1. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 343
2. किताबुल मस्जिद, बाब इस्तहबाबुज़िक्र बादिस्सलात।

Www.IslamicBooks.Website

دُبُرِ كُلِّ صَلاَةٍ ﴿ رَبِّ أَعِنِّيْ عَلَى ذِكْرِكَ وَ شُكْرِكَ وَ حُسْنِ عِبَادَتِكَ ﴾ رَوَاهُ أَحْمَدُ وَ أَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने मेरा हाथ पकड़ कर फ़रमाया "ऐ मुआज़! मुझे तुमसे मुहब्बत है।" मैंने अर्ज़ किया "या रसूलुल्लाह सल्ल०! मैं भी आप से मुहब्बत करता हूं।" आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया "अच्छा तो फिर हर (फ़र्ज़) नमाज़ के बाद ये कलिमात कहना न भूलना (अनुवाद) "ऐ मेरे पालनहार! मुझे अपना ज़िक्र, शुक्र और अपनी बेहतरीन उपासना करने का सौभाग्य प्रदान कर।' इसे अहमद, अबू दाऊद और नसाई ने रिवायत किया है।[1]

٢- عَنِ الْمُغِيْرَةِ بْنِ شُعْبَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ فِيْ دُبُرِ كُلِّ صَلاَةٍ مَكْتُوْبَةٍ ((لاَإِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ لاَ مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَ لاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلاَ يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ)) مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٢)

हज़रत मुग़ीरा बिन शौबा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ते थे (अनुवाद) "अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं। बादशाही उसी की है, प्रशंसा उसी के लिए सज़ावार है, वह हर चीज़ पर समर्थ है। या अल्लाह! अगर तू किसी को अपनी कृपा से नवाज़ना चाहे तो कोई तुझे कोई रोक नहीं सकता और अगर किसी को अपनी रहमत से वंचित कर दे तो कोई उसे नवाज़ नहीं सकता। किसी दौलतमन्द की दौलत उसे तेरे अज़ाब से नहीं बचा सकती।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

٣- عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَنْ سَبَّحَ اللهَ

1. सहीह सुनन नसाई, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1236
2. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 347

Www.IslamicBooks.Website

فِيْ دُبُرِ كُلِّ صَلاَةٍ ثَلاَثًا وَ ثَلاَثِيْنَ وَ حَمِدَ اللهَ ثَلاَثًا وَثَلاَثِيْنَ وَ كَبَّرَ اللهَ ثَلاَثًا ثَلاَثِيْنَ فَتِلْكَ تِسْعَةٌ وَّتِسْعُوْنَ وَ قَالَ تَمَامُ الْمِائَةِ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ غُفِرَتْ خَطَايَاهُ وَ إِنْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ .

رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٣)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जिसने नमाज़ के बाद 33 बार सुब्हानल्लाह, 33 बार अलहम्दुलिल्लाह, 33 बार अल्लाहु अकबर कहा उसने निन्नानवे की संख्या पूरी की फिर सौवीं बार ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व-ल-हुलहम्दु वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर कहा तो उसके सारे गुनाह, चाहे समुन्द्र के झाग के बराबर ही क्यों न हों, माफ़ कर दिए जाएंगे।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

٤- عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ أَمَرَنِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَنْ أَقْرَأَ بِالْمُعَوِّذَاتِ دُبُرَ كُلِّ صَلاَةٍ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ि० फ़रमाते हैं मुझे रसूलुल्लाह सल्ल० ने हर नमाज़ के बाद मुअव्विज़तैन पढ़ने का हुक्म दिया। इसे अहमद, अबू दाऊद, नसाई और बैहेक़ी ने रिवायत किया है।[2]

स्पष्टीकरण : मुअव्विज़ात से तात्पर्य क़ुरआन पाक की आख़िरी दो सूरतें क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़ और क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास हैं।

٥- عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ : مُعَقِّبَاتٌ لاَ يَخِيْبُ قَائِلُهُنَّ أَوْ فَاعِلُهُنَّ ثَلاَثٌ وَ ثَلاَثُوْنَ تَسْبِيْحَةً وَ ثَلاَثٌ وَ ثَلاَثُوْنَ تَحْمِيْدَةً وَ أَرْبَعٌ وَ ثَلاَثُوْنَ تَكْبِيْرَةً فِيْ دُبُرِ كُلِّ صَلاَةٍ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत काअब बिन उजरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "नमाज़ के बाद पढ़ी जाने वाली कुछ ऐसी दुआएं हैं

1. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 314
2. सहीह सुनन नसाई, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1268

Www.IslamicBooks.Website

जिन्हें पढ़ने वाला या उनका ज़िक्र करने वाला कभी भी (सवाब से) वंचित नहीं रहता (उनमें से एक यह है कि) 33 बार सुब्हानल्लाह, 33 बार अलहम्दुलिल्लाह और 34 बार अल्लाहु अकबर कहना।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

٦- عَنْ عَبْدُ اللهِ بْنِ زُبَيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا سَلَّمَ مِنْ صَلَاتِهِ يَقُوْلُ بِصَوْتِهِ الْأَعْلَى ((لَا إِلَـهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَـهُ لَـهُ الْمُلْكُ وَلَـهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ لَا إِلَـهَ إِلَّا اللهُ وَلَا نَعْبُدُ إِلاَّ إِيَّاهُ لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ)) رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٣)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० जब फ़र्ज़ नमाज़ से फ़ारिग़ होते, तो तेज़ आवाज़ से ये कलिमात अदा फ़रमाते (अनुवाद) "अल्लाह तआला के सिवा कोई इलाह नहीं वह वहदहू ला शरीक है बादशाही उसी की है, प्रशंसा उसी को सज़ावार है। वह हर चीज़ पर क़ादिर है। अल्लाह की तौफ़ीक़ के बिना न गुनाह से बचने की तौफ़ीक़ है न नेकी की शक्ति। अल्लाह तआला के सिवा कोई उपास्य नहीं। उसके सिवा हम किसी की उपासना नहीं करते। सब नेमतें उसकी तरफ़ से हैं। बुज़ुर्गी उसके लिए है। बेहतरीन प्रशंसा क़ा मालिक वही है उसके सिवा कोई उपास्य नहीं हम अपना दीन उसी के लिए ख़ालिस करते हैं। काफ़िरों को चाहे कितना ही बुरा क्यों न लगे।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

٧- عَنْ أَبِيْ أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْـهُ قَـالَ : قَـالَ رَسُـوْلُ اللهِ ﷺ مَـنْ قَـرَأَ آيَـةَ الْكُرْسِيِّ دُبُرَ كُلِّ صَلَاةٍ مَكْتُوْبَةٍ لَـمْ يَمْنَعْـهُ مِـنْ دُخُـوْلِ الْجَنَّـةِ إِلاَّ أَنْ يَمُوْتَ . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَابْنُ حَبَّانَ وَالطَّبَرَانِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत अबू उमामा रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जिसने हर नमाज़ के बाद आयतल कुर्सी पढ़ी उसे मौत के सिवा कोई

1. किताबुल मस्जिद, बाब इस्तहबाबुज़्ज़िक्र बादिस्सलात।
2. किताबुल मस्जिद, बाब इस्तहबाबुज़्ज़िक्र बादिस्सलात।

Www.IslamicBooks.Website

चीज़ जन्नत में जाने से नहीं रोक सकती।" इसे नसाई, इब्ने हिबान और तबरानी ने रिवायत किया है।[1-2]

٨- عَنْ أَبِيْ سَعِيْدِ ن الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كَانَ إِذَا سَلَّمَ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ الصَّلَاةِ قَالَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ﴿ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَ سَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَلَمِيْنَ ﴾ رَوَاهُ أَبُوْ يَعْلَى (۴)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं नबी अकरम सल्ल० जब (नमाज़ से) सलाम फेरते तो तीन बार यह कलिमात इरशाद फ़रमाते (अनुवाद) "तेरा इज़्ज़त वाला पालनहार उन तमाम दोषों से पाक है जो काफ़िर बयान करते हैं। सलामती हो रसूलों पर और प्रशंसा के योग्य केवल अल्लाह रब्बुल आलमीन की ज़ात है।" इसे अबू याला ने रिवायत किया है।[3]

---

1. सिलसिला अहादीस सहीहा, लिलअलबानी, दूसरा भाग, हदीस 972
2. आयतल कुर्सी के शब्द ये हैं :

اَللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَالَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ وَ لَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَؤُدُهُ حِفْظُهُمَا وَ هُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ

अनुवाद : "अल्लाह ही वास्तविक उपास्य है जिसके सिवा कोई उपास्य नहीं जो ज़िंदा और सब का थामने वाला है जिसे न ऊंघ आती है न नींद। उसी की मिल्कियत में ज़मीन व आसमान की चीज़ें हैं, कौन है जो उसकी इजाज़त के बिना उसके सामने शफ़ाअत कर सके वह जानता है जो उनके आगे है और जो उनके पीछे है। वह उसकी मर्ज़ी के बिना किसी चीज़ के ज्ञान को घेर नहीं सकते। उसकी कुर्सी की व्यापकता ने ज़मीन व आसमान को घेर रखा है। अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त से न थकता है और न उकताता है। वह बहुत बुलन्द और बहुत बड़ा है।" (सूरह बक़रा, आयत 255)

3. हिस्ने हसीन, हदीस 213

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़ में जाइज़ मामलों के मसाइल

मसला 264. नमाज़ में ख़ुदा के ख़ौफ़ से रोना सही है।

عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ الشِّخِّيْرِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : رَأَيْتُ النَّبِىَّ ﷺ يُصَلِّىْ وَ فِىْ صَدْرِهِ أَزِيْزٌ كَأَزِيْزِ الرَّحَى مِنَ الْبُكَآءِ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَ أَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِىُّ (١) (صحيح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन शख़्वीर रज़ि० फ़रमाते हैं, मैंने नबी अकरम सल्ल० को नमाज़ पढ़ते देखा। नमाज़ में रोने की वजह से आप सल्ल० के सीने से हांडी के जोश की सी आवाज़ आ रही थी। इसे अहमद, अबू दाऊद और नसाई ने रिवायत किया है।[1]

मसला 265. नमाज़ में बीमारी या बुढ़ापे आदि की वजह से लाठी पर टेक लगाना या कुर्सी आदि इस्तेमाल करना जाइज़ है।

عَنْ مُعَيْقِيْبٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِىِّ ﷺ فِى الرَّجُلِ الَّذِىْ يُسَوِّى التُّرَابَ حَيْثُ يَسْجُدُ قَالَ : إِنْ كُنْتَ فَاعِلاً فَوَاحِدَةً . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٢)

हज़रत उम्मे क़ैस बिन्ते मेहसन रज़ि० से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह सल्ल० की उम्र मुबारक जब ज़्यादा हो गई और मोटापा बढ़ गया तो आप नमाज़ की जगह पर असा (लाठी) रखते और दौराने नमाज़ उससे टेक लगा लेते। इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

मसला 266. बढ़ापे या बीमारी की वजह से नफ़िल नमाज़ का कुछ हिस्सा खड़े होकर और कुछ हिस्सा बैठकर पढ़ना जाइज़ है।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 318 के अन्तर्गत देखें।

मसला 267. कष्टदायक और हानिकारक चीज़ को नमाज़ की हालत में मारना जाइज़ है।

---

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी पहला भाग, हदीस 799
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 835

Www.IslamicBooks.Website

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اُقْتُلُوا الْأَسْوَدَيْنِ فِي الصَّلَاةِ ، اَلْحَيَّةَ وَالْعَقْرَبَ . رَوَاهُ اَحْمَدُ وَ اَبُوْدَاوُدَ (١) (صحيح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "नमाज़ में सांप और बिच्छू को मार दो।" इसे अहमद और अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[1]

मसला 268. किसी उज़्र के कारण सज्दे की जगह से मिट्टी या कंकर आदि हटानी हों तो एक बार दौराने नमाज़ ऐसा किया जा सकता है।

عَنْ مُعَيْقِيْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الرَّجُلِ الَّذِيْ يُسَوِّي التُّرَابَ حَيْثُ يَسْجُدُ قَالَ : إِنْ كُنْتَ فَاعِلاً فَوَاحِدَةً . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ

हज़रत मुअय्यक़ीब रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने सज्दे की जगह से मिट्टी बराबर करने वाले के बारे में इरशाद फ़रमाया "अगर ऐसा करना ज़रूरी हो, तो एक बार कर ले।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 269. इमाम को उसकी ग़लती से अवगत करने के लिए मर्दों को सुब्हानल्लाह और औरतों को ताली बजाने की इजाज़त है।

मसला 270. नमाज़ी ज़रूरत के समय, ग़ैर नमाज़ी को मुतवज्जह करना चाहे। जैसे बच्चे को आग के क़रीब जाने से रोकने के लिए किसी को मुतवज्जह करना हो तो मर्द को सुब्हानल्लाह और औरत को ताली बजाकर मुतवज्जह करने की इजाज़त है।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اَلتَّسْبِيْحُ لِلرِّجَالِ وَ التَّصْفِيْقُ لِلنِّسَاءِ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٣)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 814
2. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 318

Www.IslamicBooks.Website

"(नमाज़ में कोई ज़रूरत पेश आने पर) मर्दों के लिए सुब्हानल्लाह कहना और औरतों के लिए ताली बजाना है।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 271. नमाज़ में बच्चे को उठाने से नमाज़ बातिल नहीं होती।

عَنْ أَبِيْ قَتَادَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَـؤُمُّ النَّـاسَ وَ أُمَامَةُ بِنْتُ أَبِي الْعَاصِ عَلَى عَاتِقِهِ فَإِذَا رَكَعَ وَضَعَهَا وَ إِذَا رَفَعَ مِنَ السُّجُوْدِ أَعَادَهَا . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत अबू क़तादा रज़ि० फ़रमाते हैं मैंने नबी अकरम सल्ल० को इस हालत में नमाज़ पढ़ाते देखा है कि अबुल आस की बेटी उमामा रज़ि० (हुज़ूर अकरम सल्ल० की नवासी) आप सल्ल० के कंधों पर थी आप रुकूअ फ़रमाते, तो उमामा रज़ि० को उतार देते और जब सज्दे से फ़ारिग़ होते, तो फिर उसे उठा लेते। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 272. दौराने नमाज़ कोई सोच आने पर नमाज़ बातिल नहीं होती।

عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ الْعَصْـرَ فَلَمَّا سَلَّمَ قَامَ سَرِيْعًا وَ دَخَلَ عَلَـى بَعْـضِ نِسَـآئِهِ ثُـمَّ خَـرَجَ وَ رَأَى مَـا فِـيْ وُجُـوْهِ الْقَـوْمِ مِـنْ تَعَجُّبِهِمْ لِسُرْعَتِهِ فَقَالَ : ذَكَرْتُ وَ أَنَـا فِـى الصَّـلَاةِ تِـبْراً عِنْدَنَـا فَكَرِهْـتُ أَنْ يُمْسِـيَ أَوْ يَبِيْتَ عِنْدَنَا فَأَمَرْتُ بِقِسْمَتِهِ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٢)

हज़रत उक़बा बिन हारिस रज़ि० फ़रमाते हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ अस्र की नमाज़ पढ़ी। नमाज़ के बाद हुज़ूर अकरम सल्ल० फ़ौरन उठ खड़े हुए और पाक पत्नी रज़ि० के पास चले गए फिर वापस तशरीफ़ लाए। सहाबा किराम रज़ि० के चेहरों पर हैरत के आसार देखे, तो आप सल्ल० ने फ़रमाया "मुझे नमाज़ के दौरान याद आया कि हमारे घर में

1. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 244
2. किताबुल मस्जिद, बाब जवाज़।

Www.IslamicBooks.Website

सोना है और मुझे एक दिन या एक रात के लिए भी अपने घर में सोना रखना पसन्द नहीं, अतः मैंने उसे तक़सीम करने का हुक्म दिया है।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 273. शैतान के वसवसे डालने पर दौराने नमाज़ में तअव्वुज़ पढ़ना जाइज़ है।

قَالَ عُثْمَانُ بْنُ أَبِي الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَارَسُوْلَ اللهِ ﷺ إِنَّ الشَّيْطَانَ قَدْ حَالَ بَيْنِيْ وَ بَيْنَ صَلَاتِيْ وَ قِرَاءَتِيْ يُلَبِّسُهَا عَلَيَّ ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ ذَاكَ شَيْطَانٌ يُقَالُ لَهُ خِنْزَبٌ ، فَإِذَا أَحْسَسْتَهُ فَتَعَوَّذْ بِاللهِ مِنْهُ وَاتْفُلْ عَلَى يَسَارِكَ ثَلَاثًا قَالَ : فَفَعَلْتُ ذَلِكَ فَأَذْهَبَ اللهُ عَنِّيْ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَ مُسْلِمٌ

हज़रत उसमान बिन अबुल आस रज़ि० ने कहा "या रसूलुल्लाह सल्ल०! शैतान मेरे और मेरी नमाज़ के बीच हाइल होता है और मेरी क़िरअत में भ्रम डालता है।" हुज़ूर अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "उस शैतान का नाम "ख़न्ज़ब" है। जब उसकी उक्साहट महसूस करो, तो (दौराने नमाज़ ही) तअव्वुज़ (अऊज़ु बिल्लाहि मिन.....) पढ़ो और बाईं तरफ़ (दिल के ऊपर) तीन बार थूको।" हज़रत उसमान रज़ि० कहते हैं मैंने ऐसा ही किया और अल्लाह तआला ने शैतान को मुझसे दूर कर दिया। इसे अहमद और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 274. किसी मुसीबत के मौक़े पर फ़र्ज़ नमाज़, ख़ास तौर पर नमाज़े फ़ज्र की आख़िरी रकअत के क़ौमे में हाथ उठाकर बुलन्द आवाज़ से मुसलमानों के लिए दुआ और दुश्मनों के लिए बददुआ करना जाइज़ है।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 371. के अन्तर्गत देखें।

मसला 275. सुतरा और नमाज़ी के बीच से गुज़रने वाले को दौराने नमाज़ ही हाथ से रोक देना जाइज़ है।

1. किताबुल अमल फ़िस्सलात।
2. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 1448

Www.IslamicBooks.Website

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 124 के अन्तर्गत देखें।

मसला 276. सख़्त गर्मी की वजह से सज्दे की जगह कपड़ा रख लेना जाइज़ है।

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كُنَّا نُصَلِّيْ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِيْ شِدَّةِ الْحَرِّ فَإِذَا لَمْ يَسْتَطِعْ أَحَدُنَا أَنْ يُمَكِّنَ وَجْهَهُ مِنَ الْأَرْضِ بَسَطَ ثَوْبَهُ فَسَجَدَ عَلَيْهِ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं हम लोग नबी अकरम सल्ल० के साथ नमाज़ पढ़ते और सख़्त गर्मी में जब हममें से कोई भी अपनी पेशानी ज़मीन पर नहीं रख सकता था अपना कपड़ा बिछा लेता और उस पर सज्दा करता। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 177. जूते नापाकी से पाक हों तो जूतों समेत नमाज़ पढ़ना जाइज़ है।

عَنْ سَعِيْدِ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : سَأَلْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّيْ فِيْ نَعْلَيْهِ ؟ قَالَ : نَعَمْ ! مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि० कहते हैं मैंने हज़रत अनस रज़ि० से पूछा "क्या रसूलुल्लाह सल्ल० जूतों समेत नमाज़ पढ़ लिया करते थे?" उन्होंने जवाब दिया "हां।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

---

1. किताबुल अमल फ़िस्सलात, बाब फ़िस्सलातिस्सुजूद।
2. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 325

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़ में वर्जित मामलों के मसाइल

मसला 278. नमाज़ में कमर पर हाथ रखना मना है।

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : نَهٰی رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَنِ الْخَصْرِ فِی الصَّلَاةِ . مُتَّفَقٌ عَلَیْهِ (۱)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने नमाज़ में पहलू पर हाथ रखने से मना फ़रमाया है। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 279. नमाज़ में उंगलियां चटख़ाना या उंगलियों में उंगलियां डालना मना है।

عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا تَوَضَّأَ أَحَدُكُمْ فَأَحْسَنَ وُضُوْءَهُ ثُمَّ خَرَجَ عَامِدًا إِلَى الْمَسْجِدِ فَلَا يُشَبِّكَنَّ بَيْنَ أَصَابِعِهِ فَإِنَّهُ فِی الصَّلَاةِ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِیُّ وَ أَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِیُّ (۲) (صحیح)

हज़रत काअब बिन उजरा रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जब तुममें से कोई वुज़ू करके मस्जिद की तरफ़ जाए, तो रास्ते में उंगलियों में उंगलियां डाल कर न चले क्योंकि वह हालते नमाज़ में होता है।" इसे अहमद, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद और नसाई ने रिवायत किया है।[2]

मसला 280. नमाज़ में जमाई लेने से कोशिश भर परहेज़ करने का हुक्म है।

عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ نِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا تَثَاءَبَ أَحَدُكُمْ فِی الصَّلَاةِ فَلْيَكْظِمْ مَااسْتَطَاعَ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَدْخُلُ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (۳)

---

1. सहीह बुख़ारी, किताबुल अमल फ़िस्सलात, बाबुल हसर फ़िस्सलात।
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 526

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जब किसी को नमाज़ में जमाई आए, तो उसे कोशिश भर रोके क्योंकि उस समय शैतान मुंह में दाख़िल होता है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 281. नमाज़ में निगाहें आसमान की तरफ़ उठाना मना है।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لَيَنْتَهِيَنَّ أَقْوَامٌ عَنْ رَفْعِهِمْ أَبْصَارَهُمْ عِنْدَ الدُّعَاءِ فِي الصَّلَاةِ إِلَى السَّمَاءِ أَوْ لَيُخْطَفَنَّ أَبْصَارُهُمْ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "लोगों को हालते नमाज़ में दुआ मांगते हुए अपनी निगाहें आसमान की तरफ़ उठाने से बाज़ आ जाना चाहिए वरना उनकी निगाहें उचक ली जाएंगी।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 282. नमाज़ में मुंह ढांपना मना है।

मसला 283. नमाज़ में कपड़ा दोनों कंधों पर इस तरह लटकाना कि उसके दोनों सिरे सीधे ज़मीन की तरफ़ हों "सदल" कहलाता है। जो कि मना है।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 66 के अन्तर्गत देखें।

मसला 284. दौराने नमाज़ में कपड़े समेटना या बाल ठीक करना और बिला मज़बूरी कोई भी हरकत करना मना है।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 214 के अन्तर्गत देखें।

मसला 285. सज्दे की जगह से बार बार कंकरियां हटाना मना है।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 268 के अन्तर्गत देखें।

मसला 286. नमाज़ में इधर उधर देखना मना है।

---

1. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 345
2. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 336

Www.IslamicBooks.Website

عَنْ أَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لاَ يَزَالُ اللهُ مُقْبِلاً عَلَى الْعَبْدِ فِي الصَّلاَةِ مَا لَمْ يَلْتَفِتْ فَإِذَا صَرَفَ وَجْهَهُ إِنْصَرَفَ عَنْهُ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ خُزَيْمَةَ (١) (حسن)

हज़रत अबूज़र रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "अल्लाह तआला बन्दे की नमाज़ में बराबर मुतवज्जह रहता है जब तक बन्दा इधर उधर न देखे जब बन्दा तवज्जोह हटा लेता है, तो अल्लाह तआला भी उससे अपनी तवज्जोह हटा लेता है।" इसे अहमद, अबू दाऊद, नसाई और इब्ने ख़ुज़ैमा ने रिवायत किया है।[1]

मसला 287. तकिये पर सज्दा करना या गद्दे पर नमाज पढ़ना मना है।

मसला 288. इशारे की नमाज में सज्दे के लिए सिर को रुकूअ की निस्बत ज़्यादा झुकाना चाहिए।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ : لِمَرِيْضٍ صَلِّى عَلَى وِسَادَةٍ دَعْهَا عَنْكَ تَسْجُدْ عَلَى الْأَرْضِ إِنِ اسْتَطَعْتَ وَ إِلاَّ فَأَوْمِ إِيْمَاءً وَاجْعَلْ سُجُوْدَكَ أَخْفَضَ مِنْ رُكُوْعِكَ . رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ (٢) (صحيح)

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत है कि तकिये पर नमाज़ पढ़ने वाले मरीज़ से आपने फ़रमाया "उसे हटा दे अगर ज़मीन पर सज्दा कर सकता है तो कर और अगर (बीमारी की वजह से) ज़मीन पर सज्दा नहीं कर सकता तो नमाज़ इशारे से पढ़ और सज्दे के लिए सिर को रुकूअ की निस्बत ज़्यादा झुका।" इसे तबरानी ने रिवायत किया है।[2]

---

1. सहीह अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 555
2. सिलसिला अहादीस सहीहा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 323

Www.IslamicBooks.Website

सुन्नतों और नवाफ़िल की श्रेष्ठता

मसला 289. नमाज़े ज़ोहर से पहले चार और बाद में दो, नमाज़े मग़रिब के बाद दो, नमाज़े इशा के बाद दो और नमाज़े फ़ज्र से पहले दो रकअत सुन्नत (मुअक्किदा) पढ़ने वाले के लिए अल्लाह तआला जन्नत में घर बनाते हैं।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَنْ ثَابَرَ عَلَى ثِنْتَيْ عَشْرَةَ رَكْعَةً مِنَ السُّنَّةِ بَنَى اللهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ قَبْلَ الظُّهْرِ وَ رَكْعَتَيْنِ بَعْدَهَا وَ رَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْمَغْرِبِ وَ رَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْعِشَاءِ وَ رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ الْفَجْرِ . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ (١) (صحيح)

हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जो व्यक्ति बाक़ायदगी से बारह रकअत सुन्नतें अदा करे अल्लाह उसके लिए जन्नत में घर बनाता है। नमाज़े ज़ोहर से पहले चार रकअत, दो ज़ोहर के बाद, दो रकअत नमाज़े मग़रिब के बाद, दो रकअत नमाज़े इशा के बाद और दो रकअत नमाज़े फ़ज्र से पहले।" इसे तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

मसला 290. नमाज़े फ़ज्र से पहले दो सुन्नतें दुनिया जहां की हर चीज़ से ज़्यादा क़ीमती हैं।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ رَكْعَتَا الْفَجْرِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَ مَا فِيْهَا . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (٢) (صحيح)

हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "फ़ज्र की दो रकअत (सुन्नते मुअक्किदा) दुनिया और उसमें जो कुछ है उससे बेहतर हैं।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[2]

1. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 338
2. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 340

Www.IslamicBooks.Website

मसला 291. ज़ोहर से पहले चार सुन्नत अदा करने वाले के लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 304 से अन्तर्गत देखें।

मसला 292. ज़ोहर से पहले चार और बाद में चार रकअत सुन्नत अदा करने वाले पर अल्लाह तआला जहन्नम की आग हराम कर देते हैं।

عَنْ أُمِّ حَبِيْبَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : مَنْ صَلَّى قَبْلَ الظُّهْرِ أَرْبَعًا وَ بَعْدَهَا أَرْبَعًا حَرَّمَهُ اللهُ عَلَى النَّارِ . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (١) (صحيح)

हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "जो व्यक्ति ज़ोहर से पहले चार रकअत और बाद में चार रकअत (सुन्नतें) अदा करे अल्लाह उस पर आग हराम कर देता है।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

मसला 293. नमाज़े अस्र से पहले चार रकअत (सुन्नते ग़ैर मुअक्किदा) पढ़ने वाले पर अल्लाह तआला रहम फ़रमाते हैं।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : رَحِمَ اللهُ امْرَءً صَلَّى قَبْلَ الْعَصْرِ أَرْبَعًا . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (٢) (حسن)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जिस आदमी ने अस्र से पहले चार रकअतें पढ़ीं अल्लाह तआला उस पर रहम फ़रमाए।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[2]

मसला 294. नमाज़े चाश्त की चार रकअत अदा करने वाले के दिन भर के सारे काम अल्लाह तआला अपने ज़िम्मे ले लेते हैं।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 496 के अन्तर्गत देखें।

मसला 295. नमाज़े तरावीह पिछले तमाम सग़ीरा गुनाहों की मग़फ़िरत का कारण बनती है।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 391 के अन्तर्गत देखें।

मसला 296. रात के किसी भी हिस्से में सोकर उठने के बाद दो

1. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 901
2. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 354

Www.IslamicBooks.Website

रकअत नमाज़ पढ़ने वाले पति-पत्नी को अल्लाह तआला अधिकता से याद करने वालों में शुमार फ़रमाते हैं।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : إِذَا اسْتَيْقَظَ الرَّجُلُ مِنَ اللَّيْلِ وَ أَيْقَظَ امْرَأَتَهُ فَصَلَّيَا رَكْعَتَيْنِ كُتِبَا مِنَ الذَّاكِرِيْنَ اللهَ كَثِيْرًا وَالذَّاكِرَاتِ . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ وَ أَبُوْدَاوُدَ (١) (صحيح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "जब आदमी रात को उठे और अपनी बीवी को भी उठाए और दोनों दो रकअत नमाज़ अदा करें तो अल्लाह तआला उनका नाम कसरत से ज़िक्र करने वाले मर्दों और औरतों में लिख देते हैं।" इसे इब्ने माजा और अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[1]

मसला 297. एक सज्दा अदा करने से अल्लाह तआला इंसान के कर्म पत्र में एक नेकी की वृद्धि फ़रमाते हैं एक गुनाह मिटाते हैं और एक दर्जा बुलन्द करते हैं।

عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ : مَا مِنْ عَبْدٍ يَسْجُدُ اللهَ سَجْدَةً إِلاَّ كَتَبَ اللهُ لَهُ بِهَا حَسَنَةً وَ مَحَا عَنْهُ بِهَا سَيِّئَةً وَ رَفَعَ لَهُ بِهَا دَرَجَةً فَاسْتَكْثِرُوْا مِنَ السُّجُوْدِ . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (٢) (صحيح)

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है कि जो बन्दा अल्लाह तआला के लिए एक सज्दा करता है अल्लाह तआला उसकी एक नेकी लिखते हैं एक गुनाह मिटाते हैं और एक दर्जा बुलन्द करते हैं अतः अधिकता से सज्दे किया करो।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[2]

मसला 297-1. क़यामत के दिन फ़र्ज़ नमाज़ में कोताही या कमी की कसर सुन्नतों और नवाफ़िल से पूरी की जाएगी।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 18 के अन्तर्गत देखें।

1. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1098
2. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1171

Www.IslamicBooks.Website

सुन्नतों और नवाफ़िल के मसाइल

मसला 298. रसूलुल्लाह सल्ल० जो नफ़िल नमाज़ पाबन्दी से अदा फ़रमाते थे वही उम्मत के लिए सुन्नते मुअक्किदा है।

मसला 299. नमाज़े ज़ोहर से पहले चार, बाद में दो, नमाज़े मग़रिब के बाद दो, नमाज़े इशा के बाद दो और नमाज़े फ़ज्र से पहले दो, कुल बारह रकअतें पढ़ना मसनून हैं।

मसला 300. सुन्नतें और नवाफ़िल घर में अदा करनी बेहतर हैं।

मसला 301. नफ़िल नमाज़ बैठकर या खड़े होकर दोनों तरह पढ़ना जाइज़ है।

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ شَقِيْقٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ سَأَلْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنْ صَلاَةِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ عَنْ تَطَوُّعِهِ فَقَالَتْ : كَانَ يُصَلِّيْ فِيْ بَيْتِيْ قَبْلَ الظُّهْرِ اَرْبَعًا ثُمَّ يَخْرُجُ فَيُصَلِّيْ بِالنَّاسِ ثُمَّ يَدْخُلُ فَيُصَلِّيْ رَكْعَتَيْنِ وَ كَانَ يُصَلِّيْ بِالنَّاسِ الْمَغْرِبَ ثُمَّ يَدْخُلُ فَيُصَلِّيْ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ يُصَلِّيْ بِالنَّاسِ الْعَشَآءَ وَ يَدْخُلُ بَيْتِيْ فَيُصَلِّيْ رَكْعَتَيْنِ وَ كَانَ يُصَلِّيْ مِنَ اللَّيْلِ تِسْعَ رَكَعَاتٍ فِيْهِنَّ الْوِتْرُ وَ كَانَ يُصَلِّيْ لَيْلاً طَوِيْلاً قَائِمًا وَلَيْلاً طَوِيْلاً قَاعِدًا وَ كَانَ إِذَا قَرَءَ وَ هُوَ قَائِمٌ رَكَعَ وَ سَجَدَ وَ هُوَ قَائِمٌ وَ كَانَ إِذَا قَرَأَ قَاعِدًا رَكَعَ وَ سَجَدَ وَ هُوَ قَاعِدٌ وَ كَانَ إِذَا طَلَعَ الْفَجْرُ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन शफ़ीक़ रज़ि० कहते हैं मैंने हज़रत आइशा रज़ि० से रसूलुल्लाह सल्ल० की नफ़िल नमाज़ के बारे में सवाल किया तो हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, आप सल्ल० ज़ोहर से पहले चार रकअतें मेरे घर में अदा फ़रमाते, फिर मस्जिद जाकर लोगों को (फ़र्ज़) नमाज़ पढ़ाते, फिर वापस घर तशरीफ़ लाते और दो रकअत (ज़ोहर के बाद) अदा फ़रमाते, फिर लोगों को मग़रिब की नमाज़ पढ़ाते और मेरे यहां घर तशरीफ़ लाकर दो रकअतें पढ़ते थे। फिर लोगों को इशा की नमाज़ पढ़ाते और मेरे यहां घर तशरीफ़ लाकर दो रकअतें पढ़ते थे। हुज़ूर अकरम सल्ल० रात की नमाज़ (क़यामुल्लैल) नौ रकअत पढ़ते जिनमें

Www.IslamicBooks.Website

वित्र भी शामिल हैं। आप सल्ल० रात का काफ़ी हिस्सा खड़े होकर और काफ़ी हिस्सा बैठ कर नमाज़ पढ़ते। जब खड़े होकर क़िरअत फ़रमाते, तो रुकूअ और सुजूद भी खड़े होकर करते और जब बैठकर क़िरअत फ़रमाते, तो रुकूअ व सुजूद भी बैठकर अदा फ़रमाते। जब फ़ज्र उदय होती तो दो रकअत अदा फ़रमाते। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 302. नमाज़े ज़ोहर से पहले दो सुन्नतें अदा करना सुन्नत से साबित नहीं।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : صَلَّيْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَبْلَ الظُّهْرِ سَجْدَتَيْنِ وَ بَعْدَهَا سَجْدَتَيْنِ وَ بَعْدَ الْمَغْرِبِ سَجْدَتَيْنِ وَ بَعْدَ الْعِشَآءِ سَجْدَتَيْنِ وَ بَعْدَ الْجُمُعَةِ سَجْدَتَيْنِ فَأَمَّا الْمَغْرِبُ وَالْعِشَآءُ وَالْجُمُعَةُ فَصَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِيْ بَيْتِهِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ (۱)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ ज़ोहर से पहले दो रकअतें ज़ोहर के बाद दो रकअतें, मग़रिब के बाद दो रकअतें, इशा के बाद दो रकअतें और जुमा के बाद दो रकअतें पढ़ीं। मग़रिब, इशा और जुमा की दो रकअतें नबी सल्ल० के साथ घर पर अदा कीं। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

स्पष्टीकरण : पांच नमाज़ों में रकअतों की कुल तादाद यह है :

नमाज़	फ़र्ज़	फ़र्ज़ से पहले सुन्नते मुअक्किदा	फ़र्ज़ के बाद सुन्नते मुअक्किदा
1. फ़ज्र	2	2	—
2. ज़ोहर	4	4 या 2	2
3. अस्र	4	—	—
4. मग़रिब	3	—	2
5. इशा	4	—	2

1. किताबुस्सलातुल मुसाफ़िरीन।
2. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम लिलअलबानी, हदीस 372

Www.IslamicBooks.Website

मसला 303. सुन्नतें और नवाफ़िल दो-दो करके अदा करनी बेहतर है।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : صَلاَةُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ مَثْنَى مَثْنَى. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (٢) (صحيح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "रात और दिन की नमाज़ (नफ़िल) दो-दो रकअतें है।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[1]

मसला 304. एक सलाम से चार रकअत सुन्नत या नवाफ़िल अदा करनी भी सही हैं।

عَنْ أَبِيْ أَيُّوْبَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : أَرْبَعٌ قَبْلَ الظُّهْرِ لَيْسَ فِيْهِنَّ تَسْلِيْمٌ تُفْتَحُ لَهُنَّ أَبْوَابُ السَّمَآءِ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (١) (حسن)

हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "ज़ोहर से पहले चार रकअत (सुन्नत) जिनमें सलाम न हो उनके लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

मसला 305. फ़ज्र की सुन्नतों के बाद थोड़ी देर दाईं करवट लेटना मसनून है।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ رَكْعَتَيِ الْفَجْرِ فَلْيَضْطَجِعْ عَلَى يَمِيْنِهِ . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ (٢) (صحيح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "जब तुममें से कोई आदमी फ़ज्र की दो सुन्नत पढ़े, तो दाईं करवट लेट जाए।" इसे तिर्मिज़ी और अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[3]

---

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग हदीस 1151
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1131
3. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 344

Www.IslamicBooks.Website

मसला 306. नमाज़े जुमा के बाद चार या दो रकअतें पढ़नी मसनून हैं।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 356 के अन्तर्गत देखें।

मसला 307. नमाज़े ज़ोहर की पहली चार सुन्नतें फ़र्ज़ों से पहले न पढ़ी जा सकें तो फ़र्ज़ों के बाद पढ़ी जा सकती हैं।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا لَمْ يُصَلِّ أَرْبَعًا قَبْلَ الظُّهْرِ ، صَلاَهُنَّ بَعْدَهَا . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (٣) (حسن)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं "जब रसूलुल्लाह सल्ल० की ज़ोहर से पहले की चार रकअतें रह जातीं, तो ज़ोहर के बाद पढ़ लेते थे।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 308. अस्र से पहले चार रकअत सुन्नत आदि मुअक्किदा हैं।

عن ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ رَحِمَ اللهُ إِمْرَأً صَلَّى قَبْلَ الْعَصْرِ أَرْبَعًا . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَ أَبُوْدَاوُدَ (١) (حسن)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जिस आदमी ने अस्र से पहले चार रकअतें पढ़ीं अल्लाह तआला उस पर रहम फ़रमाए।" इसे अहमद, तिर्मिज़ी और अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

मसला 309. नमाज़े इशा के बाद दो रकअत सुन्नते मुअक्किदा हैं।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 289 के अन्तर्गत देखें।

मसला 310. नमाज़े मग़रिब से पहले दो रकअत नमाज़ सुन्नते मुअक्किदा हैं।

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ صَلُّوْا قَبْلَ صَلاَةِ الْمَغْرِبِ رَكْعَتَيْنِ. قَالَ: فِي الثَّالِثَةِ لِمَنْ شَاءَ كَرَاهِيَةَ أَنْ يَتَّخِذَهَا النَّاسُ سُنَّةً. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٢)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़ल रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल०

1. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 350
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1132

Www.IslamicBooks.Website

ने तीन बार फ़रमाया "मग़रिब से पहले दो रकअतें अदा करो।" तीसरी बार फ़रमाया "जिसका जी चाहे पढ़े।" हुज़ूर अकरम सल्ल० ने तीसरी बार यह शब्द इस ख़तरे को देखते हुए अदा फ़रमाए कि कहीं लोग उसे सुन्नते मुअक्किदा न बना लें। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 311. नमाज़े जुमा से पहले नवाफ़िल की संख्या मुक़र्रर नहीं, जो जितने चाहे पढ़े अलबत्ता दो रकअत तहीय्यतुल मस्जिद अदा करनी चाहिएं, चाहे ख़ुत्बा हो रहा हो।

मसला 312. नमाज़े जुमा से पहले सुन्नते मुअक्किदा अदा करना हदीस से साबित नहीं।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 351-352 के अन्तर्गत देखें।

मसला 313. नमाज़े वित्र के बाद बैठकर दो नफ़िल पढ़ने सुनत से साबित नहीं।

عَنْ أَبِيْ أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يُصَلِّيْهِمَا بَعْدَ الْوِتْرِ وَ هُوَ جَالِسٌ يَقْرَأُ فِيْهِمَا إِذَا زُلْزِلَتْ وَ قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُوْنَ . رَوَاهُ أَحْمَدُ (٣) (حسن)

हज़रत अबू उमामा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० वित्रों के बाद दो रकअत (नफ़िल) बैठकर पढ़ा करते थे और उनमें सूरह ज़िलज़ाल और क़ुल या अय्युहल काफ़िरून तिलावत फ़रमाते। इसे अहमद ने रिवायत किया है।[2]

मसला 314. सुन्नतें और नवाफ़िल सवारी पर बैठकर अदा किए जा सकते हैं।

मसला 315. नमाज़ शुरू करने से पहले सवारी का रुख़ क़िबले की तरफ़ कर लेना चाहिए बाद में चाहे किसी तरह हो जाए।

मसला 316. अगर सवारी का रुख़ क़िबले की तरफ़ करना मुमकिन न हो तो फिर जिस तरफ़ रुख़ हो नमाज़ अदा कर लेना जाइज़ है।

2. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलज़ुबैदी, हदीस 619

3. मिश्कातुल मसाबीह, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1278

Www.IslamicBooks.Website

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 420-422 के अन्तर्गत देखें।

मसला 317. सुन्नतों और नवाफ़िल में क़ुरआन करीम से देखकर तिलावत करना जाइज़ है।

كَانَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا يَؤُمُّهَا عَبْدُهَا ذَكْوَانُ مِنَ الْمُصْحَفِ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत आइशा रज़ि० का ग़ुलाम ज़कवान, क़ुरआन करीम से देखकर नमाज़ पढ़ाता था। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 318. किसी मज़बूरी की बिना पर नफ़िल नमाज़ कुछ बैठकर कुछ खड़े होकर अदा की जा सकती है।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : مَا رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقْرَأُ فِيْ شَيْءٍ مِنْ صَلَاةِ اللَّيْلِ جَالِسًا حَتّٰى إِذَا كَبُرَ قَرَأَ جَالِسًا حَتّٰى إِذَا بَقِيَ عَلَيْهِ مِنَ السُّوْرَةِ ثَلَاثُوْنَ أَوْ أَرْبَعُوْنَ آيَةً قَامَ فَقَرَأَهُنَّ ثُمَّ رَكَعَ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं "मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को रात की नमाज़ कभी बैठकर पढ़ते नहीं देखा। अलबत्ता जब आप सल्ल० बूढ़े हो गए, तो क़िरअत बैठकर फ़रमाते और जब तीस चालीस आयतें बाक़ी रह जातीं, तो खड़े हो जाते और बाक़ी क़िरअत पूरी करके रुकूअ फ़रमाते।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 319. किसी मज़बूरी बैठकर नमाज़ पढ़ने से आधा सवाब मिलता है।

عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ سَأَلْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ وَ هُوَ قَاعِدٌ قَالَ : **مَنْ صَلّٰى قَائِمًا فَهُوَ أَفْضَلُ وَ مَنْ صَلّٰى قَاعِدًا فَلَهُ نِصْفُ أَجْرِ الْقَائِمِ وَ مَنْ صَلّٰى نَائِمًا فَلَهُ نِصْفُ أَجْرِ الْقَاعِدِ** . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ि० कहते हैं कि मैंने रसूले अकरम सल्ल० से बैठकर नमाज़ पढ़ने वाले आदमी के बारे में सवाल किया, तो

---

1. किताबुल अज़ान, बाब इमामतुल अब्द वल मौला।
2. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 384

Www.IslamicBooks.Website

रसूले अकरम सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया "खड़े होकर नमाज़ पढ़ना बेहतर है जबकि बैठकर पढ़ने से आधा और लेटकर पढ़ने से एक चौथाई सवाब मिलता है।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 320. नवाफ़िल में लम्बा क़याम पसन्दीदा है।

عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : سُئِلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَيُّ الصَّلَاةِ أَفْضَلُ ؟ قَالَ طُوْلُ الْقُنُوْتِ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० से पूछा गया "बेहतर नमाज़ कौन सी है?" आप सल्ल० ने फ़रमाया "जिसमें क़याम लम्बा किया जाए।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

عَنِ الْمُغِيْرَةِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : إِنْ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ لَيَقُوْمُ لِيُصَلِّيَ حَتّٰى تَرِمَ قَدَمَاهُ أَوْ سَاقَاهُ فَيُقَالُ لَهُ فَيَقُوْلُ : أَفَلَا أَكُوْنُ عَبْدًا شَكُوْرًا رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٢)

हज़रत मुग़ीरा रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० नमाज़ के लिए खड़े होते, तो आप सल्ल० के पांव या पिंडलियां सूज जाती। आप सल्ल० से इस बारे में कहा जाता, तो आप सल्ल० फ़रमाते, क्या मैं अल्लाह तआला का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[3]

मसला 321. नफ़िल इबादत, जो हमेशा की जाए, पसन्दीदा है, चाहे कम ही हो।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ سُئِلَ أَيُّ الْعَمَلِ أَحَبُّ إِلَى اللهِ تَعَالٰى ؟ قَالَ : أَدْوَمُهُ وَ إِنْ قَلَّ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٣)

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्ल० से मालूम किया गया "कौन सा अमल अल्लाह तआला को बहुत पसन्द है?" फ़रमाया "जो हमेशा किया जाए, चाहे थोड़ा ही हो।" इसे मुस्लिम ने

---

1. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग हदीस 305
2. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 330
3. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलज़ुबैदी, हदीस 595

Www.IslamicBooks.Website

रिवायत किया है।[1]

मसला 322. सुन्नत और नफ़िल नमाज़ घर में अदा करनी बेहतर है।

عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ : صَلُّوْا أَيُّهَا النَّاسُ فِيْ بُيُوْتِكُمْ فَإِنَّ أَفْضَلَ الصَّلَاةِ صَلَاةُ الْمَرْءِ فِيْ بَيْتِهِ إِلَّا الْمَكْتُوْبَةَ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٤)

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "कि ऐ लोगो! अपने घरों में नमाज़ पढ़ा करो इसलिए कि सिवाए फ़र्ज़ नमाज़ों के बाक़ी नमाज़ (अर्थात सुन्नतें और नवाफ़िल) घर में अदा करनी बेहतर है।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 323. नमाज़े फ़ज्र के बाद सूरज बुलन्द होने तक और अस्र की नमाज़ के बाद सूरज अस्त होने तक कोई नफ़िल नमाज़ अदा नहीं करनी चाहिए।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ نَهَى عَنِ الصَّلَاةِ بَعْدَ الْعَصْرِ حَتَّى تَغْرُبَ الشَّمْسُ وَ عَنِ الصَّلَاةِ بَعْدَ الصُّبْحِ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने नमाज़े अस्र के बाद नमाज़ पढ़ने से मना फ़रमाया यहां तक कि सूरज अस्त हो जाए और नमाज़े फ़ज्र के बाद नमाज़ पढ़ने से मना फ़रमाया यहां तक कि सूरज उदय हो जाए। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 324. दौराने सफ़र सुन्नतें और नवाफ़िल माफ़ हैं।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 424 के अन्तर्गत देखें।

---

1. किताबुल मुसाफ़िरीन, बाब फ़ज़ीलतुल अमल वद्दाइम।
2. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 447
3. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 218

Www.IslamicBooks.Website

सज्दा सहू (भूल के सज्दे) के मसाइल

मसला 325. रकआत की तादाद में शक पड़ने पर कम रकआत का यक़ीन हासिल करने के बाद नमाज़ पूरी करनी चाहिए और सलाम फेरने से पहले सज्दा सहू अदा करना चाहिए।

मसला 326. सलाम के बाद सहू के बारे में कलाम नमाज़ को बातिल नहीं करती।

मसला 327. इमाम की भूल पर सज्दा सहू है, मुक़तदी की भूल पर नहीं।

मसला 328. सज्दा सहू सलाम फेरने से पहले या बाद दोनों तरह जाइज़ है।

मसला 329. सलाम फेरने के बाद सज्दा सहू करने के लिए दोबारा तशह्हुद पढ़ना सुन्नत से साबित नहीं।

عَنْ أَبِيْ سَعِيْدِ ن الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا شَكَّ أَحَدُكُمْ فِيْ صَلَاتِهِ فَلَمْ يَدْرِ كَمْ صَلَّى ثَلَاثًا أَمْ أَرْبَعًا فَلْيَطْرَحِ الشَّكَّ وَلْيَبْنِ عَلَى مَا اسْتَيْقَنَ ثُمَّ يَسْجُدُ سَجْدَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ يُسَلِّمَ فَإِنْ كَانَ صَلَّى خَمْسًا شَفَعْنَ لَهُ صَلَاتَهُ وَ إِنْ كَانَ صَلَّى إِتْمَامًا لِأَرْبَعٍ كَانَتَا تَرْغِيْمًا لِلشَّيْطَانِ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जब किसी को अपनी नमाज़ की रकअतों में शक पड़ जाए और याद न रहे कि तीन पढ़ी हैं या चार, तो उसे (पहले) अपना शक दूर करना चाहिए फिर यक़ीन हासिल करने के बाद अपनी नमाज़ पूरी करनी चाहिए और सलाम फेरने से पहले दो सज्दे अदा कर लेने चाहिएं। अगर नमाज़ी ने पांच रकअतें पढ़ी हैं तो यह दो सज्दे मिलकर छः रकअतें हो जाएंगी। अगर चार पढ़ी हैं तो यह दो सज्दे शैतान की ज़िल्लत का कारण बनेंगे।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

1. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 351

Www.IslamicBooks.Website

عَنْ أَبِيْ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى الظُّهْرَ خَمْسًا فَقِيْلَ لَهُ : أَ زِيْدَ فِي الصَّلَاةِ ؟ قَالَ : لَا وَ مَا ذَاكَ ؟ فَقَالُوْا : صَلَّيْتَ خَمْسًا فَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ بَعْدَ مَا سَلَّمَ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَ مُسْلِمٌ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि एक बार नबी अकरम सल्ल० ने ज़ोहर की पांच रकअतें पढ़ लीं। आप सल्ल० से अर्ज़ किया गया "क्या नमाज़ में ज़्यादती हो गई है?" आप सल्ल० ने फ़रमाया "नहीं ज़्यादती कैसी?" लोगों ने अर्ज़ किया "आप सल्ल० ने पांच रकअतें पढ़ी हैं।" अतएव आप सल्ल० ने सलाम फेरने के बाद दो सज्दे किए। इसे बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, नसाई और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 330. पहला तशह्हुद भूल कर नमाज़ी क़याम के लिए सीधा खड़ा हो जाए तो तशह्हुद के लिए वापस नहीं आना चाहिए बल्कि सलाम फेरने से पहले सज्दा सहू कर लेना चाहिए।

मसला 331. अगर पूरी तरह खड़े होने से पहले तशह्हुद में बैठना याद आ जाए तो बैठ जाना चाहिए वरना सज्दा सहू लाज़िम नहीं आता।

عَنِ الْمُغِيْرَةِ بْنِ شُعْبَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا قَامَ أَحَدُكُمْ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ فَلَمْ يَسْتَتِمَّ قَائِمًا فَلْيَجْلِسْ وَ إِنِ اسْتَتَمَّ قَائِمًا فَلَا يَجْلِسْ وَ يَسْجُدُ سَجْدَتَيِ السَّهْوِ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ مَاجَةَ (٢) (صحيح)

हज़रत मुग़ीरा बिन शौबा रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जब कोई आदमी दो रकअतों के बाद (तशह्हुद पढ़े बिना) खड़ा होने लगे और अभी पूरी तरह खड़ा न हुआ हो तो बैठ जाए। लेकिन अगर पूरी तरह खड़ा हो गया हो तो फिर न बैठे। अलबत्ता सलाम फेरने से पहले भूल के दो सज्दे अदा करे।" इसे अहमद, अबू दाऊद और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[2]

मसला 332. नमाज़ में कोई सोच आने पर सज्दा सहू नहीं है।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 272 के अन्तर्गत देखें।

---

1. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 321
2. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 994

Www.IslamicBooks.Website

क़ज़ा नमाज़ के मसाइल

मसला 333. अगर किसी मजबूरी की वजह से नमाज़ समय पर अदा न की जा सके तो मौक़ा मिलते ही फ़ौरन अदा करनी चाहिए।

मसला 334. क़ज़ा नमाज़ जमाअत से अदा करना जाइज़ है।

عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ جَاءَ يَوْمَ الْخَنْدَقِ بَعْدَ مَا غَرَبَتِ الشَّمْسُ فَجَعَلَ يَسُبُّ كُفَّارَ قُرَيْشٍ قَالَ يَا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ مَا كِدْتُ أُصَلِّيْ الْعَصْرَ حَتّٰى كَادَتِ الشَّمْسُ تَغْرُبُ . قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : وَاللهِ مَا صَلَّيْتُهَا فَقُمْنَا إِلَى بُطْحَانَ فَتَوَضَّأْنَا لَهَا فَصَلَّى الْعَصْرَ بَعْدَ مَا غَرَبَتِ الشَّمْسُ ثُمَّ صَلَّى بَعْدَهَا الْمَغْرِبَ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० रिवायत करते हैं कि ग़ज़वा ख़न्दक़ के दिन हज़रत उमर रज़ि० सूरज अस्त होने के बाद क़ुरैश को कोसते हुए आए और अर्ज़ किया "या रसूलुल्लाह सल्ल०! मैंने सूरज अस्त होते हुए नमाज़े अस्र अदा की।" रसूले अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "वल्लाह! मैंने तो नमाज़े अस्र अदा नहीं की।" फिर हम सब (मक़ाम) बुतहान में आए, आप सल्ल० ने और हम सबने वुज़ू किया और सूरज अस्त होने के बाद पहले नमाज़े अस्र (जमाअत से) पढ़ी फिर नमाज़ मग़रिब अदा की। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 335. भूल या नींद की वजह से नमाज़ क़ज़ा हो जाए तो याद आते ही (या नींद से आंख खुलते ही) तुरन्त अदा करनी चाहिए।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَنْ نَسِيَ صَلَاةً فَلْيُصَلِّ إِذَا ذَكَرَهَا . لَا كَفَّارَةَ لَهَا إِلَّا ذٰلِكَ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जो

1. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिज़्ज़ुबैदी, हदीस 365

Www.IslamicBooks.Website

व्यक्ति नमाज़ पढ़ना भूल जाए उसे जब याद आए नमाज़ पढ़ ले। भूली हुई नमाज़ का कोई कफ़्फ़ारा नहीं मगर उसे अदा कर लेना ही उसका कफ़्फ़ारा है।'' इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 336. नमाज़े फ़ज्र की पहली दो सुन्नतें फ़र्ज़ों से पहले न पढ़ी जा सकें तो फ़र्ज़ों के बाद ये सूरज निकलने के बाद अदा की जा सकती हैं।

عَنْ قَيْسِ ابْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ رَأَى النَّبِيُّ ﷺ رَجُلاً يُصَلِّيْ بَعْدَ صَلَاةِ الصُّبْحِ رَكْعَتَيْنِ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ **صَلَاةُ الصُّبْحِ رَكْعَتَانِ** فَقَالَ الرَّجُلُ : اِنِّيْ لَمْ أَكُنْ صَلَّيْتُ الرَّكْعَتَيْنِ اللَّتَيْنِ قَبْلَهُمَا فَصَلَّيْتُهُمَا الْآنَ فَسَكَتَ رَسُوْلُ اللّٰهِ . رَوَاهُ اَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ (٢) (صحيح)

हज़रत क़ैस बिन उमर रज़ि० कहते हैं नबी अकरम सल्ल० ने एक आदमी को सुबह की नमाज़ के बाद दो रकअतें पढ़ते देखा, तो फ़रमाया ''सुबह की नमाज़ तो दो रकअत है?'' उस आदमी ने जवाब दिया ''मैंने फ़र्ज़ नमाज़ से पहले की दो रकअतें नहीं पढ़ी थीं, अतः वह अब पढ़ी हैं।'' रसूलुल्लाह सल्ल० यह जवाब सुनकर ख़ामोश हो गए (अर्थात इसकी इजाज़त दे दी) इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

स्पष्टीकरण : सहाबी के किसी कार्य पर रसूलुल्लाह सल्ल० का ख़ामोश रहना मुहद्दिसीन की परिभाषा में ''सुन्नत तक़रीरी'' कहलाता है।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ **مَنْ لَمْ يُصَلِّ رَكْعَتَيِ الْفَجْرِ فَلْيُصَلِّهِمَا بَعْدَ مَا تَطْلُعُ الشَّمْسُ** . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (٣) (صحيح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया ''जिसने फ़ज्र की सुन्नतें न पढ़ी हों वह सूरज निकलने के बाद पढ़ ले।'' इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[3]

---

1. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 397
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1128
3. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 347

Www.IslamicBooks.Website

मसला 337. रात को वित्र अदा न किए हों तो सुबह के समय पढ़े जा सकते हैं।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 380 के अन्तर्गत देखें।

मसला 338. हाइज़ा (मासिक धर्म वाली) के लिए हैज़ के दिनों की नमाज़ की क़ज़ा नहीं है।

عَنْ مُعَاذَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ امْرَأَةً قَالَتْ لِعَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَتَجْزِئُ إِحْدَانَا صَلَاتَهَا إِذَا طَهُرَتْ فَقَالَتْ أَحَرُورِيَّةٌ أَنْتِ كُنَّا تَحِيضُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَلَا يَأْمُرُنَا بِهِ أَوْ قَالَتْ فَلَا نَفْعَلُهُ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत मुआज़ा रज़ि० रिवायत करती हैं कि एक औरत ने हज़रत आइशा रज़ि० से मालूम किया "औरत हैज़ से पाक हो तो उसे क़ज़ा नमाज़ें पढ़नी चाहिएं?" हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया "क्या तू ख़ारजी है?" हम रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ होतीं हमें हैज़ आता मगर हमें क़ज़ा नमाज़ पढ़ने का हुक्म नहीं दिया जाता था।" या हज़रत आइशा रज़ि० ने यूं फ़रमाया "हम क़ज़ा नमाज़ नहीं पढ़ती थीं।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 339. अज्ञानता के दिनों में अदा न की गई नमाज़ों की क़ज़ा (क़ज़ाए उम्री) सुन्नत से साबित नहीं।

---

1. किताबुल हैज़, बाब ला तक़ज़ा ख़ाइज़ुस्सला।

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़े जुमा के मसाइल

मसला 340. नमाज़े जुमा, हफ़्ता भर के समय में होने वाले तमाम छोटे गुनाहों की मग़फ़िरत का कारण बनती है।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ الصَّلَوَاتُ الْخَمْسُ وَالْجُمُعَةُ إِلَى الْجُمُعَةِ وَ رَمَضَانُ إِلَى رَمَضَانَ مُكَفِّرَاتٌ مَا بَيْنَهُنَّ إِذَا اجْتَنَبَ الْكَبَائِرَ .

رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "हर नमाज़ पिछली नमाज़ तक के, जुमा हफ़्ता भर के और रमज़ान साल भर के, गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं बशर्ते कि कबीरा (बड़े) गुनाहों से बचा जाए।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 341. बिना किसी मजबूरी जुमा छोड़ने वालों के घरों को रसूले अकरम सल्ल० ने जला डालने की इच्छा व्यक्त फ़रमायी।

عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِقَوْمٍ يَتَخَلَّفُوْنَ عَنِ الْجُمُعَةِ لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ آمُرَ رَجُلاً يُصَلِّيْ بِالنَّاسِ ثُمَّ أُحَرِّقَ عَلَى رِجَالٍ يَتَخَلَّفُوْنَ عَنِ الْجُمُعَةِ بُيُوْتَهُمْ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने जुमा न पढ़ने वालों के बारे में फ़रमाया "मैं चाहता हूं कि किसी को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दूं फिर जुमा न पढ़ने वालों को उनके घरों समेत जला डालूं।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 342. शरअी मजबूरी के बिना तीन जुमे छोड़ने वाले के दिल पर अल्लाह तआला गुमराही की मुहर लगा देते हैं।

---

1. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलज़ुबैदी, हदीस 330
2. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 326

Www.IslamicBooks.Website

عَنْ أَبِي الْجَعْدِ الضَّمْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَنْ تَرَكَ ثَلَاثَ جُمَعٍ تَهَاوُنًا بِهَا طَبَعَ اللهُ عَلَى قَلْبِهِ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ وَالدَّارِمِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत अबू जअद ज़मरी रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जिस व्यक्ति ने तीन जुमे ग़फ़लत की वजह से छोड़ दिए अल्लाह तआला उसके दिल पर मुहर लगा देता है।" इसे अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई, इब्ने माजा और दारमी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 343. ग़ुलाम, औरत, बच्चे, बीमार और मुसाफ़िर के अलावा जुमा हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لَيْسَ عَلَى الْمُسَافِرِ جُمُعَةٌ . رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ (٢) (صحيح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "कि मुसाफ़िर पर जुमा नहीं है।" इसे तबरानी ने रिवायत किया है।[2]

عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اَلْجُمُعَةُ حَقٌّ وَاجِبٌ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ فِيْ جَمَاعَةٍ إِلاَّ عَلَى أَرْبَعَةٍ عَبْدٍ مَمْلُوْكٍ أَوْ اِمْرَأَةٍ أَوْ صَبِيٍّ أَوْ مَرِيْضٍ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (٣) (صحيح)

हज़रत तारिक़ बिन शहाब रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "ग़ुलाम, औरत बच्चे और बीमार के अलावा जमाअत के साथ जुमा पढ़ना हर मुसलमान पर वाजिब है।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[3]

मसला 344. जुमा के दिन ग़ुस्ल करना, मिस्वाक करना और ख़ुश्बू

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 928
2. सहीह जामेअ सग़ीर, लिलअलबानी, पांचवां भाग, हदीस 5281
3. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 942

Www.IslamicBooks.Website

लगाना मसनून है।

عَنْ أَبِيْ سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : إِنَّ الْغُسْلَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ عَلَى كُلِّ مُحْتَلِمٍ وَالسِّوَاكَ وَ أَنْ يَمَسَّ مِنَ الطِّيْبِ مَا يَقْدِرُ عَلَيْهِ . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत अबू सईद रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "हर बालिग़ (मुसलमान) को जुमा के दिन ग़ुस्ल करना चाहिए, मिस्वाक करना चाहिए और जितनी ख़ुश्बू उपलब्ध हो लगानी चाहिए। इसे नसाई ने रिवायत किया है।[1]

मसला 345. जुमा के दिन रसूलुल्लाह सल्ल० पर अधिकता से दुरूद भेजने का हुक्म है।

عَنْ أَبِيْ مَسْعُوْدٍ الأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَكْثِرُوْا الصَّلاَةَ عَلَيَّ فِيْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَإِنَّهُ لَيْسَ يُصَلِّى عَلَيَّ أَحَدٌ يَوْمَ الْجُمُعَةِ إِلاَّ عُرِضَتْ عَلَيَّ صَلاَتُهُ . رَوَاهُ الْحَاكِمُ وَالْبَيْهَقِيُّ (٢) (صحيح)

हज़रत अबू मसऊद अन्सारी रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जुमा के दिन मुझ पर अधिकता से दुरूद भेजा करो, जो आदमी जुमा के दिन मुझ पर दुरूद भेजता है, वह मेरे सामने पेश किया जाता है।" इसे हाकिम और बैहेक़ी ने रिवायत किया है।[2]

मसला 346. जुमा में दो ख़ुत्बे हैं, दोनों ख़ुत्बे खड़े होकर देना मसनून है।

عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ كَانَتْ لِلنَّبِيِّ ﷺ خُطْبَتَانِ يَجْلِسُ بَيْنَهُمَا يَقْرَأُ الْقُرْآنَ وَ يُذَكِّرُ النَّاسَ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٣)

हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ि० फ़रमाते हैं नबी अकरम सल्ल० दो ख़ुत्बे देते थे और दोनों के बीच बैठते थे। ख़ुत्बे में क़ुरआन पढ़कर लोगों

1. सहीह सुनन नसाई, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1310
2. सहीह जामेअ सग़ीर, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1219

Www.IslamicBooks.Website

को नसीहत फ़रमाते। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 347. इमाम को मिंबर पर चढ़कर सबसे पहले नमाज़ियों को सलाम करना चाहिए।

عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا صَعِدَ الْمِنْبَرَ سَلَّمَ . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَة (٤) (حسن)

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० जब मिंबर पर चढ़ते तो सलाम करते। इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[2]

मसला 348. ख़ुत्बा जुमा आम ख़ुत्बे की तुलना में संक्षिप्त और नमाज़े जुमा आम नमाज़ की तुलना में लम्बी पढ़ानी चाहिए।

عَنْ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ إِنَّ طُوْلَ صَلَاةِ الرَّجُلِ وَ قِصَرَ خُطْبَتِهِ مَئِنَّةٌ مِّنْ فِقْهِهِ فَأَطِيْلُوا الصَّلَاةَ وَاقْصِرُوا الْخُطْبَةَ رَوَاهُ أَحْمَدُ وَ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है कि (जुमा) का ख़ुत्बा संक्षिप्त और नमाज़ लम्बी पढ़ाना इमाम की अक़्लमन्दी की दलील है। अतः ख़ुत्बा संक्षिप्त दो और नमाज़ लम्बी पढ़ो। इसे अहमद और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[3]

मसला 349. जुमा के दिन ज़वाल से पहले, ज़वाल के समय और ज़वाल के बाद सभी समयों में नमाज़ पढ़नी जाइज़ है।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُصَلِّي الْجُمُعَةَ حِيْنَ تَمِيْلُ الشَّمْسُ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبُخَارِيُّ وَ أَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ (٢) (صحيح)

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० नमाज़े जुमा सूरज ढले पढ़ाते थे। इसे अहमद, बुख़ारी, अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने

1. किताबुल जुमा, बाब ज़िक्र ख़ुत्बैन क़ब्लस्सलात।
2. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 910
3. किताबुल जुमा, बाब तख़्फ़ीफ़ुस्सलात वल ख़ुत्बा।

Www.IslamicBooks.Website

रिवायत किया है।[1]

स्पष्टीकरण : और हदीसें मसला नं० 99 के अन्तर्गत देखें।

मसला 350. जुमा का ख़ुत्बा शुरू हो चुका हो तो आने वाले नमाज़ी को दौराने ख़ुत्बा संक्षिप्त सी दो रकअत (तहीय्यतुल मस्जिद) नमाज़ पढ़कर बैठना चाहिए।

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ جَاءَ سُلَيْكُ الْغَطَفَانِيُّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَخْطُبُ فَجَلَسَ فَقَالَ لَهُ : يَا سُلَيْكُ قُمْ فَارْكَعْ رَكْعَتَيْنِ وَ تَجَوَّزْ فِيهِمَا ثُمَّ قَالَ : إِذَا جَاءَ أَحَدُكُمْ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَالْإِمَامُ يَخْطُبُ فَلْيَرْكَعْ رَكْعَتَيْنِ وَلْيَتَجَوَّزْ فِيهِمَا

رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٣)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि जुमा के दिन रसूलुल्लाह सल्ल० ख़ुत्बा इरशाद फ़रमा रहे थे इतने में सुलैक ग़तफ़ानी आए और बैठ गए। आप सल्ल० ने फ़रमाया "ऐ सुलैक! उठकर संक्षिप्त सी दो रकअत अदा कर लो।" फिर आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया "जब तुम जुमा के दिन आओ और इमाम ख़ुत्बा दे रहा हो तो दो रकअत संक्षिप्त सी नमाज़ अदा करो।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 351. नमाज़े जुमा से पहले नवाफ़िल की संख्या मुक़र्रर नहीं अलबत्ता दो रकअत तहीय्यतुल मस्जिद अदा करने की ताकीद की गई है चाहे ख़ुत्बा हो रहा हो।

मसला 352. नमाज़े जुमा से पहले सुन्नते मुअक्किदा अदा करना हदीस से साबित नहीं।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : مَنِ اغْتَسَلَ ثُمَّ أَتَى الْجُمُعَةَ فَصَلَّى مَا قُدِّرَ لَهُ ثُمَّ أَنْصَتَ حَتَّى يَفْرُغَ الْإِمَامُ مِنْ خُطْبَتِهِ ثُمَّ يُصَلِّيْ مَعَهُ غُفِرَ لَهُ مَا بَيْنَهُ وَ بَيْنَ الْجُمُعَةِ الْأُخْرَى وَ فَضْلُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

1. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 415
2. किताबुल जुमा, बाब तहीय्या वल इमाम यख़तब।

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "जिसने जुमा के दिन ग़ुस्ल किया, फिर मस्जिद में आया और जितनी नमाज़ उसके मुक़द्दर में थी, अदा की फिर ख़ुत्बा ख़त्म होने तक ख़ामोश रहा और इमाम के साथ फ़र्ज़ नमाज़ अदा की उसके जुमा से जुमा तक गुनाह बख़्श दिए जाते हैं और मज़ीद तीन दिन की और कृपा प्रदान की जाती है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 353. दौराने ख़ुत्बा किसी को ऊंघ आ जाए तो उसे अपनी जगह बदल लेनी चाहिए।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا نَعَسَ أَحَدُكُمْ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَلْيَتَحَوَّلْ مِنْ مَجْلِسِهِ ذَلِكَ . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (٢) (صحيح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जिसे जुमा के समय ऊंघ आए वह अपनी जगह बदल ले।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[2]

मसला 354. दौराने ख़ुत्बा बात करना या बेध्यानी करना सख़्त बेहूदा बात है।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا قُلْتَ لِصَاحِبِكَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ أَنْصِتْ وَالْإِمَامُ يَخْطُبُ فَقَدْ لَغَوْتَ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٣)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जिसने जुमा के दिन दौराने ख़ुत्बा अपने साथी से कहा "ख़ामोश रहो" उसने भी बेकार की बात की।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[3]

मसला 355. ख़ुत्बा जुमा के दौरान गोठ मारकर बैठना मना है।

عَنْ مُعَاذِ بْنِ أَنَسٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : نَهَى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَنِ الْحَبْوَةِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَالْإِمَامُ يَخْطُبُ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَ أَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ (١) (حسن)

1. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 420
2. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 436
3. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 419

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत मुआज़ बिन जुहनी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने ख़ुत्बा के दौरान गोठ मारकर बैठने से मना फ़रमाया है। इसे अहमद, अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[1]

स्पष्टीकरण : आदमी अपने घुटने खड़े करके रानों को पेट से लगाकर दोनों हाथों को बांध ले तो उसे "गोठ" मारना कहते हैं।

मसला 356. नमाज़े जुमा के बाद अगर मस्जिद में सुन्नतें अदा करनी हों तो चार अगर घर जाकर अदा करनी हों तो दो अदा करनी चाहिएं।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ : إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمُ الْجُمُعَةَ فَلْيُصَلِّ بَعْدَهَا أَرْبَعًا . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَ مُسْلِمٌ وَ أَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ (٢)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "जुमा पढ़ो तो उसके बाद चार रकअत नमाज़ अदा करो।" इसे अहमद, मुस्लिम, अबू दाऊद, नसाई, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[2]

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ كَانَ إِذَا صَلَّى الْجُمُعَةَ انْصَرَفَ فَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ فِيْ بَيْتِهِ ثُمَّ قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَصْنَعُ ذَلِكَ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٣)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० नमाज़े जुमा पढ़ते तो अपने घर वापस आकर दो रकअत अदा करते और फ़रमाते रसूले अकरम सल्ल० ऐसा ही किया करते थे। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[3]

मसला 357. नमाज़े जुमा देहात में भी अदा करना चाहिए।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : إِنَّ أَوَّلَ جُمُعَةٍ جُمِّعَتْ بَعْدَ جُمُعَةٍ فِيْ مَسْجِدِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فِيْ مَسْجِدِ عَبْدِ الْقَيْسِ بِجُوَاثَى مِنَ الْبَحْرَيْنِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٤)

---

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 982
2. सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमा, बाबुस्सलात बाद जुमा।
3. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 424

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि मस्जिदे नबवी के बाद सबसे पहला जुमा बहरीन के देहात जवासी की मस्जिद अब्दुल क़ैस में पढ़ा गया। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 358. अगर जुमा के दिन ईद आ जाए, तो दोनों पढ़ने बेहतर हैं लेकिन ईद पढ़ने के बाद अगर जुमा की बजाए केवल नमाज़े ज़ोहर ही अदा की जाए तब भी सही है।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رضيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ قَالَ : قَدِ اجْتَمَعَ فِيْ يَوْمِكُمْ هَذَا عِيْدَانِ فَمَنْ شَاءَ أَجْزَأَهُ مِنَ الْجُمُعَةِ وَ إِنَّا مُجَمِّعُوْنَ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ مَاجَةَ (صحيح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने रसूलुल्लाह सल्ल० से रिवायत की है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "तुम्हारे आज के दिन में दो ईदें (एक ईद और दूसरा जुमा) इकट्ठी हो गई हैं जो चाहे उसके लिए जुमा के बदले ईद ही काफ़ी है लेकिन हम जुमा भी पढ़ेंगे। इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

मसला 359. नमाज़े जुमा के बाद सावधानी हेतू नमाज़े ज़ोहर अदा करना हदीस से साबित नहीं।

मसला 360. नमाज़े जुमा के बाद खड़े होकर बुलन्द आवाज़ से इज्तिमाई दुरूद व सलाम पढ़ना और नमाज़े जुमा के बाद सामूहिक दुआ करना सुन्नत से साबित नहीं है।

---

1. किताबुल जुमा, बाब जुमा, फ़िल क़ुरा वल मदन।
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 948

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़े वित्र के मसाइल

मसला 361. नमाज़े वित्र की श्रेष्ठता।

मसला 362. नमाज़े वित्र का समय नमाज़े इशा और नमाज़े फ़ज्र के बीच है।

عَنْ خَارِجَةَ بْنِ حُذَافَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِنَّ اللهَ أَمَدَّكُمْ بِصَلَاةٍ هِيَ خَيْرٌ لَكُمْ مِنْ حُمُرِ النَّعَمِ اَلْوِتْرُ جَعَلَهُ اللهُ لَكُمْ فِيْمَا بَيْنَ صَلَاةِ الْعِشَاءِ إِلَى طُلُوْعِ الْفَجْرِ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ (١) (صحيح)

हज़रत ख़ारिजा बिन हुज़ाफ़ा रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "अल्लाह तआला ने फ़र्ज़ नमाज़ों के अलावा एक और नमाज़ तुम्हें दी है जो तुम्हारे लिए सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर है वह नमाज़े वित्र है जिसे अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए नमाज़े इशा और उदय होने के बीच रखा है।" इसे अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

मसला 363. वित्र नमाज़े इशा का हिस्सा नहीं बल्कि रात की नमाज़ (क़यामुल्लैल या तहज्जुद) का हिस्सा है जिसे रसूलुल्लाह सल्ल० ने उम्मत की सुविधा के लिए इशा की नमाज़ के साथ पढ़ने की इजाज़त दी है।

मसला 364. वित्र रात के आख़िरी हिस्से में पढ़ना बेहतर है।

عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مَنْ خَشِيَ مِنْكُمْ أَنْ لَا يَسْتَيْقِظَ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ فَلْيُوْتِرْ مِنْ أَوَّلِهِ وَ مَنْ طَمِعَ مِنْكُمْ أَنْ يَقُوْمَ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ فَإِنَّ قِرَاءَةَ الْقُرْآنِ فِيْ آخِرِ اللَّيْلِ مَحْضُوْرَةٌ وَ هِيَ أَفْضَلُ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَ مُسْلِمٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ (٢) (صحيح)

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने

1. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 373

Www.IslamicBooks.Website

फ़रमाया "जिसे पिछली रात आंख न खुलने का डर हो उसे रात के पहले हिस्से में वित्र पढ़कर सोना चाहिए और जिसे उठ जाने की उम्मीद हो वह रात के आख़िरी हिस्से में वित्र पढ़े क्योंकि पिछली रात की क़िरअत में फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं और वह समय बेहतर है।" इसे अहमद, मुस्लिम, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

मसला 365. वित्र सुन्नते मुअक्किदा है वाजिब नहीं।

عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : اَلْوِتْرُ لَيْسَ بِحَتْمٍ كَهَيْئَةِ الْمَكْتُوْبَةِ وَ لٰكِنَّهُ سُنَّةٌ سَنَّهَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ رَوَاهُ النَّسَائِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं वित्र फ़र्ज़ की तरह ज़रूरी नहीं लेकिन सुन्नत है जिसका रसूलुल्लाह सल्ल० ने हुक्म दिया है। इसे नसाई ने रिवायत किया है।[2]

मसला 366. सुन्नतें और नवाफ़िल सवारी पर पढ़ने जाइज़ हैं।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّيْ فِي السَّفَرِ عَلَى رَاحِلَتِهِ حَيْثُ تَوَجَّهَتْ بِهِ يُوْمِيْ إِيْمَاءً صَلَاةَ اللَّيْلِ إِلاَّ الْفَرَائِضَ يُوْتِرُ عَلَى رَاحِلَتِهِ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٢)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं दौरान सफ़र नबी अकरम सल्ल० अपनी सवारी पर इशारे से रात की नमाज़ अदा फ़रमाते जिधर भी सवारी का रुख़ होता वित्र भी सवारी पर अदा फ़रमा लेते लेकिन फ़र्ज़ नमाज़ अदा नहीं फ़रमाते थे। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[3]

मसला 367. वित्रों की संख्या एक, तीन और पांच है, जो जितने चाहे पढ़े।

عَنْ أَبِيْ أَيُّوْبَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اَلْوِتْرُ حَقٌّ عَلَى كُلِّ

1. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 377
2. सहीह सुनन नसाई, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1582
3. किताबुल वित्र, बाब वित्र फ़िस्सफ़र।

Www.IslamicBooks.Website

مُسْلِمٍ فَمَنْ أَحَبَّ أَنْ يُوْتِرَ بِخَمْسٍ فَلْيَفْعَلْ وَ مَنْ أَحَبَّ أَنْ يُوْتِرَ بِثَلاَثٍ فَلْيَفْعَلْ وَ مَنْ أَحَبَّ أَنْ يُوْتِرَ بِوَاحِدَةٍ فَلْيَفْعَلْ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ (٣) (صحيح)

हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "वित्र पढ़ना हर मुसलमान के ज़िम्मे है अलबत्ता जो पसन्द करे वह पांच पढ़े जो पसन्द करे वह तीन पढ़े और जो पसन्द करे वह एक पढ़े।" इसे अबू दाऊद, नसाई और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

मसला 368. तीन वित्र अदा करने के लिए दो रकअत पढ़कर सलाम फेरना और फिर एक वित्र पढ़ने का तरीक़ा बेहतर है अलबत्ता एक तशह्हुद के साथ इकट्ठे तीन वित्र पढ़ना भी जाइज़ है।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُصَلِّيْ فِيْمَا بَيْنَ أَنْ يَفْرُغَ مِنْ صَلاَةِ الْعِشَاءِ إِلَى الْفَجْرِ إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً يُسَلِّمُ بَيْنَ كُلِّ رَكْعَتَيْنِ وَ يُوْتِرُ بِوَاحِدَةٍ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० नमाज़े इशा के बाद फ़ज्र से पहले ग्यारह रकअत अदा फ़रमाया करते हर दो रकअत के बाद सलाम फेरते और आख़िर में एक रकअत अदा करके वित्र बनाते। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُوْتِرُ بِسَبْعٍ أَوْ بِخَمْسٍ لاَ يَفْصِلُ بَيْنَهُنَّ بِتَسْلِيْمٍ . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ (٢) (صحيح)

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० फ़रमाती हैं रसूलुल्लाह सल्ल० जब सात या पांच वित्र अदा फ़रमाते तो उनमें सलाम से दूरी न करते। (अर्थात एक ही सलाम से पढ़ते) इसे नसाई ने रिवायत किया है।[3]

मसला 369. नमाज़े मग़रिब की तरह दो तशह्हुद और एक सलाम

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1260
2. किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब सलातुल्लैल, व अदद रकआतुन्नबी फ़िल्लैल।
3. सहीह सुनन नसाई, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1618

Www.IslamicBooks.Website

से तीन वित्र अदा करना सही नहीं।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : لَا يُوْتِرُوْا بِثَلَاثٍ أَوْتِرُوْا بِخَمْسٍ أَوْ بِسَبْعٍ وَ لَا تَشَبَّهُوْا بِصَلَاةِ الْمَغْرِبِ . رَوَاهُ الدَّارُقُطْنِيُّ (٣) (صحيح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "तीन वित्र (नमाज़े मग़रिब की तरह) न पढ़ो बल्कि पांच या सात पढ़ो (नमाज़े मग़रिब की तरह दो तशह्हुद और एक सलाम से तीन वित्र पढ़कर) मग़रिब की नमाज़ से समानता न करो।" इसे दारे क़ुतनी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 370. वित्रों में दुआए क़ुनूत रुकूअ से पहले और बाद दोनों तरह जाइज़ है।

عَنْ أُبَيِّ ابْنِ كَعْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ يُوْتِرُ فَيَقْنُتُ قَبْلَ الرُّكُوْعِ . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (١) (صحيح)

हज़रत अबी बिन काअब रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० वित्र में दुआए क़ुनूत रुकूअ से पहले पढ़ते। इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[2]

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَنَتَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بَعْدَ الرُّكُوْعِ . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (٢) (صحيح)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने रुकूअ के बाद दुआए क़ुनूत मांगी। इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[3]

मसला 371. ज़रूरत पड़ने पर क़ुनूत तमाम नमाज़ियों या कुछ नमाज़ियों की आख़िरी रकअत में रुकूअ के बाद मांगी जा सकती है।

मसला 372. क़ुनूत पढ़नी वाजिब नहीं।

---

1. अत्तालीक़ुल मुग़नी, दूसरा भाग, पृष्ठ 25
2. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 970
3. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 972

Www.IslamicBooks.Website

मसला 373. क़ुनूत के बाद दूसरी दुआएं भी मांगी जा सकती हैं।

मसला 374. ज़रूरत पड़ने पर क़ुनूत अनिश्चित मुद्दत तक मांगी जा सकती है।

मसला 375. जब इमाम बुलन्द आवाज़ से क़ुनूत पढ़े, मुक़तदियों को बुलन्द आवाज़ से आमीन कहनी चाहिए।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَنَتَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ شَهْرًا مُتَتَابِعًا فِي الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ وَالْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ وَ صَلَاةِ الصُّبْحِ إِذَا قَالَ سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ مِنَ الرَّكْعَةِ الْآخِرَةِ يَدْعُوْ عَلَى أَحْيَاءٍ مِّنْ بَنِيْ سُلَيْمٍ عَلَى رِعْلٍ وَ ذَكْوَانَ وَ عُصَيَّةَ وَ يُؤَمِّنُ مَنْ خَلْفَهُ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (٣) (حسن)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं "रसूलुल्लाह सल्ल० एक महीना निरंतर ज़ोहर, अस्र, मग़रिब, इशा और फ़ज्र की आख़िरी रकअत में (हालते क़ौमा में) समिअल्लाहु लिमन हमि-दह कहने के बाद बनी सुलैम के क़बाइल रिअल, ज़कवान और उसय्या के लिए बद्दुआ फ़रमाते और मुक़तदी आमीन कहते थे।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[1]

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَنَتَ شَهْرًا ثُمَّ تَرَكَهُ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُد (١) (صحيح)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने एक महीने तक क़ुनूत पढ़ी फिर तर्क फ़रमा दी। इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

मसला 376. दुआए क़ुनूत, जो नबी अकरम सल्ल० ने हज़रत हसन बिन अली रज़ि० को वित्रों में पढ़ने के लिए सिखाई।

---

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1280
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1282

Www.IslamicBooks.Website

عَنِ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ : عَلَّمَنِيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ كَلِمَاتٍ أَقُوْلُهُنَّ فِيْ قُنُوْتِ الْوِتْرِ **اَللّٰهُمَّ اهْدِنِيْ فِيْمَنْ هَدَيْتَ وَ عَافِنِيْ فِيْمَنْ عَافَيْتَ وَتَوَلَّنِيْ فِيْمَنْ تَوَلَّيْتَ وَ بَارِكْ لِيْ فِيْمَا أَعْطَيْتَ وَ قِنِيْ شَرَّمَا قَضَيْتَ فَإِنَّكَ تَقْضِيْ وَلَا يُقْضٰى عَلَيْكَ إِنَّهُ لَا يَذِلُّ مَنْ وَّالَيْتَ وَلَا يَعِزُّ مَنْ عَادَيْتَ تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ .** رَوَاهُ النَّسَائِيُّ (٢) (صحيح)

हज़रत हसन बिन अली रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने मुझे वित्रों में पढ़ने के लिए यह दुआए क़ुनूत सिखाई। ''इलाही! मुझे हिदायत दे और हिदायत पाए लोगों में शामिल फ़रमा, मुझे आफ़ियत दे और उन लोगों में शामिल फ़रमा जिन्हें तूने आफ़ियत प्रदान फ़रमाई। मुझे अपना दोस्त बनाकर उन लोगों में शामिल फ़रमा जिन्हें तूने दोस्त बनाया है, जो नेमतें तूने मुझे दी हैं उनमें बरकत फ़रमा। इस बुराई से मुझे बचाकर रख, जिसका तूने फ़ैसला किया है निःसन्देह फ़ैसला करने वाला तू ही है और तेरे ख़िलाफ़ फ़ैसला नहीं किया जाता जिसे तू दोस्त रखे वह कभी रुसवा नहीं होता और जिससे तू दुश्मनी रखे वह कभी इज़्ज़त हासिल नहीं कर सकता। ऐ हमारे परवरदिगार! तेरी ज़ात बड़ी बाबरकत और बुलन्द व श्रेष्ठ है।'' इसे नसाई ने रिवायत किया है।[1]

मसला 277. वित्रों की दूसरी मसनून दुआ यह है।

عَنْ عَلِيِّ ابْنِ أَبِيْ طَالِبٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ فِيْ آخِرِ وِتْرِهِ **اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَ بِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ وَ أَعُوْذُبِكَ مِنْكَ لَا أُحْصِيْ ثَنَاءً عَلَيْكَ أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ .** رَوَاهُ النَّسَائِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० अपने वित्र में यह दुआ मांगा करते थे ''या अल्लाह! मैं तेरी प्रसन्नता के वास्ते से तेरे ग़ुस्से से पनाह तलब करता हूं, तेरी आफ़ियत के ज़रिए तेरे अज़ाब से पनाह मांगता हूं। (हर मामले में) तेरी पनाह का

1. सहीह सुनन नसाई, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1647

Www.IslamicBooks.Website

तालिब हूं। मैं तेरी प्रशंसा नहीं कर सकता, तू निश्चय ही वैसा ही है जैसे तूने आप अपनी प्रशंसा की।'' इसे नसाई ने रिवायत किया है।[1]

मसला 378. तीन वित्रों की पहली रकअत में सूरह आला दूसरी में सूरह काफ़िरून और तीसरी रकअत में सूरह इख़्लास पढ़नी मसनून है।

عَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ رضى الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقْرَأُ فِي الْوِتْرِ بِسَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى وَفِي الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ بِقُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ وَفِي الثَّالِثَةِ بِقُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ وَلَا يُسَلِّمُ إِلَّا فِي آخِرِهِنَّ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ (٢) (صحيح)

हज़रत अबी बिन काअब रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० वित्र की पहली रकअत में सूरह आला, दूसरी में सूरह काफ़िरून और तीसरी में सूरह इख़्लास तिलावत फ़रमाते और सलाम आख़िरी रकअत ही में फेरते। इसे नसाई ने रिवायत किया है।[2]

मसला 379. वित्रों के बाद तीन बार सुब्हानल मलिकिल क़ुद्दूस कहना मसनून है।

عَنْ أُبَيِّ ابْنِ كَعْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ إِذَا سَلَّمَ سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ يُطِيْلُ فِيْ آخِرِهِنَّ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ (٣) (صحيح)

हज़रत अबी बिन काअब रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० वित्रों से सलाम फेरने के बाद तीन बार ''सुब्हानल मलिकिल क़ुद्दूस'' कहते और तीसरी बार शब्दों को लम्बा करके पढ़ते। इसे नसाई ने रिवायत किया है।[3]

मसला 80. जो व्यक्ति वित्र पिछली रात अदा करने के इरादे से सो जाए लेकिन जाग न सके तो वह नमाज़े फ़ज्र से पहले या सूरज उदय होने के बाद अदा कर सकता है।

---

1. सहीह सुनन नसाई, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1648
2. सहीह सुनन नसाई, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1606
3. सहीह सुनन नसाई, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1604

Www.IslamicBooks.Website

عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَنْ نَامَ عَنْ وِتْرِهِ فَلْيُصَلِّ إِذَا أَصْبَحَ . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत ज़ैद बिन असलम रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जो वित्र पढ़ने के लिए जाग न सके वह सुबह अदा कर ले।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 381. एक रात में दो बार वित्र नहीं पढ़ने चाहिएं।

मसला 382. नमाज़े इशा के बाद वित्र अदा कर लिया हो तो नमाज़े तहज्जुद के बाद वित्र अदा नहीं करना चाहिए।

عَنْ طَلْقِ ابْنِ عَلِيٍّ عَنْ أَبِيْهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ لاَ وِتْرَانِ فِيْ لَيْلَةٍ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत तलक़ बिन अली अपने बाप से रिवायत करते हैं कि मैंने नबी अकरम सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है कि एक रात में दो बार वित्र नहीं पढ़ने चाहिएं। इसे अहमद, अबू दाऊद, नसाई और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[2]

मसला 383-384. वित्र के बाद दो रकअत नफ़िल बैठकर पढ़ने सुन्नत से साबित नहीं।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 313 के अन्तर्गत देखें।

---

1. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 387
2. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 391

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़े तहज्जुद के मसाइल

मसला 385. फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद सबसे बेहतर नमाज़ तहज्जुद की नमाज़ है।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَفْضَلُ الصِّيَامِ بَعْدَ رَمَضَانَ شَهْرُ اللهِ الْمُحَرَّمُ وَ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ بَعْدَ الْفَرِيْضَةِ صَلَاةُ اللَّيْلِ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "रमज़ान के बाद सबसे बेहतर रोज़े मुहर्रम के हैं और फ़र्ज़ नमाज़ के बाद सबसे बेहतर नमाज़, तहज्जुद की नमाज़ है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 386. नमाज़े तहज्जुद (क़यामुल्लैल) की मसनून रकआत कम से कम सात और ज़्यादा से ज़्यादा तेरह हैं।

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِيْ قَيْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : سَأَلْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا بِكَمْ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُوْتِرُ ؟ قَالَتْ كَانَ يُوْتِرُ بِأَرْبَعٍ وَّ ثَلَاثٍ وَ سِتٍّ وَّثَلَاثٍ وَّ ثَمَانٍ وَّ ثَلَاثٍ وَّ عَشْرٍ وَّ ثَلَاثٍ وَلَمْ يَكُنْ يُوْتِرُ بِأَنْقَصَ مِنْ سَبْعٍ وَّلَا بِأَكْثَرَ مِنْ ثَلَاثَ عَشْرَةَ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (٢) (صحيح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू क़ैस रज़ि० कहते हैं मैंने हज़रत आइशा रज़ि० से सवाल किया कि रसूलुल्लाह सल्ल० रात की नमाज़ कितनी पढ़ते?" हज़रत आइशा रज़ि० ने जवाब दिया "कभी चार नफ़िल और तीन वित्र (कुल सात रकआत) कभी छः नफ़िल और तीन वित्र (कुल नौ रकआत) कभी आठ नफ़िल और तीन वित्र (कुल ग्यारह रकआत) कभी दस नफ़िल और तीन वित्र (कुल तेरह रकअत) अदा फ़रमाते। आप सल्ल० की रात की नमाज़ सात से कम और तेरह से ज़्यादा नहीं होती थी।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

1. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 610
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1214

Www.IslamicBooks.Website

स्पष्टीकरण : अगर कोई व्यक्ति मसनून रकआत के बाद और अधिक नवाफ़िल अदा करना चाहे तो कर सकता है।

मसला 387. नमाज़े तहज्जुद में रसूलुल्लाह सल्ल० का प्रायः तरीक़ा आठ रकआत नफ़िल और तीन वित्र (कुल ग्यारह रकआत) पढ़ने का था।

मसला 388. नमाज़े तहज्जुद दो-दो या चार-चार रकआत दोनों तरह पढ़ना मसनून है मगर दो-दो रकअत करके पढ़ना बेहतर है।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُصَلِّيْ فِيْ مَا بَيْنَ أَنْ يَفْرُغَ مِنْ صَلَاةِ الْعِشَاءِ إِلَى الْفَجْرِ إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً يُسَلِّمُ مِنْ كُلِّ رَكْعَتَيْنِ وَيُوْتِرُ بِوَاحِدَةٍ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० नमाज़े इशा और नमाज़े फ़ज्र के बीच ग्यारह रकअतें नमाज़ अदा फ़रमाते, हर दो रकअत के बाद सलाम फेरते और फिर सारी नमाज़ को एक रकअत से वित्र बनाते। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

عَنْ أَبِيْ سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِالرَّحْمٰنِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا كَيْفَ كَانَتْ صَلَاةُ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فِيْ رَمَضَانَ ؟ فَقَالَتْ : مَا كَانَ يَزِيْدُ فِيْ رَمَضَانَ وَ لَا فِيْ غَيْرِهِ عَلَى إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً ، يُصَلِّيْ أَرْبَعَةً فَلَا تَسْأَلْ عَنْ حُسْنِهِنَّ وَ طُوْلِهِنَّ ثُمَّ يُصَلِّيْ أَرْبَعًا فَلَا تَسْأَلْ عَنْ حُسْنِهِنَّ وَ طُوْلِهِنَّ ثُمَّ يُصَلِّيْ ثَلَاثًا . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٢)

हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान रज़ि० ने हज़रत आइशा रज़ि० से पूछा "रसूलुल्लाह सल्ल० की रमज़ान में रात की नमाज़ कैसी होती थी?" हज़रत आइशा रज़ि० ने जवाब दिया "रसूलुल्लाह सल्ल० रमज़ान या ग़ैर रमज़ान में रात की नमाज़ ग्यारह रकअतों से ज़्यादा न पढ़ते थे। चार रकअतें पढ़ते और उनकी लम्बाई व हुस्न का क्या कहना, फिर चार रकअतें पढ़ते जिनकी लम्बाई व हुस्न का क्या कहना, फिर तीन रकअत वित्र अदा फ़रमाते।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

---

1. सहीह मुस्लिम किताबुल मुसाफ़िरीन, बाब सलातुल्लैल, व अदद रकआतुन्नबी फ़िल्लैल।
2. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 426

Www.IslamicBooks.Website

मसला 389. एक ही आयत को बार बार नफ़िल नमाज़ में पढ़ना जाइज़ है।

عَنْ أَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَامَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ حَتّٰى أَصْبَحَ بِآيَةٍ وَالْآيَةُ إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِنْ تَغْفِرْلَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ (١) (حسن)

हज़रत अबूज़र रज़ि० फ़रमाते हैं एक रात रसूलुल्लाह सल्ल० ने क़याम फ़रमाया और सुबह तक एक ही आयत तिलावत फ़रमाते रहे, "ऐ अल्लाह अगर तू इन्हें अज़ाब करे, तो वे तेरे ग़ुलाम हैं (तू कर सकता है) अगर बख़्श दे तू ग़ालिब है हिक्मत वाला भी है।" (तुझे कोई पूछने वाला नहीं) इसे नसाई और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

मसला 390. नमाज़े तहज्जुद में रसूलुल्लाह सल्ल० निम्न दुआ इस्तफ़ताह पढ़ा करते थे।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا قَامَ مِنَ اللَّيْلِ افْتَتَحَ صَلَاتَهُ فَقَالَ : اَللّٰهُمَّ رَبَّ جِبْرِيْلَ وَ مِيْكَائِيْلَ وَ إِسْرَائِيْلَ فَاطِرَ السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ اِهْدِنِيْ لِمَا اخْتُلِفَ فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِكَ إِنَّكَ تَهْدِيْ مَنْ تَشَاءُ إِلٰى صِرَاطٍ مُسْتَقِيْمٍ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि नबी अकरम सल्ल० जब नमाज़े तहज्जुद के लिए खड़े होते, तो शुरू में यह दुआ पढ़तें या अल्लाह तआला जिबरील, मीकाईल और इसराफ़ील के पालनहार, ज़मीन व आसमान पैदा करने वाले, हाज़िर और ग़ायब के जानने वाले, लोग जिन (दीनी) मामलात में मतभेद कर रहे हैं (क़यामत के दिन) तू ही उनका फ़ैसला करेगा। या अल्लाह! जिन मामलों में मतभेद किया गया है उनमें मेरी रहनुमाई फ़रमा। निश्चय ही जिसे तू चाहता है सीधे रास्ते की हिदायत देता है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

1. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1110
2. किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब सलातुन्नबी व दुआ बिल्लैल।

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़े तरावीह के मसाइल

मसला 391. नमाज़े तरावीह पिछले तमाम छोटे गुनाहों की मग़फ़िरत का ज़रिया है।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ : مَنْ قَامَ رَمَضَانَ إِيْمَانًا وَ إِحْتِسَابًا غُفِرَلَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जिसने ईमान के साथ और सवाब की नीयत से रमज़ान में क़याम किया उसके पिछले सारे गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 392. क़याम रमज़ान या नमाज़े तरावीह बाक़ी महीनों में तहज्जुद या क़यामुल्लैल का दूसरा नाम है।

मसला 393. नमाज़े तरावीह (या तहज्जुद) की मसनून रकअतें आठ हैं लेकिन ग़ैर मसनून रकअतों की कोई हद नहीं जो जितनी चाहे पढ़े।

عَنْ أَبِيْ سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا كَيْفَ كَانَتْ صَلاَةُ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فِيْ رَمَضَانَ ؟ فَقَالَتْ : مَا كَانَ يَزِيْدُ فِيْ رَمَضَانَ وَ لاَ فِيْ غَيْرِهِ عَلَى إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً يُصَلِّيْ أَرْبَعًا فَلاَ تَسْأَلْ عَنْ حُسْنِهِنَّ وَ طُوْلِهِنَّ ثُمَّ يُصَلِّيْ أَرْبَعًا فَلاَ تَسْأَلْ عَنْ حُسْنِهِنَّ وَ طُوْلِهِنَّ ثُمَّ يُصَلِّيْ ثَلاَثًا . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٢)

हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान रज़ि० ने हज़रत आइशा रज़ि० से पूछा 'रसूलुल्लाह सल्ल० की रमज़ान में रात की नमाज़ कैसी होती थी?" हज़रत आइशा रज़ि० ने जवाब दिया "रसूलुल्लाह सल्ल० रमज़ान या ग़ैर रमज़ान में रात की नमाज़ ग्यारह रकअतों से ज़्यादा न पढ़ते थे। चार रकअतें पढ़ते और उनकी लम्बाई व हुस्न का क्या कहना, फिर चार

---

1. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलज़्ज़ुबैदी, हदीस 35

Www.IslamicBooks.Website

रकअतें पढ़ते जिनकी लम्बाई व हुस्न का क्या कहना। फिर तीन रकअत वित्र अदा फ़रमाते।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 394. नमाज़े तरावीह का समय नमाज़े इशा के बाद से लेकर फ़ज्र के उदय तक है।

मसला 395. नमाज़े तरावीह दो-दो रकअत पढ़ना बेहतर है।

मसला 396. वित्र की एक रकअत अलग पढ़ना मसनून है।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّيْ فِيْمَا بَيْنَ أَنْ يَّفْرُغَ مِنْ صَلَاةِ الْعِشَاءِ إِلَى الْفَجْرِ إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً يُسَلِّمُ مِنْ كُلِّ رَكْعَتَيْنِ وَيُوْتِرُ بِوَاحِدَةٍ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० नमाज़े इशा और नमाज़े फ़ज्र के बीच ग्यारह रकअतें नमाज़ अदा फ़रमाते, हर दो रकअत के बाद सलाम फेरते और फिर सारी नमाज़ का एक रकअत से वित्र बनाते। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 397. रसूलुल्लाह सल्ल० ने सहाबा किराम रज़ि० को केवल तीन दिन नमाज़े तरावीह जमाअत से पढ़ाई जिनमें आठ रकअतों के अलावा तीन वित्र भी शामिल हैं।

मसला 398. इन तीन दिनों में रसूले अकरम सल्ल० ने अलग से तहज्जुद पढ़ी न वित्र पढ़े यही नमाज़े बाजमाअत आपकी तहज्जुद या क़याम रमज़ान या तरावीह थी।

मसला 399. औरतें नमाज़े तरावीह के लिए मस्जिद जा सकती हैं।

عَنْ أَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ صُمْنَا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَلَمْ يُصَلِّ بِنَا حَتّٰى بَقِيَ سَبْعٌ مِنَ الشَّهْرِ فَقَامَ بِنَا حَتّٰى ذَهَبَ ثُلُثُ اللَّيْلِ ثُمَّ لَمْ يَقُمْ بِنَا فِي السَّادِسَةِ وَ قَامَ بِنَا

---

1. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 426

2. सहीह मुस्लिम, किताबुल **मुसाफ़िरीन, बाब सलातुल्लैल, व अदद रकआतुन्नबी फ़िल्लैल**।

Www.IslamicBooks.Website

فِي الْخَامِسَةِ حَتَّى ذَهَبَ شَطْرُ اللَّيْلِ فَقُلْنَا يَا رَسُوْلَ اللهِ لَوْ نَفَّلْتَنَا بَقِيَّةَ لَيْلَتِنَا هَذِهِ ؟ فَقَالَ : إِنَّهُ مَنْ قَامَ مَعَ الْإِمَامِ حَتَّى يَنْصَرِفَ كُتِبَ لَهُ قِيَامُ لَيْلَةٍ ثُمَّ لَمْ يُصَلِّ بِنَا حَتَّى بَقِيَ ثَلَاثٌ مِنَ الشَّهْرِ فَصَلَّى بِنَا فِي الثَّالِثَةِ وَ دَعَا أَهْلَهُ وَنِسَاءَهُ فَقَامَ بِنَا حَتَّى تَخَوَّفْنَا الْفَلَاحَ قُلْتُ لَهُ وَ مَا الْفَلَاحُ ؟ قَالَ : اَلسَّحُوْرُ . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत अबूज़र रज़ि० से रिवायत है उन्होंने कहा हमने रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ रोज़े रखे। नबी अकरम सल्ल० ने हमें तरावीह की नमाज़ नहीं पढ़ाई यहां तक कि रमज़ान के सात दिन बाक़ी रह गए (अर्थात तेईसवीं रात) तिहाई रात गुज़र जाने पर नबी अकरम सल्ल० ने हमें नमाज़े तरावीह पढ़ाई। फिर हुज़ूर अकरम सल्ल० ने चौबीसवीं रात को नमाज़े तरावीह नहीं पढ़ाई, पच्चीसवीं रात आधी गुज़र जाने पर नमाज़ तरावीह पढ़ाई।'' हमने कहा ''या रसूलुल्लाह सल्ल०! क्या अच्छा हो अगर आप हमें इस रात का बाक़ी हिस्सा भी क़याम नमाज़ पढ़ाएं।'' नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया ''जिसने इमाम के (मस्जिद से) लौटने तक इमाम के साथ क़याम कर लिया (जमाअत से नमाज़ पढ़ी) उसके लिए सारी रात के क़याम का सवाब लिखा जाएगा।'' फिर रसूले अकरम सल्ल० ने हमें नमाज़े तरावीह नहीं पढ़ाई यहां तक कि तीन रोज़े बाक़ी रह गए। और नबी अकरम सल्ल० ने हमें सत्ताईसवीं रात नमाज़ पढ़ाई। जिसमें अपने घर वालों को भी शामिल किया। यहां तक कि हमें फ़लाह ख़त्म होने का डर हुआ। मैंने अबूज़र रज़ि० से पूछा ''फ़लाह क्या है?'' हज़रत अबूज़र रज़ि० ने जवाब दिया ''सहरी!'' इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 400. फ़र्ज़ों के अलावा बाक़ी नमाज़ों में क़ुरआन करीम से देखकर तिलावत करना जाइज़ है।

كَانَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا يَؤُمُّهَا عَبْدُهَا ذَكْوَانُ مِنَ الْمُصْحَفِ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٢)

1. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 646

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत आइशा रज़ि० का ग़ुलाम ज़कवान क़ुरआन करीम से देखकर नमाज़ पढ़ाता था। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 401. तीन दिन से कम समय में क़ुरआन करीम ख़त्म करना नापसन्दीदा अमल है।

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ : لَمْ يَفْقَهْ مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ فِيْ أَقَلَّ مِنْ ثَلَاثِ لَيَالٍ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (١) (صحيح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जिसने तीन रात से कम समय में क़ुरआन ख़त्म किया उसने क़ुरआन को नहीं समझा।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

मसला 402. एक रात में क़ुरआन करीम ख़त्म करना (शबीना) ख़िलाफ़े सुन्नत है।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : لَا أَعْلَمُ نَبِيَّ اللهِ قَرَءَ الْقُرْآنَ كُلَّهُ حَتَّى الصَّبَاحَ . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (٢) (صحيح)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं मैं नहीं जानती कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने कभी पूरा क़ुरआन सुबह तक ख़त्म किया हो। इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[3]

मसला 403. हर दो या चार तरावीह के बाद तस्बीहात पढ़ने के लिए मध्यान्तर का आयोजन करना सुन्नत से साबित नहीं।

मसला 404. नमाज़े तरावीह के बाद बुलन्द आवाज़ से दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत से साबित नहीं।

---

1. किताबुल अज़ान।
1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1242
2. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1108

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़े क़स्र के मसाइल

मसला 405. सफ़र में नमाज़ क़स्र अदा करनी चाहिए।

عَنْ يَعْلَى بْنِ أُمَيَّةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قُلْتُ لِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلَاةِ إِنْ خِفْتُمْ أَنْ يَفْتِنَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَقَدْ أَمِنَ النَّاسُ ؟ فَقَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَجِبْتُ مِمَّا عَجِبْتَ مِنْهُ ، فَسَأَلْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ عَنْ ذٰلِكَ فَقَالَ صَدَقَةٌ تَصَدَّقَ اللهُ بِهَا عَلَيْكُمْ ، فَاقْبَلُوْا صَدَقَتَهُ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत याला बिन उमैया रज़ि० कहते हैं मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० से अर्ज़ किया (अल्लाह तआला का हुक्म है) कि अगर तुम्हें काफ़िरों की तरफ़ से फ़ितने का ख़ौफ़ हो तो नमाज़ क़स्र अदा करने में कोई हरज नहीं लेकिन अब तो ज़माना अम्न है (अतः क़स्र का जवाज़ ख़त्म हो गया) हज़रत उमर रज़ि० कहने लगे जिस बात पर तुम्हें अचरज हुआ है मुझे भी अचरज हुआ था अतः मैंने रसूले अकरम सल्ल० से पूछा तो आपने इरशाद फ़रमाया "(क़स्र की रिआयत) अल्लाह की तरफ़ से तुम लोगों पर सदक़ा है अतः अल्लाह तआला का सदक़ा क़ुबूल करो।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 406. लम्बा सफ़र करना हो, तो शहर से निकलने के बाद क़स्र शुरू की जा सकती है।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : صَلَّيْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَلظُّهْرَ بِالْمَدِيْنَةِ أَرْبَعًا وَ صَلَّيْتُ مَعَهُ الْعَصْرَ فِيْ ذِي الْحُلَيْفَةِ رَكْعَتَيْنِ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٢)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ मदीने में नमाज़े ज़ोहर चार रकअत और नमाज़े अस्र ज़ुल हुलैफ़ा में दो रकअत अदा की। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

1. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 433
2. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 435

Www.IslamicBooks.Website

मसला 407. रसूलुल्लाह सल्ल० ने क़स्र के लिए कोई निश्चित निर्धारित नहीं की सहाबा किराम रज़ि० से 9, 36, 38, 40, 42, 45 और 48 मील की विभिन्न रिवायात मंक़ूल हैं।

मसला 408. उल्लिखित रिवायात में से 9 मील की दूरी ज़्यादा सह मालूम होती है।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا خَرَجَ مَسِيْرَةَ ثَلَاثَةِ أَمْيَالٍ أَوْ ةِ فَرَاسِخَ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ شُعْبَةُ الشَّاكُّ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَ مُسْلِمٌ وَ أَبُوْدَاوُدَ (١) (صحيح)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० तीन मी या तीन फ़रसख़, (9 मील) सफ़र करते तो नमाज़ क़स्र अदा फ़रमा मील या फ़रसख़ का संदेह याहया के शागिर्द शौबा को है। इसे अह मुस्लिम और अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[1]

عَنْ حَارِثَةَ ابْنِ وَهْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : صَلَّى بِنَا النَّبِيُّ ﷺ آمَنَ مَا كَانَ ي رَكْعَتَيْنِ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٢)

हज़रत हारिसा बिन वहब रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० हमें मिना में ज़माना अम्न में नमाज़े क़स्र पढ़ाई। इसे बुख़ारी ने रिवा किया है।[2]

عَنِ ابْنِ عُمَرَ وَ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ كَانَا يُصَلِّيَانِ رَكْعَتَيْنِ وَ يُفْطِرَانِ فِيْ أَرْبَعِ بُرُدٍ فَمَا فَوْقَ ذَلِكَ . ذَكَرَهُ الْحَافِظُ فِيْ فَتْحِ الْبَارِيْ (٣)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर और अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० चार बुर्द (अड़तालीस मील) पर क़स्र करते और रोज़ा भी तर्क फ़रमा देते। इसे हाफ़िज़ इब्ने हजर ने फ़त्हुलबारी में नक़ल किया है।[3]

मसला 409. क़स्र के लिए पक्की मुद्दत भी रसूलुल्लाह सल्ल० ने

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1060
2. किताब तक़सीरुस्सलात, बाब सलात।
3. दूसरा भाग, पृष्ठ 565

Www.IslamicBooks.Website

निर्धारित नहीं की। सहाबा किराम रज़ि० से 4, 15 और 19 दिन की रिवायात मंक़ूल हैं उनमें से 19 दिन की मुद्दत सही मालूम होती है।

मसला 410. 19 दिन से ज़्यादा समय क़याम का पक्का इरादा हो तो पूरी नमाज़ अदा करनी चाहिए।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : أَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ تِسْعَةَ عَشَرَ يَقْصُرُ ، فَنَحْنُ إِذَا سَافَرْنَا تِسْعَةَ عَشَرَ قَصَرْنَا وَ إِنْ زِدْنَا أَتْمَمْنَا . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने अपने सफ़र के दौरान (एक ही जगह) 19 दिन क़याम फ़रमाया, तो नमाज़ क़स्र अदा फ़रमाई, अतः हम उन्नीस दिन ठहरते हैं, तो क़स्र नमाज़ अदा करते हैं लेकिन जब 19 दिन से ज़्यादा क़याम होता है तो पूरी नमाज़ अदा करते हैं।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 411. सफ़र की हालत में ज़ोहर और अस्र या मग़रिब और इशा की नमाज़ें जमा करनी जाइज़ हैं।

मसला 412. ज़ोहर के समय सफ़र शुरू करना हो, तो ज़ोहर और अस्र की नमाज़ें ज़ोहर के समय इकट्ठी की जा सकती हैं। अगर ज़ोहर से पहले सफ़र शुरू करना हो तो ज़ोहर की नमाज़ देर करके और अस्र के समय दोनों नमाज़ें इकट्ठी पढ़नी जाइज़ हैं। इसी तरह मग़रिब और इशा की नमाज़ें इकट्ठी की जा सकती हैं।

عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كَانَ النَّبِيُّ ﷺ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ إِذَا زَاغَتِ الشَّمْسُ قَبْلَ أَنْ يَرْتَحِلَ جَمَعَ بَيْنَ الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ وَ إِنِ يَرْتَحِلَ قَبْلَ أَنْ تَزِيْغَ الشَّمْسُ أَخَّرَ الظُّهْرَ حَتَّى يَنْزِلَ لِلْعَصْرِ وَ فِي الْمَغْرِبِ مِثْلَ ذَلِكَ إِذَا غَابَتِ الشَّمْسُ قَبْلَ أَنْ يَرْتَحِلَ جَمَعَ بَيْنَ الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ وَإِنِ ارْتَحَلَ قَبْلَ أَنْ تَغِيْبَ الشَّمْسُ أَخَّرَ الْمَغْرِبَ حَتَّى يَنْزِلَ لِلْعِشَاءِ ثُمَّ يَجْمَعُ بَيْنَهُمَا . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० फ़रमाते हैं कि ग़ज़वा तबूक के

1. किताब तक़सीरुस्सलात, बाब माजा फ़ित्तक़सीर।

Www.IslamicBooks.Website

मौक़े पर अगर सफ़र शुरू करने से पहले सूरज ढल जाता तो नबी अकरम सल्ल० नमाज़े ज़ोहर और अस्र (उसी समय) जमा फ़रमा लेते अगर सूरज ढलने से पहले सफ़र का इरादा होता तो नमाज़े ज़ोहर देर करके नमाज़े अस्र के समय दोनों नमाज़ें अदा फ़रमा लेते। इसी तरह नमाज़ मग़रिब अदा फ़रमाते अर्थात अगर सफ़र शुरू करने से पहले सूरज अस्त हो जाता है तो मग़रिब और इशा (उसी समय) जमा फ़रमा लेते। अगर सूरज अस्त होने से पहले सफ़र फ़रमाते, तो नमाज़े मग़रिब देर करके इशा के समय दोनों जमा फ़रमा लेते। इसे अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 413. दो नमाज़ें जमाअत से जमा करने का मसनून तरीक़ा यह है।

عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَتَى الْمُزْدَلِفَةَ فَصَلَّى بِهَا الْمَغْرِبَ وَالْعِشَاءَ بِأَذَانٍ وَاحِدٍ إِقَامَتَيْنِ وَلَمْ يُسَبِّحْ بَيْنَهُمَا . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَ مُسْلِمٌ وَ النَّسَائِيُّ (۴)

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० मुज़दलफ़ा तशरीफ़ लाए, तो एक अज़ान और दो इक़ामत से नमाज़े मग़रिब और इशा जमा कीं और दोनों नमाज़ों के बीच कोई सुन्नतें नहीं पढ़ीं। इसे अहमद, मुस्लिम और नसाई ने रिवायत किया है।[2]

मसला 414. नमाज़े क़स्र में फ़ज्र, ज़ोहर, अस्र और इशा के दो-दो फ़र्ज़ और मग़रिब के तीन फ़र्ज़ शामिल हैं।

मसला 415. मुसाफ़िर, मुक़ीम की इमामत करा सकता है।

मसला 416. मुसाफ़िर इमाम को नमाज़े क़स्र अदा करनी चाहिए लेकिन मुक़ीम मुक़तदी को बाद में अपनी नमाज़ पूरी करनी चाहिए।

عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : مَا سَفَرَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِلاَّ صَلَّى

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1067
2. सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी।

Www.IslamicBooks.Website

كَعْتَيْنِ حَتَّى يَرْجِعَ وَ إِنَّهُ أَقَامَ بِمَكَّةَ زَمَنَ الْفَتْحِ ثَمَانَ عَشْرَةَ لَيْلَةً يُصَلِّىْ بِالنَّاسِ رَكْعَتَيْنِ كَعْتَيْنِ إِلاَّ الْمَغْرِبَ ثُمَّ يَقُوْلُ : يَا أَهْلَ مَكَّةَ قُوْمُوْا فَصَلُّوْا رَكْعَتَيْنِ آخِرَتَيْنِ فَإِنَّا قَوْمٌ سَفْرٌ رَوَاهُ أَحْمَدُ (١)

हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने हर सफ़र में घर वापस आने तक हमेशा नमाज़े क़स्र अदा फ़रमाई। फ़तह मक्का के मौक़े पर हुज़ूर अकरम सल्ल० अठारह दिन मक्का में ठहरे रहे और नमाज़ मग़रिब के सिवा लोगों को दो-दो रकअतें पढ़ाते रहे और (स्वयं सलाम फेरने के बाद) लोगों से फ़रमा देते "मक्का वालो! उठकर अपनी नमाज़ पूरी कर लो हम मुसाफ़िर हैं।" इसे अहमद ने रिवायत किया है।[1]

मसला 417. सफ़र में वित्र भी अदा करने चाहिए।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 366 के अन्तर्गत देखें।

दौराने सफ़र में फ़र्ज़ नमाज़ों की रकआत की संख्या यह है :

नमाज़	फ़र्ज़	सुन्नतें
फ़ज्र	2	2
ज़ोहर	2	—
अस्र	2	—

नमाज़	फ़र्ज़	सुन्नतें
मग़रिब	3	—
इशा	2	1 वित्र
जुमा	2	—

स्पष्टीकरण : दौराने सफ़र मुसाफ़िर को नमाज़े जुमा की बजाए नमाज़े ज़ोहर की क़स्र अदा करनी चाहिए अलबत्ता जामा मस्जिद में नमाज़ अदा करने वाला मुसाफ़िर दूसरों के साथ नमाज़े जुमा अदा कर सकता है।

मसला 418. सफ़ीना (बहरी जहाज़, हवाई जहाज़, रेलगाड़ी आदि) में फ़र्ज़ नमाज़ अदा करना जाइज़ है।

मसला 419. कोई ख़तरा न हो तो सवारी पर खड़े होकर फ़र्ज़ नमाज़

1. 4/431

Www.IslamicBooks.Website

अदा करनी चाहिए, वरना बैठकर पढ़ी जा सकती है।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ كَيْفَ أُصَلِّيْ فِي السَّفِيْنَةِ ؟ قَالَ : صَلِّ فِيْهَا قَائِمًا إِلاَّ أَنْ تَخَافَ الْغَرْقَ . رَوَاهُ الْبَزَّارُ وَالدَّارَقُطْنِيُّ(٢) (صحيح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० से सफ़ीना में नमाज़ें पढ़ने के बारे में सवाल किया गया, तो आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया "अगर डूबने का ख़तरा न हो, तो खड़े होकर नमाज़ अदा करो।" इसे बज़्ज़ार और दारे क़ुतनी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 420. सुन्नतें और नवाफ़िल सवारी पर बैठकर अदा किए जा सकते हैं।

मसला 421. नमाज़ शुरू करने से पहले सवारी का रुख़ क़िबले की तरफ़ कर लेना चाहिए। बाद में चाहे किसी तरफ़ हो जाए।

मसला 422. दौराने सफ़र अगर सवारी का रुख़ क़िबले की तरफ़ करना मुमकिन न हो तो जिस रुख़ पर हो, उसी रुख़ पर नमाज़ अदा कर लेनी चाहिए।

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا أَرَادَ أَنْ يُصَلِّيَ عَلَى رَاحِلَتِهِ تَطَوُّعًا إِسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ فَكَبَّرَ لِلصَّلاَةِ ثُمَّ خَلَّى عَنْ رَاحِلَتِهِ فَصَلَّى حَيْثُمَا تَوَجَّهَتْ بِهِ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَ أَبُوْدَاوُدَ(١) (حسن)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं जब रसूलुल्लाह सल्ल० सवारी पर नफ़िल पढ़ने का इरादा फ़रमाते तो उसे क़िबला रुख़ करके नीयत बांध लेते फिर सवारी जिधर जाती उसे जाने देते और नमाज़ पढ़ लेते। इसे अहमद और अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

मसला 423. सफ़र में दो आदमी भी हों, तो उन्हें अज़ान कहकर जमाअत से नमाज़ अदा करनी चाहिए।

عَنْ مَالِكِ بْنِ حُوَيْرِثٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ أَتَى رَجُلاَنِ النَّبِيَّ ﷺ يُرِيْدَانِ السَّفَرَ

1. सहीह जामेअ सग़ीर, लिलअलबानी, तीसरा भाग, हदीस 3671
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1084

Www.IslamicBooks.Website

فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَنْتُمَا خَرَجْتُمَا فَأَذِّنَا ثُمَّ أَقِيمَا ثُمَّ لِيَؤُمَّكُمَا أَكْبَرُكُمَا . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٢)

हज़रत मालिक बिन जुवैरिस रज़ि० से रिवायत है कि दो आदमी जो सफ़र पर जाने का इरादा रखते थे, रसूले अकरम सल्ल० की सेवा में हाज़िर हुए। आपने उन्हें फ़रमाया "जब तुम दोनों सफ़र के लिए निकलो (तो नमाज़ के समय) अज़ान कहना फिर इक़ामत कहना और फिर तुम दोनों में से जो बड़ा हो वह इमामत कराए।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 424. सफ़र में सुन्नतें नफ़िल का दर्जा रखती हैं।

عَنْ حَفْصٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ كَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يُصَلِّيْ بِمِنًى رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ يَأْتِيْ فِرَاشَهُ فَقَالَ : حَفْصٌ أَيْ عَمِّ لَوْ صَلَّيْتَ بَعْدَهَا رَكْعَتَيْنِ؟ قَالَ : لَوْ فَعَلْتُ لَأَتْمَمْتُ الصَّلَاةَ .. رواهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत हफ़्स रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० मिना में नमाज़े क़स्र अदा करते और अपने बिस्तर पर आ जाते। हज़रत हफ़्स रज़ि० ने कहा "चचा जान! अगर आप नमाज़ क़स्र के बाद दो रकअत (सुन्नत) अदा फ़रमा लेते तो कितना अच्छा होता?" अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने फ़रमाया "अगर मुझे सुन्नतें अदा करना होतीं, तो मैं फ़र्ज़ पूरे करता।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 425. मुसाफ़िर मुक़तदी को मुक़ीम इमाम के पीछे पूरी नमाज़ अदा करनी चाहिए।

عَنْ نَافِعٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَقَامَ بِمَكَّةَ عَشْرَ لَيَالٍ يَقْصُرُ الصَّلَاةَ إِلاَّ أَنْ يُصَلِّيَهَا مَعَ الْإِمَامِ فَيُصَلِّيْهَا بِصَلَاتِهِ . رَوَاهُ مَالِكٌ (٢)

हज़रत नाफ़ेअ रज़ि० से रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० मक्का मुकर्रमा में दस रात ठहरे और क़स्र नमाज़ अदा करते रहे। मगर जब इमाम के पीछे पढ़ते, तो पूरी पढ़ते। इसे मालिक ने रिवायत किया है।[3]

1. किताबुल अज़ान, बाब अज़ान लिल मुसाफ़िरीन।
2. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 437
3. किताब क़स्रुस्सलात, बाब सलातुल मुसाफ़िरीन।

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़ें जमा करने के मसाइल

मसला 426 बारिश की वजह से दो नमाज़ें जमा की जा सकती हैं।

عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ كَانَ إِذَا جَمَعَ الْأُمَرَاءُ بَيْنَ الْمَغْرِبِ وَ الْعِشَاءِ فِي الْمَطَرِ جَمَعَ مَعَهُمْ . رَوَاهُ مَالِكٌ (١)

हज़रत नाफ़ेअ रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० हुक्काम के साथ मिलकर मग़रिब और इशा की नमाज़ बारिश की वजह से जमा कर लेते थे। इसे मालिक ने रिवायत किया है।[1]

मसला 427. अज्ञानता के दौर की छुट गयी नमाज़ें हाज़िर नमाज़ों के साथ जमा करना (क़ज़ाए उम्री) सुन्नत से साबित नहीं।

मसला 428. दौराने सफ़र दो नमाज़ें जमा की जा सकती हैं।

स्पष्टीकरण : हदीस मसला नं० 411 के अन्तर्गत देखें।

मसला 429. दो नमाज़ें जमा करने के लिए अज़ान एक बार लेकिन इक़ामत अलग अलग कहनी चाहिए।

मसला 430. दौराने सफ़र जमा नमाज़ें क़स्र करके अदा करनी चाहिएं।

मसला 431. क़याम के दौरान जमा नमाज़ें पूरी पढ़नी चाहिएं।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : صَلَّيْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ ثَمَانِيًا جَمِيْعًا وَ سَبْعًا جَمِيْعًا . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٢)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ (ज़ोहर और अस्र की) आठ रकअतें और (मग़रिब और इशा की) सात रकअतें जमा कीं। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

---

1. किताबुस्सलात, बाब जमा बैनुस्सलातैन फ़िल हज़र वस्सफ़र।
2. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 411

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़े जनाज़ा के मसाइल

मसला 432. नमाज़े जनाज़ा की श्रेष्ठता।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَنْ شَهِدَ الْجَنَازَةَ حَتَّى يُصَلَّىٰ فَلَهُ قِيْرَاطٌ وَ مَنْ شَهِدَ حَتَّى تُدْفَنَ كَانَ لَهُ قِيْرَاطَانِ . قَالَ : وَ مَا الْقِيْرَاطَانِ ؟ قَالَ : مِثْلُ الْجَبَلَيْنِ الْعَظِيْمَيْنِ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जो व्यक्ति जनाज़े में शामिल हो और नमाज़ पढ़े, उसे एक क़ीरात का सवाब मिलता है और जो व्यक्ति मय्यित दफ़न करने तक मौजूद रहे उसे दो क़ीरात का सवाब मिलता है।" सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया "या रसूलुल्लाह सल्ल०! क़ीरात का क्या मतलब है?" नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "दो क़ीरात दो बड़े पहाड़ों के बराबर है।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 433. नमाज़े जनाज़ा में केवल क़याम है जिसमें चार तकबीरें हैं। न रुकूअ है न सज्दा।

मसला 434. ग़ायबाना नमाज़े जनाज़ा पढ़नी जाइज़ है।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَعَى النَّجَاشِيَّ فِي الْيَوْمِ الَّذِي مَاتَ فِيْهِ خَرَجَ إِلَى الْمُصَلَّى فَصَفَّ بِهِمْ وَكَبَّرَ أَرْبَعًا مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. (٢)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने लोगों को नज्जाशी की मौत की ख़बर उसी दिन पहुंचा दी जिस दिन उसका देहान्त हुआ। आप सल्ल० सहाबा किराम रज़ि० के साथ जनाज़ागाह तशरीफ़ ले गए उनकी पंक्ति बनाई और चार तकबीरें कहकर नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

---

1. किताबुल जनाइज़।
2. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलज़ुबैदी, हदीस 638

Www.IslamicBooks.Website

मसला 435. लोगों की संख्या के अनुसार कम या ज़्यादा पंक्तियां बनाई जातीं।

मसला 436. नमाज़े जनाज़ा के लिए पंक्तियों की संख्या का निर्धारण सुन्नत से साबित नहीं।

عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُوْلُ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ قَدْ تُوُفِّيَ الْيَوْمَ رَجُلٌ صَالِحٌ مِنَ الْحَبَشِ فَهَلُمَّ فَصَلُّوْا عَلَيْهِ . قَالَ : فَصَفَفْنَا فَصَلَّى النَّبِيُّ ﷺ وَ نَحْنُ صُفُوْفٌ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "आज हब्शा के एक सदाचारी आदमी का इंतक़ाल हो गया है, लिहाज़ा आओ उसकी (ग़ायबाना) नमाज़े जनाज़ा पढ़ें।" हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं, हमने पंक्तियां बनाईं और नबी अकरम सल्ल० ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई, नमाज़ में हमारी कई पक्तियां थीं। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 437. पहली तकबीर के बाद सूरह फ़ातिहा पढ़नी मसनून है।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَرَأَ عَلَى الْجَنَازَةِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْ دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَةَ (٢) (صحيح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने नमाज़े जनाज़ा में सूरह फ़ातिहा पढ़ी। इसे तिर्मिज़ी, अबू दाऊद और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[2]

عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَوْفٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ صَلَّيْتُ خَلْفَ ابْنِ عَبَّاسٍ عَلَى جَنَازَةٍ فَقَرَأَ فَاتِحَةَ الْكِتَابِ فَقَالَ لِتَعْلَمُوْا أَنَّهَا سُنَّةٌ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٣)

हज़रत तलहा बिन अब्दुल्लाह बिन औफ़ रज़ि० फ़रमाते हैं "मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० के पीछे नमाज़े जनाज़ा पढ़ी, तो

1. किताबुल जनाइज़, बाब सफ़ूफ़ अलल जनाज़ा।
2. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग हदीस 1215

Www.IslamicBooks.Website

उन्होंने उसमें सूरह फ़ातिहा पढ़ी और फ़रमाया "जान रखो यह सुन्नत है।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 438. पहली तकबीर के बाद सूरह फ़ातिहा दूसरी तकबीर के बाद दुरूद शरीफ़, तीसरी तकबीर के बाद दुआ और चौथी तकबीर के बाद सलाम फेरना मसनून है।

मसला 439. नमाज़े जनाज़ा में धीमी या तेज़ आवाज़ की क़िरअत करना दोनों तरह सही है।

मसला 440. सूरह फ़ातिहा के बाद क़ुरआन मजीद की कोई सूरह साथ मिलाना भी जाइज़ है।

عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ صَلَّيْتُ خَلْفَ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَلَى جَنَازَةٍ فَقَرَأَ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ وَسُوْرَةٍ وَجَهَرَ حَتَّى أَسْمَعَنَا فَلَمَّا فَرَغَ أَخَذْتُ بِيَدِهِ فَسَأَلْتُهُ قَالَ إِنَّمَا جَهَرْتُ لِتَعْلَمُوْا أَنَّهَا سُنَّةٌ وَحَقٌّ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ النَّسَائِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ. (١) (صحيح)

हज़रत तलहा बिन अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० के पीछे नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। उन्होंने सूरह फ़ातिहा के बाद एक दूसरी सूरह ऊंची आवाज़ में पढ़ी, जो हमने सुनी। जब अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़ारिग हुए, तो मैंने उनको हाथ से पकड़ा और (क़िरअत के बारे) में उनसे पूछा। उन्होंने जवाब दिया "मैंने ऊंची आवाज़ में क़िरअत इसलिए की है ताकि तुम्हें मालूम हो जाए कि यह सुन्नत है।" इसे बुख़ारी, अबू दाऊद, नसाई और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[2]

عَنْ أَبِيْ أُمَامَةَ بْنِ سَهْلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّ السُّنَّةَ فِي الصَّلَاةِ عَلَى الْجَنَازَةِ أَنْ يُكَبِّرَ الإِمَامُ ثُمَّ يَقْرَأُ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ بَعْدَ

1. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलज़ुबैदी, हदीस 673
2. अहकामुल जनाइज़, लिलअलबानी, पृष्ठ 119

Www.IslamicBooks.Website

لتَكْبِيْرَةِ الأُوْلَى سِرًّا فِى نَفْسِهِ ثُمَّ يُصَلِّىْ عَلَى النَّبِىِّ ﷺ وَيُخْلِصُ الدُّعَاءَ لِلْجَنَازَةِ فِى لتَكْبِيْرَاتِ لاَ يَقْرَأُ فِى شَيْءٍ مِنْهُنَّ ثُمَّ يُسَلِّمُ سِرًّا فِى نَفْسِهِ رَوَاهُ الشَّافِعِىُّ . (٢) (صحيح)

हज़रत अबू उमामा बिन सहल रज़ि० नबी अकरम सल्ल० के एक सहाबी रज़ि० से रिवायत करते हैं कि नमाज़े जनाज़ा में इमाम का पहली तकबीर के बाद ख़ामोशी से सूरह फ़ातिहा पढ़ना फिर (दूसरी तकबीर के बाद) नबी अकरम सल्ल० पर दुरूद भेजना फिर (तीसरी तकबीर) के बाद सच्चे दिल से मय्यित के लिए दुआ करना और ऊंची आवाज़ से क़िरअत न करना (चौथी तकबीर के बाद) धीमी आवाज़ में सलाम फेरना सुन्नत है। इसे शाफ़ई ने रिवायत किया है।[1]

मसला 441. दुरूद शरीफ़ के बाद तीसरी तकबीर में निम्न दुआओं में से कोई एक या दोनों दुआएं मांगनी चाहिएं।

عَنْ أَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا صَلَّى على الْجَنَازَةِ قَالَ اللهمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَأُنْثَانَا اَللّٰهُمَّ مَنْ أَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَاَحْيِهِ عَلَى الإِسْلاَمِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ على الإِيْمَانِ اَللّٰهُمَّ لاَ تَحْرِمْنَا أَجْرَهُ وَلاَ تُضِلَّنَا بَعْدَهُ رَوَاهُ أَحْمَد وأَبُوْ دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِىُّ وَابْنُ مَاجَةَ . (١) (صحيح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० नमाज़े जनाज़ा में यह दुआ पढ़ा करते थे। "या अल्लाह! हमारे ज़िंदों और मुर्दों को, हाज़िर और ग़ायब को, छोटों और बड़ों को, मर्दों और औरतों को बख़्श दे। या अल्लाह! हममें से जिसको तू ज़िंदा रखना चाहता है उसे इस्लाम पर ज़िंदा रख और जिसे मारना चाहे ईमान पर मौत दे। या अल्लाह! हमें मरने वाले पर सब्र करने के सवाब से महरूम न रख। और उसके बाद हमें गुमराह न करना।" इसे अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और

1. मुसनद शाफ़ई, पहला भाग, हदीस 581

Www.IslamicBooks.Website

इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ صَلَّى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَلَى جَنَازَةٍ فَحَفِظْتُ مِنْ دُعَائِهِ وَهُوَ يَقُوْلُ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَهُ وَارْحَمْهُ وَعَافِهِ وَاعْفُ عَنْهُ وَاَكْرِمْ نُزُلَهُ وَوَسِّعْ مُدْخَلَهُ وَاغْسِلْهُ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَنَقِّهِ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الْأَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ وَاَبْدِلْهُ دَارًا خَيْرًا مِنْ دَارِهِ وَأَهْلًا خَيْرًا مِنْ أَهْلِهِ وَزَوْجًا خَيْرًا مِنْ زَوْجِهِ وَاَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ وَاَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ عَذَابِ النَّارِ قَالَ حَتّٰى تَمَنَّيْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَنَا ذٰلِكَ الْمَيِّتَ رَوَاهُ مُسْلِمٌ. (٢)

हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि नबी अकरम सल्ल० ने एक जनाज़े पर नमाज़ पढ़ी और मैंने वह दुआ याद कर ली। आप सल्ल० ने यह दुआ पढ़ी "या अल्लाह! इसे बख़्श दे। इस पर रहम फ़रमा, इसे आराम दे और माफ़ फ़रमा। इसकी सम्मान पूर्वक मेहमानी कर, इसकी क़ब्र कुशादा फ़रमा दे, इसे पानी, बर्फ़ और ओलों से धोकर इस तरह गुनाहों से पाक और साफ़ फ़रमा जिस तरह सफ़ेद कपड़ा मैल कुचैल से साफ़ किया जाता है। इसे इसके घर से बेहतर घर, इसके घर वालों से बेहतर घर वाले, इसके साथी से बेहतर साथी अता फ़रमा, इसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा और अज़ाबे क़ब्र और आग के अज़ाब से महफ़ूज़ रख। हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ि० कहते हैं यह दुआ सुनकर मैंने यह इच्छा की कि काश यह मेरी मय्यित होती।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 442. बच्चे के जनाज़े में निम्न दुआ पढ़ना मसनून है।

صَلَّى الْحَسَنُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَلَى الطِّفْلِ فَاتِحَةَ الْكِتَابِ وَ يَقُوْلُ : اَللّٰهُمَّ سَلَفًا وَ فَرَطًا وَ ذُخْرًا وَ اَجْرًا . رواه البخاری(١)

हज़रत हसन रज़ि० बच्चे पर जनाज़ा पढ़ते तो इसमें सूरह फ़ातिहा

1. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1217
2. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 477

Www.IslamicBooks.Website

पढ़ते और यह दुआ करते, "या अल्लाह! इस बच्चे को हमारे लिए पूर्वज, काफ़िले का अमीर और सवाब का कारण बना।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 443. नमाज़े जनाज़ा पढ़ने के लिए इमाम को मर्द के सिर और औरत के बीच में खड़ा होना चाहिए।

عَنْ أَبِيْ غَالِبٍ ، قَالَ رَأَيْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ صَلَّى عَلَى جَنَازَةِ رَجُلٍ فَقَامَ حِيَالَ رَأْسِهِ فَجِيْئَ بِجَنَازَةٍ أُخْرَى ، بِامْرَأَةٍ . فَقَالُوْا : يَا أَبَا حَمْزَةَ ! صَلِّ عَلَيْهَا ، فَقَامَ حِيَالَ وَسْطِ السَّرِيْرِ . فَقَالَ لَهُ الْعَلاَءُ بْنُ زِيَادٍ : يَا أَبَا حَمْزَةَ ! هٰكَذَا رَأَيْتَ رَسُوْلَ اللهِ قَامَ مِنَ الْجَنَازَةِ مُقَامَكَ مِنَ الرَّجُلِ وَ قَامَ مِنَ الْمَرْأَةِ مُقَامَكَ مِنَ الْمَرْأَةِ ؟ قَالَ : نَعَمْ ! فَأَقْبَلَ عَلَيْنَا ، فَقَالَ : احْفَظُوْا . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (٢) (صحيح)

हज़रत अबू ग़ालिब रज़ि० से रिवायत है कि मैंने अनस बिन मालिक रज़ि० को एक मर्द की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाते देखा और वह उसके सिर के सामने खड़े हुए उसके बाद एक दूसरा जनाज़ा लाया गया जो औरत का था। लोगों ने कहा, "ऐ अबू हमज़ा! इसकी नमाज़ पढ़ाइए।" हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० मय्यित की चारपाई के बीच में खड़े हुए। हज़रत अला बिन ज़ियाद ने हज़रत अनस रज़ि० से कहा "ऐ अबू हमज़ा! क्या तूने रसूलुल्लाह सल्ल० को मर्द और औरत का जनाज़ा पढ़ाने के लिए इसी जगह खड़े होते देखा है जहां तुम खड़े हुए?" हज़रत अनस रज़ि० ने फ़रमाया "हां!" फिर वह हमारी तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़रमाया "इसे अच्छी तरह ज़ेहन नशीन कर लो।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[2]

मसला 444. नमाज़े जनाज़ा की तमाम तकबीरों में हाथ उठाना चाहिए।

---

1. किताबुल जनाइज़, बाब क़िरअत फ़ातिहतुल किताब अलल जनाज़ा।
2. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1214

Www.IslamicBooks.Website

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي جَمِيْعِ تَكْبِيْرَاتِ الْجَنَازَةِ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٣)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० नमाज़े जनाज़ा की तमाम तकबीरों में हाथ उठाया करते थे। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 445. नमाज़े जनाज़ा में दोनों हाथ सीने पर बांधने मसनून हैं।

عَنْ طَاؤُوْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَضَعُ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى يَدِهِ الْيُسْرَى ثُمَّ يَشُدُّ بِهِمَا عَلَى صَدْرِهِ وَهُوَ فِي الصَّلَاةِ . رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ (١)

(صحيح)

हज़रत ताऊस रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने नमाज़ में दायां हाथ बाएं के ऊपर रखकर मज़बूती से सीने पर बांधा। इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

मसला 446. नमाज़े जनाज़ा में केवल एक सलाम कहकर नमाज़ ख़त्म करना भी जाइज़ है।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ صَلَّى عَلَى جَنَازَةٍ فَكَبَّرَ عَلَيْهَا أَرْبَعًا وَسَلَّمَ تَسْلِيْمَةً وَاحِدَةً رَوَاهُ الدَّارَ قُطْنِيُّ وَالْحَاكِمُ وَالْبَيْهَقِيُّ. (٢)

(حسن)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई उसमें चार तकबीरें कहीं और एक सलाम कहा। इसे दारे क़ुतनी, हाकिम और बैहेक़ी ने रिवायत किया है।[3]

मसला 447. मस्जिद में नमाज़े जनाज़ा पढ़ना जाइज़ है।

मसला 448. औरत मस्जिद में नमाज़े जनाज़ा अदा कर सकती है।

عَنْ أَبِيْ سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِالرَّحْمٰنِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا لَمَّا تُوُفِّيَ سَعْدُ بْنُ أَبِيْ وَقَّاصٍ فَقَالَتْ : اُدْخُلُوْا بِهِ الْمَسْجِدَ حَتّٰى أُصَلِّيَ عَلَيْهِ فَأَنْكَرَ ذٰلِكَ عَلَيْهَا فَقَالَتْ :

1. नैलुल अवतार, चौथा भाग, पृष्ठ 68
2. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 687
3. अहकामुल जनाइज़, लिलअलबानी, पृष्ठ 128

Www.IslamicBooks.Website

وَاللهِ لَقَدْ صَلَّى رَسُوْلُ اللهِ عَلَى ابْنَىْ بَيْضَاءَ فِى الْمَسْجِدِ سُهَيْلٍ وَ أَخِيْهِ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (۳)

हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान रज़ि० रिवायत करते हैं कि जब साअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० का इंतक़ाल हुआ तो हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया "हज़रत साअद का जनाज़ा मस्जिद में लाओ ताकि मैं भी नमाज़े जनाज़ा अदा कर सकूं।" लोगों ने (मस्जिद में नमाज़े जनाज़ा पढ़ना) नापसन्द किया तो हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया "अल्लाह की क़सम! रसूलुल्लाह सल्ल० ने बैज़ा के दोनों बेटों अर्थात सुहेल और उसके भाई की नमाज़े जनाज़ा मस्जिद में पढ़ी है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 449. क़ब्रिस्तान में नमाज़े जनाज़ा पढ़ना मना है।

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِىَّ ﷺ نَهَى أَنْ يُصَلَّى عَلَى الْجَنَائِزِ بَيْنَ الْقُبُوْرِ . رَوَاهُ الطَّبَرَانِىُّ. (حسن)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने हमें क़ब्रिस्तान में नमाज़े जनाज़ा पढ़ने से मना फ़रमाया है। इसे तबरानी ने रिवायत किया है।[2]

मसला 450. क़ब्रिस्तान से अलग अकेले क़ब्र पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ना जाइज़ है।

मसला 451. मय्यित दफ़नाने के बाद नमाज़े जनाज़ा पढ़ना जाइज़ है।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: انْتَهَى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِلَى قَبْرٍ رَطْبٍ فَصَلَّى عَلَيْهِ وَصَفُّوْا خَلْفَهُ وَكَبَّرَ أَرْبَعًا مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह

1. किताबुल जनाइज़, बाबुस्सलात अलल जनाज़ा फ़िल मस्जिद।
2. अहकामुल जनाइज़, लिलअलबानी, पृष्ठ 108

Www.IslamicBooks.Website

सल्ल० का एक ताज़ा क़ब्र पर गुज़र हुआ, तो आप सल्ल० ने उस पर नमाज़ पढ़ी। सहाबा किराम रज़ि० ने भी आप सल्ल० के पीछे सफ़ें बांधकर नमाज़ पढ़ी। रसूलुल्लाह सल्ल० ने नमाज़े जनाज़ा में चार तकबीरें कहीं। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 451-1. एक से अधिक मय्यितों पर एक ही नमाज़े जनाज़ा पढ़नी जाइज़ है।

मसला 452. मय्यित में मर्द और औरतें हों, तो मर्द की मय्यित इमाम के क़रीब और औरत की मय्यित क़िबले की तरफ़ होनी चाहिए।

عَنْ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ بَلَغَهُ أَنَّ عُثْمَانَ ابْنَ عَفَّانَ وَعَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ وَأَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ كَانُوْا يُصَلُّوْنَ عَلَى الْجَنَائِزِ بِالْمَدِيْنَةِ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ فَيَجْعَلُوْنَ الرِّجَالَ مِمَّا يَلِي الإِمَامَ وَالنِّسَاءَ مِمَّا يَلِي الْقِبْلَةَ رَوَاهُ مَالِكٌ.

इमाम मालिक रह० से रिवायत है कि हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान, अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० मर्दों और औरतों पर इकट्ठी नमाज़े जनाज़ा पढ़ते, तो मर्दों को इमाम की तरफ़ और औरतों को क़िबले की तरफ़ रखते। इसे मालिक ने रिवायत किया है।[2]

1. नैलुल अवतार, किताबुल जनाइज़ अस्सलात।
2. किताबुल जनाइज़, बाब जामेअ सलात, अलल जनाइज़।

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़े ईदैन के मसाइल

मसला 453. ईदुल फ़ित्र की नमाज़ के लिए जाने से पहले कोई मीठी चीज़ खाना सुन्नत है।

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لاَ يَغْدُوْ يَوْمَ الْفِطْرِ حَتّٰى يَأْكُلَ تَمَرَاتٍ وَيَأْكُلُهُنَّ وِتْرًا . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ईद की दिन खजूरें खाए बिना ईदगाह की तरफ़ नहीं जाते थे और नबी अकरम सल्ल० खजूरें ताक़ खाते थे। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

मसला 453-1. नमाज़े ईद के लिए पैदल जाना और वापस आना सुन्नत है।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَخْرُجُ إِلَى الْعِيْدِ مَاشِيًا وَ يَرْجِعُ مَاشِيًا . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (٢) (حسن)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं नबी अकरम सल्ल० ईदगाह पैदल जाते और पैदल ही वापस तशरीफ़ लाते। इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[2]

मसला 454. ईदगाह जाने और आने का रास्ता बदलना सुन्नत है।

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا كَانَ يَوْمُ عِيْدٍ خَالَفَ الطَّرِيْقَ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं नबी करीम सल्ल० ईद के दिन ईदगाह में आने जाने का रास्ता बदल दिया करते थे। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[3]

---

1. किताबुल ईदैन, बाब अकल यौमुल फ़ित्र क़ब्लल ख़ुरूज।
2. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1071
3. किताबुल ईदैन बाब ख़ाइफ़ुत्तरीक़ इज़ा रजअ यौमुल ईद।

Www.IslamicBooks.Website

मसला 455. नमाज़े ईद बस्ती से बाहर खुले मैदान में पढ़ना सुन्नत है।

मसला 456. नमाज़े ईद के लिए औरतों को भी ईदगाह में जाना चाहिए।

عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ أَمَرَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ أَنْ نُخْرِجَ الْحُيَّضَ يَوْمَ الْعِيْدَيْنِ وَذَوَاتِ الْخُدُوْرِ فَيَشْهَدْنَ جَمَاعَةَ الْمُسْلِمِيْنَ وَدَعْوَتَهُمْ وَتَعْتَزِلُ الْحُيَّضُ عَنْ مُصَلَّاهُنَّ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (۳)

हज़रत उम्मे अतिया रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने हुक्म दिया कि दोनों ईदों के दिन हम हैज़ वाली और पर्दा नशीन (अर्थात तमाम) औरतों को ईदगाह में लाएं ताकि वे मुसलमानों के साथ नमाज़ और दुआ में शिरकत करें। अलबत्ता हैज़ वाली औरतें नमाज़ की जगह से अलग रहें। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 457. ईद की नमाज़ के लिए अज़ान है न इक़ामत।

عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: صَلَّيْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَلْعِيْدَيْنِ غَيْرَ مَرَّةٍ وَلَا مَرَّتَيْنِ بِغَيْرِ أَذَانٍ وَّلَا إِقَامَةٍ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (۱)

हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ि० कहते हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ एक दो बार नहीं कई बार ईदैन की नमाज़ अज़ान और इक़ामत के बिना पढ़ी। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 458. ईदैन की नमाज़ में बारह तकबीरें हैं पहली रकअत में क़िरअत से पहले सात दूसरी में क़िरअत से पहले पांच तकबीरें कहनी मसनून हैं।

عَنْ نَافِعٍ مَوْلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ شَهِدْتُ الْأَضْحَى وَالْفِطْرَ مَعَ أَبِيْ هُرَيْرَةَ فَكَبَّرَ فِي الرَّكْعَةِ الْأُوْلَى سَبْعَ تَكْبِيْرَاتٍ قَبْلَ الْقِرَاءَةِ وَفِي الْآخِرَةِ خَمْسَ تَكْبِيْرَاتٍ قَبْلَ الْقِرَاءَةِ . رَوَاهُ مَالِكٌ (۲)

---

1. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 511
2. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 427

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० के आज़ाद करदा ग़ुलाम नाफ़ेअ रज़ि० कहते हैं मैंने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० के साथ ईदुल फ़ित्र और ईदुज़्ज़ुहा दोनों की नमाज़ पढ़ी। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने पहली रकअत में क़िरअत से पहले सात तकबीरें और दूसरी रकअत में क़िरअत से पहले पांच तकबीरें कहीं। इसे मालिक ने रिवायत किया है।[1]

मसला 459. ईदैन की नमाज़ में पहले नमाज़ और फिर ख़ुत्बा देना मसनून है।

عن ابن عمر رضي الله عنهما قال : كان رسول الله ﷺ و أبو بكر و عمر رضي الله عنهما يصلون العيدين قبل الخطبة . متفق عليه (١)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल०, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० नमाज़े ईदैन ख़ुत्बा से पहले अदा फ़रमाया करते थे। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 460. नमाज़े ईद से पहले या बाद कोई नमाज़ नहीं।

عن ابن عباس رضي الله عنهما قال خرج النبي ﷺ يوم اضحى أو فطر فصلى ركعتين لم يصل قبلها ولا بعدها رواه مسلم (٢)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ईदुज़्ज़ुहा या ईदुल फ़ित्र के दिन नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले गए। दो रकअतें नमाज़ पढ़ाई, न उससे पहले कोई नमाज़ पढ़ी न उसके बाद। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 461. नमाज़े ईद के बाद घर वापस जाकर दो रकअत नमाज़ पढ़ना मसनून है।

---

1. किताबुस्सलात, बाब माजा फ़ित्तकबीर वल क़िरअत सलातुल ईदैन।
2. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 509
3. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 430

Www.IslamicBooks.Website

عَنْ أَبِیْ سَعِیْدٍ ـ اَلْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ : کَانَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ لاَ یُصَلِّیْ قَبْلَ الْعِیْدِ شَیْئًا فَإِذَا رَجَعَ إِلٰی مَنْزِلِہٖ صَلّٰی رَکْعَتَیْنِ رَوَاہُ ابْنُ مَاجَۃَ(٣)(حسن)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० नमाज़े ईद से पहले कोई नमाज़ नहीं पढ़ते थे अलबत्ता (नमाज़े ईद के बाद) जब घर वापस तशरीफ़ लाते तो दो रकअत नमाज़ अदा फ़रमाते। इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

मसला 462. अगर जुमा के दिन ईद आ जाए, तो दोनों पढ़ने बेहतर हैं लेकिन ईद पढ़ने के बाद अगर जुमा की बजाए केवल नमाज़े ज़ोहर अदा की जाए, तो भी सही है।

عَنْ أَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰہِ ﷺ أَنَّہٗ قَالَ : اِجْتَمَعَ عِیْدَانِ فِیْ یَوْمِکُمْ ھٰذَا فَمَنْ شَاءَ أَجْزَأَہٗ مِنَ الْجُمُعَۃِ وَ إِنَّا مُجَمِّعُوْنَ . رَوَاہُ أَبُوْدَاوٗدَ وَابْنُ مَاجَۃَ (٤) (صحیح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने रसूलुल्लाह सल्ल० से रिवायत की है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "तुम्हारे आज के दिन में दो ईदें (एक ईद दूसरा जुमा) इकट्ठी हो गई हैं। जो चाहे उसके लिए जुमा के बदले ईद ही काफ़ी है। लेकिन हम जुमा भी पढ़ेंगे।" इसे अबू दाऊद और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[2]

मसला 463. बादल की वजह से शव्वाल का चांद नज़र न आए और रोज़ा रख लेने के बाद मालूम हो जाए कि चांद नज़र आ चुका है, तो रोज़ा खोल देना चाहिए।

मसला 464. अगर चांद की ख़बर ज़वाल से पहले मिले, तो नमाज़े ईद उसी दिन अदा कर लेनी चाहिए और ज़वाल के बाद ख़बर मिले, तो नमाज़े ईद दूसरे दिन अदा करनी चाहिए।

عَنْ أَبِیْ عُمَیْرِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ عُمُوْمَۃٍ لَہٗ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِیِّ ﷺ أَنَّ رَکْبًا

---

1. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1069
2. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1083

Www.IslamicBooks.Website

جَاءُوْا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ يَشْهَدُوْنَ أَنَّهُمْ رَأَوُا الْهِلَالَ بِالْأَمْسِ فَأَمَرَهُمْ : أَنْ يُفْطِرُوْا ، وَ إِذَا أَصْبَحُوْا أَنْ يَّغْدُوْا إِلَى مُصَلَّاهُمْ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ (١) (صحيح)

हज़रत अबू उमैर बिन अनस रज़ि० अपने चचाओं से जो कि असहाबे नबी में से थे, रिवायत करते हैं कि कुछ सवार नबी अकरम सल्ल० की सेवा में हाज़िर हुए और गवाही दी कि उन्होंने पिछले दिन (शव्वाल का) चांद देखा है अतः रसूले अकरम सल्ल० ने सहाबा किराम रज़ि० को हुक्म दिया कि वे रोज़ा तोड़ दें और फ़रमाया लोग कल सुबह (नमाज़े ईद के लिए) ईदगाह में आएं। इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[1]

मसला 465. ईदैन की नमाज़ देरी से पढ़ना नापसन्दीदा है।

मसला 466. ईदुल फ़ित्र की नमाज़ का समय इशराक़ की नमाज़ का समय है।

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُسْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ صَاحِبِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ خَرَجَ مَعَ النَّاسِ يَوْمَ عِيْدِ فِطْرٍ أَوْ أَضْحَى فَأَنْكَرَ إِبْطَاءَ الْإِمَامِ وَقَالَ إِنَّا كُنَّا قَدْ فَرَغْنَا سَاعَتَنَا هَذِهِ وَذَالِكَ حِيْنَ التَّسْبِيْحِ . رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ وَابْنُ مَاجَةَ (٢) (صحيح)

रसूलुल्लाह सल्ल० के सहाबी अब्दुल्लाह बिन बुस्र रज़ि० रिवायत करते हैं कि वह ईदुल फ़ित्र ईदुज़्ज़ुहा की नमाज़ के लिए लोगों के साथ ईदगाह रवाना हुए, तो आप (अब्दुल्लाह बिन बुस्र रज़ि०) ने इमाम के (नमाज़ में) देरी करने पर नापसन्दीदगी व्यक्त की और फ़रमाया "हम तो इस समय नमाज़ पढ़कर फ़ारिग हो जाते थे।" वह इशराक़ का समय था। इसे अबू दाऊद और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[2]

मसला 467. ईदगाह आते जाते तकबीरें पढ़ना सुन्नत है।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ كَانَ يَغْدُوْا إِلَى الْمُصَلَّى يَوْمَ الْفِطْرِ إِذَا

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1062
2. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1005

Www.IslamicBooks.Website

طَلَعَتِ الشَّمْسُ فَيُكَبِّرُ حَتَّى يَأْتِيَ الْمُصَلَّى ثُمَّ يُكَبِّرُ بِالْمُصَلَّى حَتَّى إِذَا جَلَسَ الْإِمَامُ تَرَكَ التَّكْبِيرَ . رَوَاهُ الشَّافِعِيُّ (١)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ईद के दिन सुबह सुबह सूरज निकलते ही ईदगाह तशरीफ़ ले जाते और ईदगाह तक तकबीरें कहते जाते फिर ईदगाह में भी तकबीरें कहते रहते यहां तक कि जब इमाम बैठ जाता तो तकबीरें कहनी छोड़ देते। इसे शाफ़ई ने रिवायत किया है।[1]

स्पष्टीकरण : मसनून तकबीर यह है :

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इला-ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर, व लिल्लाहिल हम्दु

मसला 468. अगर किसी को ईद की नमाज़ न मिल सके या बीमारी की वजह से ईदगाह न जा सके तो दो रकअत अकेले अदा कर लेनी चाहिएं।

أَمَرَ أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ مَوْلَاهُ ابْنَ أَبِي عُتْبَةَ بِالزَّاوِيَةِ فَجَمَعَ أَهْلَهُ وَبَنِيهِ وَصَلَّى كَصَلَاةِ أَهْلِ الْمِصْرِ وَتَكْبِيرِهِمْ، وَقَالَ عِكْرِمَةُ أَهْلُ السَّوَادِ يَجْتَمِعُونَ فِي الْعِيدِ يُصَلُّونَ رَكْعَتَيْنِ كَمَا يَصْنَعُ الْإِمَامُ وَقَالَ عَطَاءٌ إِذَا فَاتَهُ الْعِيدُ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٢)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० ने अपने ग़ुलाम इब्ने अबी ग़नियया को ज़ाविया गांव में नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दिया तो इब्ने अबी ग़नियया ने उनके घर वालों और बेटों को जमा किया और सबने शहर वालों की तकबीर की तरह तकबीर और नमाज़ की तरह नमाज़ पढ़ी। इकरमा रज़ि० ने कहा, गांव के लोग ईद के दिन जमा हों और दो रकअत नमाज़ पढ़ें, जिस तरह इमाम पढ़ता है और अता रज़ि० ने कहा, जब किसी की नमाज़े ईद छूट जाए तो दो रकअत नमाज़ अदा कर ले। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[2]

1. किताबुस्सलात, बाब फ़ी सलातुल ईदैन, हदीस 445
2. किताबुल ईदैन।

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़े इस्तिसक़ा के मसाइल

मसला 469. नमाज़े इस्तिसक़ा (बारिश तलब करने) के लिए बड़ी विवशता और मिस्कीनी की हालत में घरों से निकलना चाहिए।

मसला 470. नमाज़े इस्तिसक़ा बस्ती से बाहर खुले मैदान में जमाअत से अदा करनी चाहिए।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ خَرَجَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فِي الْاِسْتِسْقَاءِ مُتَبَذِّلاً مُتَوَاضِعًا مُتَضَرِّعًا حَتّٰى أَتَى الْمُصَلّٰى . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ (١) (حسن)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० नमाज़े इस्तिसक़ा के लिए मिस्कीनी, विवशता के साथ (मदीना से) और विनय की हालत में निकले और इसी हालत में नमाज़ की जगह पहुंचे। इसे तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसाई और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

मसला 471. नमाज़े इस्तिसक़ा के लिए न अज़ान है न इक़ामत।

मसला 472. नमाज़े इस्तिसक़ा की दो रकअतें हैं।

मसला 473. नमाज़े इस्तिसक़ा में क़िरअत बुलन्द आवाज़ से करनी चाहिए।

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : فَحَوَّلَ إِلَى النَّاسِ ظَهْرَهُ وَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ يَدْعُوْ ثُمَّ حَوَّلَ رِدَاءَهُ ثُمَّ صَلّٰى لَنَا رَكْعَتَيْنِ جَهَرَ فِيْهِمَا بِالْقِرَاءَةِ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٢)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि० कहते हैं कि (जब रसूले अकरम सल्ल० नमाज़े इस्तिसक़ा के लिए निकले तो) अपनी पुश्त लोगों की तरफ़ की और मुंह क़िबले की तरफ़ किया, दुआ की फिर अपनी चादर उलटी और हमें दो रकअत नमाज़ पढ़ाई जिसमें बुलन्द हाथ से क़िरअत की। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[2]

1. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1032
2. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलज़ुबैदी, हदीस 554

Www.IslamicBooks.Website

मसला 474. बारिश के लिए दुआ करते हुए हाथ उठाने चाहिएं।

मसला 475. नमाज़े इस्तिसक़ा के बाद दुआ करते समय हाथ इतने बुलन्द करने चाहिएं कि हाथों की पुश्त आसमानों की तरफ़ हो जाए।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ إِسْتَسْقَى فَأَشَارَ بِظَهْرِ كَفَّيْهِ إِلَى السَّمَاءِ

رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने नमाज़े इस्तिसक़ा में हाथों की पुश्त आसमान की तरह करके दुआ फ़रमाई। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 476. बारिश तलब करने की दो मसनून दुआएं ये हैं :

١- عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا اسْتَسْقَى قَالَ : اَللّٰهُمَّ اسْقِ عِبَادَكَ وَبَهَائِمَكَ وَانْشُرْ رَحْمَتَكَ وَ أَحْيِ بَلَدَكَ الْمَيِّتَ

رَوَاهُ أَبُوْدَاوُد (٢) (حسن)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (बिन आस) रज़ि० रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्ल० बारिश के लिए यह दुआ फ़रमाते "इलाही! अपने बन्दों और चौपायों को पानी पिला। अपनी रहमत आम फ़रमा दे और मुर्दा ज़मीन को हरा भरा कर दे।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।[2]

٢- عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ (ﷺ) رَفَعَ يَدَيْهِ قَالَ : اَللّٰهُمَّ أَغِثْنَا اَللّٰهُمَّ أَغِثْنَا اَللّٰهُمَّ أَغِثْنَا . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٣)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि (ख़ुत्बा जुमा के दौरान) नबी अकरम सल्ल० ने अपने हाथ बुलन्द फ़रमाए और (बारिश के लिए यूं दुआ फ़रमाई) "या अल्लाह! हम पर रहमत फ़रमा, ऐ अल्लाह! हम पर रहमत फ़रमा, ऐ अल्लाह! हम पर रहमत फ़रमा।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[3]

1. किताब सलातुल इस्तिसक़ा, बाब रफ़अ यदैन बिद्दुआ।
2. सहीह सुनन अबी दाऊद, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1043
3. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलज़ुबैदी, हदीस 553

Www.IslamicBooks.Website

मसला 477. बारिश होते समय यह दुआ मांगनी चाहिए।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ إِذَا رَأَى الْمَطَرَ قَالَ : اَللّٰهُمَّ صَيِّبًا نَافِعًا . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि नबी अकरम सल्ल० जब बारिश बरसते देखते तो फ़रमाते "या अल्लाह तआला! फ़ायदा पहुंचाने वाली बारिश बरसा।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 478. बारिश की अधिकता के नुक़सान से महफ़ूज़ रहने की दुआ।

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ رَفَعَ رَسُوْلُ اللهِ يَدَيْهِ ثُمَّ قَالَ : اَللّٰهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا اَللّٰهُمَّ عَلَى الْآكَامِ وَالظِّرَابِ وَ بُطُوْنِ الْأَوْدِيَةِ وَ مَنَابِتِ الشَّجَرِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٢)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने (बारिश की अधिकता के नुक़सान से महफ़ूज़ रहने के लिए) हाथ उठाए और फिर दुआ फ़रमाई "या अल्लाह! हमारी बजाए आस पास के इलाक़ों पर बारिश बरसा। मेरे अल्लाह! टबों, टीलों, नदी, नालों और पेड़ उगने की जगहों पर बारिश बरसा।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

1. मुख़्तसर सहीह बुख़ारी, लिलज़्ज़ुबैदी, हदीस 556
2. सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल इस्तिसक़ा, बाब दुआ फ़िल इस्तसक़ा।

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़ ख़ौफ़ के मसाइल

मसला 479. नमाज़े ख़ौफ़ के लिए सफ़र शर्त नहीं।

मसला 480. नमाज़े ख़ौफ़ के बारे में रसूले अकरम सल्ल० से कई तरीक़े साबित हैं, जंग की स्थिति को देखते हुए जिस तरह का मौक़ा हो उसी के अनुसार नमाज़ अदा की जाएगी।

मसला 481. अगर ख़ौफ़ सफ़र में हो तो चार रकअत वाली नमाज़ (ज़ोहर, अस्र और इशा) क़स्र करके दो रकअत अदा की जाएगी आधा लश्कर इमाम के पीछे एक रकअत अदा करके बाक़ी एक रकअत मैदाने जंग में जाकर अदा करेगा इस दौरान बाक़ी आधा लश्कर इमाम के पीछे एक रकअत अदा करके बाक़ी एक रकअत मैदाने जंग में वापस जाकर अदा करेगा।

मसला 482. अगर ख़ौफ़ क़याम में हो तो चार रकअत वाली नमाज़ पूरी अदा की जाएगी। आधा लश्कर इमाम के पीछे दो रकअत अदा करके बाक़ी दो रकअत मैदाने जंग में जाकर अदा करेगा। इस दौरान बाक़ी लश्कर इमाम के पीछे दो रकअत अदा करके बाक़ी दो रकअत वापस मैदाने जंग में जाकर अदा करेगा।

عن ابن عمر رضی الله عنهما قال : صلى رسول الله ﷺ صلاة الخوف باحدى الطائفتين ركعة والطائفة الاخرى مواجهة العدو ثم انصرفوا و قاموا فى مقام أصحابهم مقبلين على العدو و جاء أولئك ثم صلى بهم النبى ﷺ ركعة ثم سلم النبى ﷺ ثم قضى هؤلاء ركعة و هؤلاء ركعة . رواه مسلم (١)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने लश्कर के एक हिस्से को जंग के समय एक रकअत नमाज़ पढ़ाई जबकि लश्कर का दूसरा हिस्सा दुश्मन के साथ जंग में व्यस्त रहा। फिर नमाज़ पढ़ने वाला हिस्सा दुश्मन के सामने आ गया और दूसरे हिस्से

Www.IslamicBooks.Website

को रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक रकअत नमाज़ पढ़ाई और सलाम फेर दिया। फिर पहले और दूसरे दोनों हिस्सों ने अपनी (बाक़ी) एक एक रकअत (मैदाने जंग में अलग अलग) पूरी कर ली। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِذَاتِ الرِّقَاعِ وَ أُقِيْمَتِ الصَّلَاةُ فَصَلّٰى بِطَائِفَةٍ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ تَأَخَّرُوا وَ صَلّٰى بِالطَّائِفَةِ الْأُخْرٰى رَكْعَتَيْنِ وَ كَانَ لِلنَّبِيِّ ﷺ أَرْبَعٌ وَ لِلْقَوْمِ رَكْعَتَانِ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (۲)

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं ग़ज़वा रुक़ाअ के मौक़े पर हम रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ थे। नमाज़ की नीयत बांधी गई। रसूलुल्लाह सल्ल० ने लश्कर के एक हिस्से को दो रकअत नमाज़ पढ़ाई और वह चला गया, फिर लश्कर के दूसरे हिस्से को दो रकअत नमाज़ पढ़ाई इस तरह रसूलुल्लाह सल्ल० की चार और लोगों की दो दो रकअतें हो गईं। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

मसला 483. ज़्यादा ख़ौफ़ की सूरत में जिस हालत में मुमकिन हो नमाज अदा की जाएगी।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فِيْ صَلَاةِ الْخَوْفِ فَإِنْ كَانَ خَوْفٌ أَشَدُّ مِنْ ذَالِكَ فَرِجَالاً أَوْ رُكْبَانًا . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (۳)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि नबी अकरम सल्ल० ने सलातुल ख़ौफ़ का तरीक़ा बताते हुए फ़रमाया "अगर ख़तरा ज़्यादा हो तो पैदल या सवार (जैसे भी मुमकिन हो) नमाज़ अदा करो।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[3]

मसला 484. जंग की स्थिति देखते हुए नमाज़ क़ज़ा की जा सकती है।

1. किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब सलातुल ख़ौफ़।
2. मंतक़ी अख़बार, किताब सलातुल ख़ौफ़, हदीस 1703
3. किताबुस्सलात, बाब माजा फ़ी सलातुल ख़ौफ़।

Www.IslamicBooks.Website

عَنْ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ نَادَى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَوْمَ انْصَرَفَ عَنِ الْأَحْزَابِ أَنْ لَا يُصَلِّيَنَّ أَحَدٌ إِلَّا فِي بَنِي قُرَيْظَةَ فَتَخَوَّفَ نَاسٌ فَوْتَ الْوَقْتِ فَصَلُّوْا دُوْنَ بَنِي قُرَيْظَةَ وَ قَالَ آخَرُوْنَ لَا نُصَلِّي إِلَّا حَيْثُ أَمَرَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَ إِنْ فَاتَنَا الْوَقْتُ قَالَ فَمَا عَنَّفَ وَاحِدًا مِنَ الْفَرِيْقَيْنِ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (۱)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं जिस दिन रसूलुल्लाह सल्ल० ग़ज़वा अहज़ाब से वापस तशरीफ़ लाए तो ऐलान फ़रमाया "हर आदमी नमाज़े अस्र बनू क़ुरैज़ा (के मुहल्ले में) जाकर पढ़े। कुछ लोगों ने नमाज़ क़ज़ा होने के डर से रास्ते में ही पढ़ ली मगर कुछ लोगों ने कहा कि हम तो वहीं नमाज़ पढ़ेंगे जहां हमें रसूलुल्लाह सल्ल० ने हुक्म दिया है चाहे नमाज़ क़ज़ा ही हो जाए। रसूलुल्लाह सल्ल० ने दोनों में से किसी को भी कुछ न कहा।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

1. किताबुल जिहाद वस्सीर।

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़े कसूफ़ या ख़सूफ़ के मसाइल

मसला 485. नमाज़े कसूफ़ (चांद ग्रहण) या ख़सूफ़ (सूरज ग्रहण) के लिए अज़ान है न इक़ामत।

मसला 486. नमाज़े ख़सूफ़ या कसूफ़ के लिए लोगों को जमा करना मक़सूद हो तो "अस्सलातु जामेअ" कहना चाहिए।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ : إِنَّ الشَّمْسَ خَسَفَتْ عَلَى عَهْدِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ فَبَعَثَ مُنَادِيًا ((اَلصَّلَاةُ جَامِعَةٌ)) فَاجْتَمَعُوْا وَ تَقَدَّمَ فَكَبَّرَ وَ صَلَّى أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ فِيْ رَكْعَتَيْنِ وَ أَرْبَعَ سَجَدَاتٍ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० के मुबारक दौर में सूरज को ग्रहण लगा, तो आप सल्ल० ने एक मुनादी नियुक्त फ़रमाया, जिसने यूं आवाज़ी दी "नमाज़ तैयार है" अतएवं लोग जमा हो गए। रसूलुल्लाह सल्ल० आगे बढ़े तकबीर कही और दो रकअतों में चार रुकूअ और चार सज्दे किए। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 487. जिस समय सूरज या चांद ग्रहण लगे उसी समय दो रकअत नमाज़ जमाअत से अदा करनी चाहिए।

मसला 488. सूरज या चांद ग्रहण की नमाज़ में दो रकअतें हैं हर रकअत में ग्रहण के कम या ज़्यादा समय के अनुसार एक या दो या तीन रुकूअ किए जा सकते हैं।

عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : كُسِفَتِ الشَّمْسُ عَلَى عَهْدِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ فِيْ يَوْمٍ شَدِيْدِ الْحَرِّ فَصَلَّى بِأَصْحَابِهِ فَأَطَالَ حَتّٰى جَعَلُوْا يَخِرُّوْنَ ثُمَّ رَكَعَ فَأَطَالَ ثُمَّ رَفَعَ فَأَطَالَ ثُمَّ رَكَعَ فَأَطَالَ ثُمَّ سَجَدَ سَجْدَتَيْنِ ثُمَّ قَامَ فَصَنَعَ نَحْوًا مِنْ ذٰلِكَ فَكَانَتْ أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ وَ أَرْبَعَ سَجَدَاتٍ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० के कार्य काल में सख़्त गर्मी के दिन सूरज ग्रहण हुआ, तो आप सल्ल० ने सहाबा

1. किताबुल मुसाफ़िरीन, बाब सलातुल कसूफ़।

Www.IslamicBooks.Website

किराम रज़ि० को नमाज़ पढ़ाई और इतना लम्बा क़याम किया कि सहाबा किराम रज़ि० गिरने लगे। फिर लम्बा रुकूअ किया। फिर सिर उठाकर लम्बा क़याम किया (यह क़याम भी सूरह फ़ातिहा से शुरू होगा) फिर लम्बा रुकूअ किया, फिर दो सज्दे किए, फिर खड़े होकर दूसरी रकअत भी उसी तरह पढ़ी। तो दो रकअतों में चार रुकूअ और चार सज्दे हो गए। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 489. नमाज़े ख़सूफ़ या कसूफ़ में क़िरअत बुलन्द आवाज़ से करनी चाहिए।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى صَلَاةَ الْكُسُوْفِ وَ جَهَرَ بِالْقِرَاءَةِ فِيْهَا . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (٢) (صحيح)

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने ग्रहण की नमाज़ पढ़ाई और उसमें बुलन्द आवाज़ से क़िरअत की। इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[2]

मसला 490. नमाज़े ग्रहण के बाद ख़ुत्बा देना मसनून है।

عَنْ أَسْمَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : فَانْصَرَفَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَ قَدْ تَجَلَّتِ الشَّمْسُ فَخَطَبَ فَحَمِدَ اللهَ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ : أَمَّا بَعْدُ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٣)

हज़रत असमा रज़ि० फ़रमाती हैं रसूलुल्लाह सल्ल० नमाज़े ग्रहण से फ़ारिग़ हुए, तो सूरज साफ़ हो चुका था। आप सल्ल० ने ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया, अल्लाह तआला की प्रशंसा और स्तुति की, जो उसके योग्य है फिर "अम्मा बाद" के शब्द अदा फ़रमाए। इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[3]

---

1. किताबुल मुसाफ़िरीन, बाब सलातुल कसूफ़।
2. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 463
3. अबवाबुल कसूफ़, बाब क़ौलुल इमाम, ख़ुत्बतुल कसूफ़ अम्मा बाद।

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़े इस्तिख़ारा के मसाइल

मसला 491. दो या दो से अधिक मुबाह कामों में से एक का चयन करना हो तो दुआएं इस्तिख़ारा के ज़रिए अल्लाह तआला से बेहतर काम के लिए एकाग्रता हासिल करने की विनती करना मसनून है।

मसला 492. दो रकअत नमाज़ पढ़कर यह मसनून दुआ मांगनी चाहिए।

मसला 493. अगर एक बार फ़ैसला करने में सन्तोष हासिल न हो तो यह अमल बार बार दोहराना चाहिए यहां तक कि सन्तोष हासिल हो जाए।

عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُعَلِّمُنَا الْإِسْتِخَارَةَ فِي الْأُمُوْرِ كُلِّهَا كَمَا يُعَلِّمُنَا السُّوْرَةَ مِنَ الْقُرْآنِ يَقُوْلُ : إِذَا هَمَّ أَحَدُكُمْ بِالْأَمْرِ فَلْيَرْكَعْ رَكْعَتَيْنِ مِنْ غَيْرِ الْفَرِيْضَةِ ثُمَّ لِيَقُلْ : اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَ أَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا أَقْدِرُ وَ تَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ وَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ اَللّٰهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هٰذَا الْأَمْرَ خَيْرٌ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَ مَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ أَمْرِيْ أَوْ قَالَ فِيْ عَاجِلِ أَمْرِيْ وَ آجِلِهِ فَاقْدُرْهُ لِيْ وَ يَسِّرْهُ لِيْ ثُمَّ بَارِكْ فِيْهِ وَ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هٰذَا الْأَمْرَ شَرٌّ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَ مَعَاشِيْ وَ عَاقِبَةِ أَمْرِيْ أَوْ قَالَ فِيْ عَاجِلِ أَمْرِيْ وَ آجِلِهِ فَاصْرِفْهُ عَنِّيْ وَاصْرِفْنِيْ عَنْهُ وَاقْدُرْ لِيَ الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ رَضِّنِيْ بِهِ وَ يُسَمِّيْ حَاجَتَهُ . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० हमें तमाम कामों के लिए इसी तरह दुआएं इस्तिख़ारा सिखाते जिस तरह क़ुरआन पाक की कोई सूरह सिखाते थे। आप सल्ल० फ़रमाते "जब कोई आदमी किसी काम का इरादा करे, तो दो रकअत नफ़िल अदा करे फिर यह दुआ मांगे, "या अल्लाह! मैं तेरे ज्ञान की बदौलत भलाई चाहता हूं तेरी क़ुदरत की बरकत से (अपना काम करने की) ताक़त मांगता हूं तुझसे तेरे महान फ़ज़्ल का सवाल करता हूं, यक़ीनन तू क़ुदरत रखता है मैं क़ुदरत नहीं

Www.IslamicBooks.Website

रखता, तू जानता है मैं नहीं जानता और तू ही परोक्ष का जानने वाला है। या अल्लाह! तेरे ज्ञान के अनुसार अगर यह काम मेरे हक़ में दीनी और दुनियावी मामलात के हिसाब से और अंजाम के हिसाब से बेहतर है या आप सल्ल० ने फ़रमाया, मेरे जल्दी या देर वाले मामले (अर्थात दुनिया या आख़िरत) में मेरे लिए बेहतरी है तो उसे मेरा मक़सद बना दे। इसका हुसूल मेरे लिए आसान फ़रमा दे और मेरे लिए बाबरकत बना दे। अगर तेरे ज्ञान के हिसाब यह काम मेरे लिए दीनी और दुनियावी मामलात के हिसाब से और अंजाम के हिसाब से हानिकारक है, या आप सल्ल० ने फ़रमाया, मेरे जल्दी या देर वाले मामले (अर्थात दुनिया व आख़िरत) में मेरे लिए नुक़सान है तो उसे मुझसे दूर कर दे और मेरी सोच उस तरफ़ लौटा दे और जहां कहीं से मुमकिन हो भलाई मेरा मुक़द्दर बना दे और मुझे उस पर मुत्मइन कर दे। आप सल्ल० ने यह भी फ़रमाया कि (हाज़ल अम्र की जगह) अपनी ज़रूरत का नाम ले।" इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।[1]

1. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 321

Www.IslamicBooks.Website

नमाज़े चाश्त के मसाइल

मसला 494. नमाज़े फ़ज्र अदा करने के बाद उसी जगह नमाज़े चाश्त का इंतिज़ार करने और उसकी दो रकअत अदा करने का सवाब एक हज और एक उमरे के बराबर है।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَنْ صَلَّى الْفَجْرَ فِيْ جَمَاعَةٍ ثُمَّ قَعَدَ يَذْكُرُ اللهَ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ كَانَتْ لَهُ كَأَجْرِ حَجَّةٍ وَ عُمْرَةٍ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ تَامَّةٌ ، تَامَّةٌ . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (١) (حسن)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जिस आदमी ने फ़ज्र की नमाज़ जमाअत से पढ़ी, फिर सूरज उदय होने तक बैठकर अल्लाह का ज़िक्र करता रहा और दो रकअत नमाज़ अदा की उसे एक हज और एक उमरे का सवाब मिलेगा।" रावी ने कहा है रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया "पूरे एक हज और एक उमरे का, पूरे एक हज और एक उमरे का, पूरे एक हज और एक उमरे का।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[1]

عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ رَأَى قَوْمًا يُصَلُّوْنَ مِنَ الضُّحَى فَقَالَ أَمَا لَقَدْ عَلِمُوْا أَنَّ الصَّلَاةَ فِيْ غَيْرِ هَذِهِ السَّاعَةِ أَفْضَلُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ : صَلَاةُ الْأَوَّابِيْنَ حِيْنَ تَرْمَضُ الْفِصَالُ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि० ने कुछ लोगों को नमाज़े चाश्त पढ़ते देखा तो कहा, क्या लोगों को पता नहीं कि इस समय के अलावा दूसरा समय (इस) नमाज़ के लिए बेहतर है, (और यह वह समय है जिसके बारे में) रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया है कि नमाज़े अव्वाबीन का समय तब ही होता है जब ऊंट के बच्चों के पांव चलने लगें। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

1. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 480
2. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 368

Www.IslamicBooks.Website

स्पष्टीकरण : अगर सूरज उदय होने के पंद्रह बीस मिनट बाद यह नवाफ़िल अदा किए जाएं तो नमाज़ इशराक़ कहलाते हैं अगर उदय आफ़ताब से लगभग घंटा भर बाद यह नफ़िल अदा किए जाएं, तो उसे नमाज़े चाश्त कहते हैं और अगर सूरज उदय के दो ढाई घंटे बाद अदा किए जाएं तो नमाज़ अव्वाबीन कहलाते हैं, जिसे जब समय मिल जाए पढ़ ले।

मसला 495. नमाज़े चाश्त के लिए चार रकअत अदा करनी बेहतर हैं।

मसला 496. नमाज़े चाश्त की चार रकअत अदा करने वाले के दिन भर के सारे काम अल्लाह तआला अपने ज़िम्मे ले लेते हैं।

عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ وَ أَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ عَنِ اللهِ تَبَارَكَ وَ تَعَالَى أَنَّهُ قَالَ ابْنَ آدَمَ اِرْكَعْ لِيْ أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ مِنْ أَوَّلِ النَّهَارِ أَكْفِكَ آخِرَهُ .

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (١) (صحيح)

हज़रत अबू दरदा और हज़रत अबूज़र रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है, ऐ आदम के बेटे! दिन के शुरू में मेरे लिए चार रकअत नमाज़ अदा कर, मैं तेरे सारे कामों के लिए काफ़ी हो जाऊंगा। इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[1]

स्पष्टीकरण : नमाज़े चाश्त के लिए कम से कम दो रकअत, ज़्यादा से ज़्यादा बारह रकअत हैं लेकिन चार रकअत पढ़नी बेहतर है।

1. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 395

Www.IslamicBooks.Website

तौबा की नमाज़

मसला 497. किसी ख़ास गुनाह के होने पर या आम गुनाहों से तौबा करने की नीयत से वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ अदा करने के बाद अल्लाह तआला से गुनाहों की माफ़ी तलब की जाए तो अल्लाह तआला माफ़ फ़रमा देते हैं।

عَنْ عَلِيٍّ إِنِّيْ كُنْتُ رَجُلاً إِذَا سَمِعْتُ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ حَدِيْثًا نَفَعَنِيَ اللهُ مِنْهُ بِمَا شَاءَ أَنْ يَّنْفَعَنِيْ بِهِ ، وَ إِذَا حَدَّثَنِيْ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِهِ اِسْتَحْلَفْتُهُ ، فَإِذَا حَلَفَ صَدَّقْتُهُ ، وَ إِنَّهُ حَدَّثَنِيْ أَبُوْبَكْرٍ ، وَ صَدَقَ أَبُوْبَكْرٍ قَالَ : سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ يَقُوْلُ مَا مِنْ رَجُلٍ يُذْنِبُ ذَنْبًا ، ثُمَّ يَقُوْمُ فَيَتَطَهَّرُ ثُمَّ يُصَلِّيْ ثُمَّ يَسْتَغْفِرُ اللهَ ، إِلاَّ غَفَرَ اللهُ لَهُ ، ثُمَّ قَرَأَ هٰذِهِ الْآيَةَ ﴿ وَالَّذِيْنَ إِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوْا أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللهَ .... إِلَى آخِرِ الْآيَةِ ﴾ رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (١)

(حسن)

हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि मैं जब भी रसूलुल्लाह सल्ल० से कोई हदीस सुनता (उस पर अमल करता तो उससे) अल्लाह तआला जितना चाहता मुझे फ़ायदा पहुंचाता और जब मैं किसी सहाबी रसूल से कोई हदीस सुनता तो उससे क़सम लेता जब वह क़सम खाता (कि वास्तव में यह अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया है) तो मैं उस पर ईमान ले आता (और अमल करता) यह हदीस मुझसे हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने बयान की और उन्होंने बिल्कुल सच कहा। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० कहते हैं, मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है "कोई आदमी जब गुनाह करता है फिर वुज़ू करके (दो या चार रकअत) नमाज़ पढ़ता है और अल्लाह से तौबा इस्तिग़फ़ार करता है तो अल्लाह उसे ज़रूर माफ़ फ़रमा देता है।" फिर रसूलुल्लाह सल्ल० ने यह आयत तिलावत फ़रमाई, "वे लोग जिनसे कोई अशलील काम हो जाता है या कोई गुनाह करके वह अपने आप पर ज़ुल्म कर बैठते हैं तो उन्हें तुरन्त अल्लाह तआला याद आ

Www.IslamicBooks.Website

जाता है और उससे वह अपने गुनाहों की माफ़ी तलब करते हैं क्योंकि अल्लाह के सिवा और कौन है जो गुनाह माफ़ कर सके, और वे लोग जान बूझ कर अपने किए पर आग्रह नहीं करते।" (सूरह आले इमरान, आयत 135) इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।[1]

1. सहीह सुनन तिर्मिज़ी, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस

Www.IslamicBooks.Website

तहीय्यतुल वुज़ू और तहीय्यतुल मस्जिद के मसाइल

मसला 498. वुज़ू करने के बाद दो रकअत नमाज़ अदा करना सुन्नत है।

हज़रत 499. तहीय्यतुल वुज़ू जन्नत में ले जाने वाला अमल है।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لِبِلاَلٍ صَلاَةَ الْغَدَاةِ يَا بِلاَلُ ! حَدِّثْنِي بِأَرْجَى عَمَلٍ عَمِلْتَهُ عِنْدَكَ فِي الْإِسْلاَمِ مَنْفِعَةً فَإِنِّي سَمِعْتُ اللَّيْلَةَ خَشْفَ نَعْلَيْكَ بَيْنَ يَدَيَّ فِي الْجَنَّةِ ؟ قَالَ بِلاَلٌ : مَا عَمِلْتُ عَمَلاً فِي الْإِسْلاَمِ أَرْجَى عِنْدِي مَنْفِعَةً مِنْ أَنِّي لَمْ أَتَطَهَّرْ طُهُوْرًا تَامًّا فِي سَاعَةٍ مِنْ لَيْلٍ وَّلاَ نَهَارٍ إِلاَّ صَلَّيْتُ بِذَلِكَ الطُّهُوْرِ مَا كَتَبَ اللهُ لِي أَنْ أُصَلِّيَ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं रसूलुल्लाह सल्ल० ने (एक दिन) नमाज़े फ़ज्र के बाद हज़रत बिलाल रज़ि० से पूछा "ऐ बिलाल! इस्लाम लाने के बाद तुम्हारा वह कौन सा (नफ़्ली) अमल है जिस पर तुम्हें बख़्शिश की बहुत ज़्यादा उम्मीद हो क्योंकि आज रात मैंने जन्नत में अपने आगे आगे तुम्हारे चलने की आवाज़ सुनी है?" हज़रत बिलाल रज़ि० ने अर्ज़ किया "मैंने इससे ज़्यादा उम्मीद भरा अमल तो कोई नहीं किया कि दिन रात में जब भी वुज़ू करता हूं, तो जितनी अल्लाह तआला को मंज़ूर हो नमाज़ पढ़ लेता हूं।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

मसला 500. मस्जिद में दाख़िल होने के बाद बैठने से पहले दो रकअत तहीय्यतुल मस्जिद अदा करना मुस्तहब है।

---

1. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 1682

Www.IslamicBooks.Website

عَنْ أَبِيْ قَتَادَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ : إِذَا دَخَلَ أَحَدُكُمْ الْمَسْجِدَ فَلْيَرْكَعْ رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ يَجْلِسَ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत अबू क़तादा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "जब कोई आदमी मस्जिद में दाख़िल हो, तो बैठने से पहले दो रकअत नमाज़ अदा करे।" इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

1. लुअलुउ वल मरजान, पहला भाग, हदीस 414

Www.IslamicBooks.Website

सज्दा शुक्र

मसला 501. किसी नेमत के हासिल होने पर या ख़ुशी के मौक़े पर सज्दा शुक्र अदा करना मसनून है।

عَنْ أَبِيْ بَكْرَةَ رَضِيَ اللهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا أَتَاهُ أَمْرٌ يَسُرُّهُ أَوْ يَسُرُّ بِهِ خَرَّ سَاجِدًا شُكْرًا لِلّٰهِ تَبَارَكَ وَ تَعَالَى . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (١) (حسن)

हज़रत अबूबक्र रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० के पास कोई ऐसी ख़बर आती जिससे आप ख़ुश होते तो अल्लाह का शुक्र अदा करने के लिए सज्दे में गिर पड़ते। इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

मसला 502. दुरूद शरीफ़ का अज्र व सवाब मालूम होने पर रसूले अकरम सल्ल० ने लम्बा सज्दा शुक्र अदा किया।

عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ عَوْفٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : خَرَجَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ حَتّٰى دَخَلَ نَخْلاً فَسَجَدَ فَأَطَالَ السُّجُوْدَ حَتّٰى خَشِيْتُ أَنْ يَكُوْنَ اللهُ قَدْ تَوَفَّاهُ قَالَ : فَجِئْتُ أَنْظُرُ فَرَفَعَ رَأْسَهُ فَقَالَ : مَالَكَ ؟ فَذَكَرْتُ لَهُ ذٰلِكَ قَالَ : فَقَالَ : إِنَّ جِبْرِيْلَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ قَالَ لِي أَلاَ أُبَشِّرُكَ أَنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ يَقُوْلُ لَكَ مَنْ صَلّٰى عَلَيْكَ صَلاَةً صَلَّيْتُ عَلَيْهِ وَ مَنْ سَلَّمَ عَلَيْكَ سَلَّمْتُ عَلَيْهِ . رَوَاهُ أَحْمَدُ (٢) (صحيح)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० एक दिन घर से निकले और खजूरों के बाग़ में दाख़िल हुए। बहुत लम्बा सज्दा किया। यहां तक कि मुझे अंदेशा हुआ कि कहीं अल्लाह ने आपकी रूह न क़ब्ज़ कर ली हो। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० कहते हैं, मैं रसूलुल्लाह सल्ल० की तरफ़ देख रहा था कि आपने सिर उठाया और फ़रमाया "क्या बात है?" मैंने बात बताई, तो आपने इरशाद फ़रमाया कि

1. सहीह सुनन इब्ने माजा, लिलअलबानी, पहला भाग, हदीस 1440 .

Www.IslamicBooks.Website

जिबरील अलैहि० ने मुझसे कहा "ऐ मुहम्मद सल्ल०! क्या मैं आपको एक बशारत न दूं? अल्लाह करीम फ़रमाता है, जो व्यक्ति आप पर दुरूद भेजेगा, मैं भी उस पर रहमत नाज़िल करूंगा और जो आप पर सलाम भेजेगा मैं भी उस पर सलाम भेजूंगा।" (इस पर मैंने अल्लाह का शुक्र अदा किया) इसे अहमद ने रिवायत किया है।[1]

1. फ़ज़्लुस्सलात अलन्नबी, लिलअलबानी, हदीस 7

Www.IslamicBooks.Website

विभिन्न मसाइल

मसला 503. बीमार आदमी जिस हालत में भी नमाज़ पढ़ सके, पढ़नी चाहिए।

عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ كَانَتْ بِيَ بَوَاسِيْرُ فَسَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَنِ الصَّلاَةِ فَقَالَ : صَلِّ قَائِمًا فَإِنْ لَمْ تَسْتَطِعْ فَقَاعِدًا فَإِنْ لَمْ تَسْتَطِعْ فَعَلَى جَنْبٍ . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبُخَارِيُّ وَ أَبُوْدَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ (١)

हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ि० फ़रमाते हैं, मैं बवासीर का मरीज़ था मैंने नबी अकरम सल्ल० से नमाज़ पढ़ने का मसला मालूम किया, तो आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया "खड़े होकर पढ़ सको तो खड़े होकर पढ़ो, बैठकर पढ़ सको तो बैठकर पढ़ो, लेटकर पढ़ सको तो लेटकर पढ़ो।" इसे अहमद, बुख़ारी, अबू दाऊद, नसाई, तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[1]

मसला 504. नींद का ग़लबा हो तो, पहले नींद पूरी करनी चाहिए फिर नमाज़ पढ़नी चाहिए।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ : إِذَا نَعَسَ أَحَدُكُمْ فِي الصَّلاَةِ فَلْيَرْقُدْ حَتَّى يَذْهَبَ عَنْهُ النَّوْمُ فَإِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا صَلَّى وَ هُوَ نَاعِسٌ لَعَلَّهُ يَذْهَبُ يَسْتَغْفِرُ فَيَسُبَّ نَفْسَهُ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फ़रमाया "जब किसी को नमाज़ में ऊंघ आने लगे तो उसे पहले नींद पूरी कर लेनी चाहिए। इसलिए जब तुम हालते नमाज़ में ऊंघते हो, तो मग़फ़िरत मांगने की बजाए मुमकिन है अपने आपको गालियां देने लगो।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।[2]

---

1. मुख़्तसर बुख़ारी, लिलज़ुबैदी, हदीस 587
2. मुख़्तसर सहीह मुस्लिम, लिलअलबानी, हदीस 386

Www.IslamicBooks.Website

Www.IslamicBooks.Website

Namaz Ke Masail

Al-Kitab International الکتاب انٹرنیشنل

Jamia Nagar, New Delhi-25
Ph.: 26986973 M. 9312508762

Price 100/-

Www.IslamicBooks.Website